" दीप हैं जलते रहेंगे, हम प्रलय की आँधियों से अन्त तक लड़ते रहेंगे।"

पूर्वोत्तर भारत शिलचर (असम) से प्रकाशित लोकप्रिय हिन्दी दैनिक

प्रेरणा भारती

प्रेरणा भारती NEWS NETWORK

www.preranabharati.com Email: preranabharati@gmail.com

Postal Registration No.RN-SC-36/2023-25 (RNI No.) ASSHIN/2016/69550 अंक - 150 वर्ष -11 अधिक ज्येष्ठ कृ.सप्तमी 2082 रविवार (7 जून 2026) मूल्य-5 रुपये, पृष्ठ-6, preranabharati@gmail.com

हरिदर्शन
HARIDARSHAN
हमारे यहाँ धार्मिक पुस्तक के साथ पूजा-पाठ, हवन-पूजन की सामग्री उचित मूल्य पर प्राप्त करें
मेहरपुर, शिलचर, असम-788015
मो.नं. 9435213512,

FSSAI की चेतावनी, अब अखबार में परोसा खाना तो होगी कार्रवाई

मुंबइ (एजें) ६ जून : . अगर आप भी सडक़ किनारे ठेले या फूड स्टॉल पर अखबार में लिपटा हुआ गरमा-गरम वडा-पाव, समोसा, कचौडी या चाट बडे चाव से खाते हैं, तो अब आपको अपनी यह आदत तुरंत बदलनी होगी. आपकी यह छोटी सी लापरवाही आपको किसी गंभीर बीमारी का शिकार बना सकती है.इस मामले पर बडा संज्ञान लेते हुए भारतीय खाद्य सुरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (एफएसएसएआई) ने देश भर में सख्ती बरतनी शुरू कर दी है. एफएसएसएआई ने देश के सभी खाद्य विक्रेताओं, रेस्तरां मालिकों, स्ट्रीट फूड वेंडर्स और फूड बिजनेस ऑपरेटरों के लिए एक सख्त गाइडलाइन जारी की है, जिसके तहत खाने-पीने की चीजों को अखबार में पैक करने या उसमें परोसने पर तत्काल प्रभाव से पूरी तरह रोक लगा दी गई है.स्नस्स्ढ्ढ का यह देशव्यापी सख्त फैसला हाल ही में मुंबई में हुई एक बडी और औचक कार्रवाई के बाद सामने आया है. दरअसल, मुंबई के एक बेहद लोकप्रिय वडा-पाव विक्रेता को खुलेआम ग्राहकों को अखबार में

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

डिब्रूगढ़ को दूसरी राजधानी बनाने को ५०० करोड़ के विशेष पैकेज का भाजपा ने किया स्वागत

गुवाहाटी, ०६ जून, (हि.स.)। असम प्रदेश भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने राज्य सरकार के उस निर्णय का स्वागत किया है, जिसके तहत डिब्रूगढ़ को राज्य की दूसरी राजधानी के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया है। पार्टी ने इसे मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा की दूरदशी सोच और राज्य के संतुलित विकास की रणनीति का हिस्सा बताया है।प्रदेश भाजपा के प्रवक्ता मानस शरणिया ने जारी बयान में कहा कि एनडीए ३.० मंत्रिपरिषद के विस्तार के बाद हुई कैबिनेट बैठक में डिब्रूगढ़ को दूसरी राजधानी के रूप में विकसित करने के लिए स्टेट कैपिटल रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी-डिब्रूगढ़ (एससीआरडीए) के गठन को मंजूरी दी गई है।इस निर्णय के तहत डिब्रूगढ़ राजधानी क्षेत्र के २० किलोमीटर के दायरे में बुनियादी ढांचे के विकास और विभिन्न परियोजनाओं के लिए अगले पांच वर्षों में ५०० करोड़ रुपये का विशेष कोष उपलब्ध कराया जाएगा।उन्होंने कहा कि यह

मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत बिस्व सरमा की दूरदशी सोच का परिणाम है। डिब्रूगढ़ को आधुनिक सुविधाओं से लैस कर ऊपरी असम के लोगों को प्रशासनिक सेवाएं उनके निकट उपलब्ध कराने का प्रयास किया जा रहा है। इससे लोगों को गुवाहाटी तक आने-जाने में लगने वाले समय और अतिरिक्त खर्च से राहत मिलेगी।भाजपा ने डिब्रूगढ़ के विधायक तथा पूर्व मंत्री प्रशांत फूकन को स्टेट कैपिटल रीजन डेवलपमेंट अथॉरिटी की जिम्मेदारी सौंपे जाने पर भी शुभकामनाएं दी हैं। बयान में कहा गया है कि अनुभवी विधायक प्रशांत फूकन को कैबिनेट मंत्री का दर्जा देकर यह महत्वपूर्ण दायित्व सौंपना उनके अनुभव और योगदान का सम्मान है। भाजपा ने विश्वास जताया कि उनके नेतृत्व में डिब्रूगढ़ का तेजी से विकास होगा।

बयान में यह भी कहा गया कि राज्य मंत्रिमंडल ने सभी विधानसभा क्षेत्रों के समान विकास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से विधायकों की स्थानीय क्षेत्र विकास निधि को वर्ष २०२६-२७ से बढ़ाकर १.५ करोड़ रुपये प्रतिवर्ष करने तथा २०२७-२८ से इसे २ करोड़ रुपये प्रतिवर्ष तक बढ़ाने के निर्णय का पार्टी ने स्वागत किया है।प्रदेश भाजपा ने राज्य कर्मचारियों और पेंशनभोगियों के महंगाई भत्ते में वृद्धि तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के पदोन्नति संबंधी निर्णयों का भी स्वागत करते हुए इसे जनकल्याणकारी कदम बताया है। -

प्रेमिका को १७ बार चाकू से गोदकर की हत्या, १२ घंटे में आरोपित गिरफ्तार

गुवाहाटी, ०६ जून, (हि.स.)। गुवाहाटी के समीप डिमोरिया क्षेत्र में एक सनसनीखेज हत्याकांड का खुलासा करते हुए पुलिस ने एक युवती की निर्मम हत्या के आरोप में उसके प्रेमी को १२ घंटे के भीतर गिरफ्तार कर लिया है। आरोप है कि युवती की १७ बार चाकू घोंपकर हत्या की गई थी।खेत्री पुलिस थाने में दर्ज प्राथमिकी के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू की। घटना के अनुसार, ४ जून की शाम करीब ७ बजे औजारी गांव के गांवबूढ़ा ने डिमोरिया के एक खेत में युवती का शव पडे होने की सूचना पुलिस को दी। प्रारंभिक जांच के दौरान मृतका की पहचान नहीं हो सकी थी। बाद में परिजनों ने पहुंचकर शव की पहचान सुष्मिता मंडल के रूप में की।जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि डिमोरिया निवासी विपुल मल्लिक ने युवती को डिमोरिया बुलाया था। आरोप है कि उसने धारदार हथियार से युवती पर कई वार कर उसकी हत्या कर दी और मौके से फरार हो गया।मृतका के परिजनों द्वारा दर्ज कराई गई प्राथमिकी के आधार पर पुलिस ने जांच शुरू की और गुवाहाटी से विपुल मल्लिक को शनिवार को गिरफ्तार कर लिया।

पूछताछ के दौरान उसने हत्या की बात स्वीकार कर ली है।पुलिस ने बताया कि विपुल मल्लिक पहले भी एक बाल यौन उत्पीडऩ संरक्षण अधिनियम (पॉक्सो)मामले में जेल जा चुका था और इसी वर्ष फरवरी में रिहा हुआ था। फिलहाल, पुलिस हत्या के पीछे के कारणों और मामले के अन्य पहलुओं की गहन जांच कर रही है।

विद्यालय में गोमांस सेवन और हिंदू छात्रों पर दबाव के आरोपों की जांच शुरू

गो-मांस विवाद: छात्र की मां गिरफ्तार, पांच छात्र पुलिस जांच के दायरे में

ग्वालपाडा (असम), ०६ जून (हि.स.)। असम के ग्वालपाडा जिले के कृष्णाई स्थित हाबराघाट उच्च माध्यमिक विद्यालय में कथित गो-मांस विवाद मामले में पुलिस ने नौवीं कक्षा के छात्र सुमित आलम की मां नूर साहिदा बेगम को गिरफ्तार किया है।पुलिस के अनुसार, विद्यालय में कथित रूप से गो-मांस लाने वाले छात्र सुमित आलम को भी हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। मामले की जांच के सिलसिले में कृष्णाई पुलिस ने चार अन्य छात्रों को भी पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है।आरोप है कि विद्यालय में पांच मुस्लिम छात्रों ने कक्षा के भीतर गो-मांस का सेवन किया

था और दो हिंदू छात्रों पर भी उसे खाने का दबाव बनाया था। घटना के सामने आने के बाद क्षेत्र में व्यापक प्रतिक्रिया देखने को मिली और पुलिस ने मामले की जांच शुरू की।

पुलिस का कहना है कि मामले की जांच जारी है तथा जांच के आधार पर आगे की कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

असम के ग्वालपाडा जिले के कृष्णाई स्थित हाबराघाट उच्च माध्यमिक विद्यालय में कथित रूप से गोमांस सेवन और दो हिंदू छात्रों पर उसे खाने का दबाव बनाने के आरोपों के बाद जिला प्रशासन ने मामले की जांच के आदेश दिए हैं। इस मामले को लेकर स्थानीय पुलिस थाने में एक प्राथमिकी भी दर्ज कराई जा चुकी है।मीडिया में खबर प्रसारित होने के तुरंत बाद ग्वालपाडा के जिला आयुक्त प्रदीप तिमुंग और पुलिस अधीक्षक विद्यालय पहुंचे तथा पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली। प्रशासन ने मामले की विस्तृत जांच शुरू कर दी है और संबंधित सभी पक्षों से पूछताछ की जा रही है।आरोप है कि टिफिन अवधि के दौरान विद्यालय की एक कक्षा में नौवीं कक्षा के पांच छात्रों ने गोमांस का सेवन किया। साथ ही दो हिंदू छात्रों पर भी उक्त मांस खाने के लिए दबाव बनाने का प्रयास किया गया। घटना के सामने आने के बाद अभिभावकों और स्थानीय लोगों में नाराजगी देखी गई।इस बीच आयुक्त

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

डिब्रूगढ़ बार एसोसिएशन के अंदर क्लाइंट ने मारपीट की, वकील पर बुरी तरह हमला; आरोपी गिरफ्तार

डिब्रूगढ़ (अर्णव शर्मा) ६ जून : शनिवार को डिब्रूगढ़ में एक चौंकाने वाली घटना से कानूनी बिरादरी में गुस्सा फैल गया, जब एक प्रैक्टिसिंग वकील पर डिब्रूगढ़ बार एसोसिएशन के परिसर के अंदर उसके ही क्लाइंट ने कथित तौर पर हमला किया।पुलिस सूत्रों के मुताबिक, गंगा सागर पासवान उर्फ ??गामा पासवान को बार एसोसिएशन में एक मीटिंग के दौरान एडवोकेट राजेश केसरी पर कथित तौर पर हिंसक हमला करने के तुरंत बाद गिरफ्तार कर लिया गया।सूत्रों ने बताया कि पासवान एक केस के सिलसिले में अपने वकील से मिलने बार एसोसिएशन पहुंचे थे। हालांकि, जो एक रूटीन विजिट के तौर पर शुरू हुआ था, उसमें कथित तौर पर एक नाटकीय मोड आ गया जब आरोपी ने कथित तौर पर बिना किसी चेतावनी के एडवोकेट केसरी पर हमला कर दिया। अचानक हुए हमले से परिसर में मौजूद वकीलों और स्टाफ में दहशत फैल गई।चश्मदीदों ने दावा किया कि हमले में एडवोकेट को चोटें आई, इससे पहले कि साथी वकील और बार एसोसिएशन के सदस्य उन्हें बचाने के

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

धोलाई में बडी कार्रवाई: १.२७८ किलोग्राम संदिग्ध हेरोइन बरामद, तीन गिरफ्तार

प्रे.सं. शिलचर, ६ जून (रानू दत्ता): मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान में कछार पुलिस और नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) की गुवाहाटी जोनल यूनिट को बडी सफलता मिली है। संयुक्त रूप से चलाए गए एक विशेष अभियान में धोलाई के धलाखाल क्षेत्र से भारी मात्रा में संदिग्ध हेरोइन बरामद की गई। इस मामले में तीन लोगों को गिरफ्तार किया गया है।प्राप्त जानकारी के अनुसार, गुप्त सूचना के आधार पर मिजोरम से आ रहे दो संदिग्ध वाहनों को रोककर उनकी तलाशी ली गई। तलाशी के दौरान अधिकारियों को बडी मात्रा में मादक पदार्थ बरामद हुआ। जांच में पाया गया कि कुल १०७ साबुन के डिब्बों के भीतर अत्यंत सुनियोजित तरीके से छिपाकर रखी गई लगभग १.२७८ किलोग्राम संदिग्ध हेरोइन

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

प्रिंट मीडिया लोकतंत्र की मजबूत नींव, इसे अधिक महत्व देना चाहिए : विजय गुप्ता

राजु दे शिलचर/ गौहाटी, ६ जून : गुवाहाटी के विधायक ने प्रिंट मीडिया की महत्ता पर जोर देते हुए कहा कि सोशल मीडिया के बढते प्रभाव के बावजूद समाचार पत्रों की विश्वसनीयता और सामाजिक जिम्मेदारी आज भी कायम है। उन्होंने कहा कि सरकार को प्रिंट मीडिया को अधिक महत्व देने तथा इसके संरक्षण और सशक्तिकरण के लिए आवश्यक कदम उठाने चाहिए।शिलचर के इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पत्रकार राजू दे के साथ एक विशेष बातचीत में विधायक से हिंदी दैनिक प्रेरणा भारती का सरकारी विज्ञापन बंद होने के संबंध में प्रश्न पूछा गया। इसके उत्तर में विजय कुमार गुप्ता ने कहा कि सोशल मीडिया जहां सूचना के त्वरित प्रसार का माध्यम है, वहीं इसके कई दुष्प्रभाव भी देखने को मिलते हैं। कई बार अपुष्ट और भ्रामक जानकारी भी तेजी से फैल जाती है, जिससे समाज में भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

उन्होंने कहा कि प्रिंट मीडिया तथ्यों की जांच-परख के बाद समाचार प्रकाशित करता है, इसलिए इसकी विश्वसनीयता अधिक होती है। विधायक ने माना कि लोकतंत्र को मजबूत बनाए रखने में समाचार पत्रों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है और सरकार को इस क्षेत्र को प्रोत्साहित करने के लिए सकारात्मक पहल करनी चाहिए।विजय कुमार गुप्ता के इस बयान को प्रिंट मीडिया के प्रति समर्थन और उसकी प्रासंगिकता को रेखांकित करने वाला महत्वपूर्ण संदेश माना जा रहा है।

संघर्ष से शिखर तक : बराक घाटी की राजनीति के 'चाणक्य' कौशिक राय

सीमा कुमार, शिलचर

असम की राजनीति में कुछ नेता ऐसे होते हैं जिनकी पहचान केवल चुनावी जीत या पद प्राप्ति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उनकी राजनीतिक यात्रा संगठन, संघर्ष और रणनीतिक कौशल का पर्याय बन जाती है। लखीपुर विधानसभा क्षेत्र से लगातार दूसरी बार विधायक निर्वाचित हुए तथा पुनः असम सरकार में कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ लेने वाले कौशिक राय ऐसे ही नेताओं में शुमार हैं। ५१ वर्षीय कौशिक राय की राजनीतिक यात्रा किसी आकस्मिक सफलता की कहानी नहीं, बल्कि वर्षों की संगठनात्मक साधना, राजनीतिक धैर्य और जनसंपर्क की मजबूत नींव पर खडी हुई सफलता का उदाहरण है। विद्यार्थी जीवन से ही भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा से प्रभावित कौशिक राय को राजनीतिक संस्कार परिवार से ही प्राप्त हुए। उनके पिता भी भाजपा के समर्पित कार्यकर्ता रहे, जिसके कारण बचपन से ही उनमें राष्ट्रवाद और संगठन के प्रति समर्पण की भावना विकसित हुई।

संगठन से सत्ता तक का सफर : -कौशिक राय ने अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत भारतीय जनता युवा मोर्चा से की। बूथ स्तर के कार्यकर्ता के रूप में शुरू हुआ उनका सफर धीरे-धीरे मंडल, जिला, प्रदेश और फिर केंद्रीय संगठन तक पहुंचा। पार्टी संगठन में विभिन्न दायित्वों का निर्वहन करते हुए उन्होंने कार्यकर्ताओं के बीच मजबूत पकड बनाई।उनकी विशेषता केवल राजनीतिक भाषणों तक सीमित नहीं रही, बल्कि संगठन को जमीनी स्तर तक सक्रिय करने की क्षमता ने उन्हें भाजपा नेतृत्व का भरोसेमंद चेहरा बनाया। बराक घाटी में भाजपा के विस्तार और मजबूती में उनकी भूमिका को पार्टी के भीतर विशेष महत्व दिया जाता है।

हार से मिली सीख, संघर्ष से मिली सफलता : वर्ष २०१६ का विधानसभा चुनाव कौशिक राय के राजनीतिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पडाव साबित हुआ। उस चुनाव में उन्हें हार का सामना करना पडा। सामान्यतः राजनीतिक पराजय कई नेताओं के लिए निराशा का कारण बन जाती है, लेकिन कौशिक राय ने इस हार को अवसर में बदल दिया।उन्होंने क्षेत्र में लगातार जनसंपर्क बनाए रखा, कार्यकर्ताओं के साथ संवाद बढाया और जनता की समस्याओं को समझने का प्रयास जारी रखा। यही कारण रहा कि वर्ष २०२१ के विधानसभा चुनाव में उन्होंने जोरदार वापसी करते हुए लखीपुर विधानसभा क्षेत्र से ऐतिहासिक जीत दर्ज की और पहली बार विधायक बने।

विकास और जनविश्वास की राजनीति : विधायक बनने के बाद कौशिक राय ने अपने क्षेत्र में सडक़, शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं के विकास को प्राथमिकता दी। क्षेत्र में विकास कार्यों के साथ-साथ जनता के बीच उनकी सक्रिय उपस्थिति ने उन्हें एक लोकप्रिय जनप्रतिनिधि के रूप में स्थापित किया। उनकी कार्यशैली का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि उन्होंने संगठन और प्रशासन के बीच बेहतर समन्वय बनाए रखा। यही कारण है कि लखीपुर विधानसभा क्षेत्र में भाजपा का जनाधार लगातार मजबूत होता गया।

बराक घाटी के 'चाणक्य' : बराक घाटी की राजनीति में कौशिक राय को भाजपा का 'चाणक्य' कहा जाता है। यह उपाधि उन्हें यूं ही नहीं मिली है। चुनावी रणनीति तैयार करने, बूथ प्रबंधन को प्रभावी बनाने, कार्यकर्ताओं के नेटवर्क को मजबूत रखने और स्थानीय सामाजिक समीकरणों को समझने में उनकी विशेष दक्षता रही है।राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि बराक घाटी में भाजपा की लगातार बढती चुनावी सफलता के पीछे कौशिक राय की रणनीतिक भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। चुनावी गणित पर उनकी पकड और संगठनात्मक कौशल ने उन्हें क्षेत्र के प्रभावशाली नेताओं की श्रेणी में स्थापित किया है।

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

शिलचर के स्कूल परिसर के पास ९ फुट लंबा बर्मी अजगर मिलने से हडक़ंप, वन विभाग को सौंपा गया

प्रे.सं. शिलचर, ६ जून (रानू दत्ता): शिलचर के संगीत विद्यालय के निकट स्थित शिशु वितान स्कूल परिसर के आसपास शनिवार सुबह

उस समय सनसनी फैल गई, जब एक पेड पर लगभग ९ फुट लंबा विशाल बर्मी अजगर (बर्मीज पाइथन) दिखाई दिया। घटना की सूचना मिलते ही सर्प उद्धारक त्रिकाल चक्रवर्ती अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचे और लगभग एक घंटे की मशक्कत के बाद अजगर को सुरक्षित रूप से पकडक़र वन विभाग के हवाले कर दिया।प्राप्त जानकारी के अनुसार, स्थानीय लोगों ने शनिवार सुबह त्रिकाल चक्रवर्ती को फोन कर बताया कि शिशु वितान स्कूल के समीप एक पेड की डाल पर विशालकाय अजगर बैठा हुआ है। सूचना मिलते ही वे अपनी सहयोगी टीम के साथ घटनास्थल पर पहुंचे। चूंकि यह क्षेत्र विद्यालयों से घिरा हुआ है और यहां प्रतिदिन बडी संख्या में बच्चों का आवागमन होता है, इसलिए बचाव दल ने सबसे पहले सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित की।इसके बाद सावधानीपूर्वक अभियान चलाकर

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

किसानों के नाम पर सरकारी अनुदान प्राप्त पावर टिलर की तस्करी करने वाले गिरोह का मुख्य सरगना गिरफ्तार, जांच में बडे नेटवर्क का खुलासा होने की संभावना

प्रतिनिधि हाइलाकांदी, ६ जून : किसानों के लिए केंद्र सरकार की अनुदान आधारित योजना के अंतर्गत आवंटित पावर टिलरों को अवैध रूप से एकत्र कर बेचने वाले एक गिरोह के मुख्य सरगना को हाइलाकांदी पुलिस ने गिरफ्तार किया है। गुरुवार देर रात चलाए गए एक विशेष अभियान में आरोपी नुरुल इस्लाम लस्कर को गिरफ्तार किया गया। कार्रवाई के दौरान उसके कब्जे से सरकारी अनुदान प्राप्त चार पावर टिलर भी बरामद किए गए।पुलिस सूत्रों के अनुसार गिरफ्तार नुरुल इस्लाम लस्कर लाला थाना क्षेत्र के दीनानाथपुर पार्ट-२ का निवासी है।

आरोप है कि वह लंबे समय से किसानों के नाम पर आवंटित सरकारी अनुदान प्राप्त पावर टिलरों को एकत्र कर अवैध रूप से अन्य स्थानों पर बेचने के कारोबार में संलिप्त था।जानकारी के अनुसार हाइलाकांदी थाना में दर्ज मामला संख्या ६८/२६ की जांच के दौरान पुलिस को इस

⇨ शेषांश पृष्ठ ३ पर

नगांव में 'लव जिहाद' का आरोप, अविवाहित बताकर युवती से की शादी

नगांव (असम), ०६ जून (हि.स.)। असम के नगांव जिले के बेबेजिया क्षेत्र की एक उच्चशिक्षित असमिया युवती ने एक युवक पर विवाहिता होने की बात छिपाकर उससे शादी करने और बाद में शारीरिक एवं मानसिक उत्पीडऩ करने का आरोप लगाया है। स्थानीय स्तर पर इस मामले को 'लव जिहाद' से जोडक़र देखा जा रहा है।आरोप के अनुसार, युवती का चलचली क्षेत्र के निवासी आश्वादुल इस्लाम नामक युवक के साथ प्रेम संबंध था। युवती का कहना है कि आश्वादुल ने स्वयं को अविवाहित बताकर उससे विवाह किया।बाद में युवती को पता चला कि आश्वादुल पहले से विवाहित है और एक बच्चे का पिता भी है। इस खुलासे के बाद दोनों के बीच विवाद उत्पन्न हो गया। युवती का आरोप है कि विवाह के बाद से ही उसके साथ शारीरिक और मानसिक प्रताडऩा की जाती रही।घटना को लेकर क्षेत्र में व्यापक चर्चा है। कुछ स्थानीय संगठनों और लोगों ने इसे लव जिहाद का मामला बताते हुए जांचकर और दोषी के खिलाफ कडी कानूनी कार्रवाई की मांग की है। फिलहाल, इस मामले में पुलिस की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया है।

गुवाहाटी में युवती की रहस्यमय मौत

गुवाहाटी, ०६ जून, (हि.स.)। गुवाहाटी महानगर में एक युवती की रहस्यमय मौत से सनसनी फैल गई है। युवती का शव उसके कमरे में फंदे से लटका हुआ बरामद किया गया।यह घटना जू-रोड स्थित तीनिआली के कृपासिंधु पथ के एक आवास के दूसरे मंजिल पर सामने आई। मृतका उक्त आवास में संचालित पीजी (पेइंग गेस्ट) में रह रही थी।सूचना मिलने के बाद पुलिस की टीम तत्काल घटनास्थल पर पहुंची और शव को अपने कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी। पुलिस मामले के सभी पहलुओं की जांच कर रही है।

पुलिस ने शनिवार को बताया कि मृत्यु के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। पुलिस ने कहा है कि जांच पूरी होने के बाद ही घटना के संबंध में स्पष्ट जानकारी सामने आ सकेगी।

शोणितपुर : नाबालिग से बलात्कार मामले में शिक्षक के खिलाफ मामला दर्ज

शोणितपुर , ०६ जून (हि.स.): शोणितपुर जिले के सतिया में ११ वर्षीय नाबालिग लडक़ी के साथ बलात्कार करने के आरोप में एक मामला दर्ज किया गया है। इस घटना ने पूरे क्षेत्र में व्यापक आक्रोश पैदा कर दिया है।शिकायत के अनुसार, ५७ वर्षीय शिक्षक ने लीची का लालच देकर नाबालिग लडक़ी को अपने घर बुलाया और फिर यह दुष्कृत्य किया। घटना के समय, लडक़ी के एक दोस्त ने इसे देखा और स्थानीय लोगों को सूचित किया।समाचार मिलने के बाद, स्थानीय महिलाएं घटनास्थल पर पहुंचीं और आरोपित को पकड लिया। इसके बाद, उन्होंने उसे पुलिस के हवाले कर दिया।घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस ने आरोपित को हिरासत में लिया और जांच शुरू कर दी है। पुलिस ने घटना का पूरा विवरण उजागर करने के लिए कानूनी कदम उठाए हैं।

!! नकारात्मक विचारों का आना तय है, परन्तु यह आप पर निर्भर करता है कि आप उन्हे कितना महत्व देते हैं। !!

सम्पादकीय.....

आजादी के नारे और लोकतंत्र की चुनौती

दिल्ली के जंतर-मंतर पर कॉकरोच जनता पार्टी द्वारा आयोजित प्रदर्शन के दौरान गूंजे 'आजादी-आजादी' के नारे एक बार फिर देश में राजनीतिक और सामाजिक बहस का विषय बन गए हैं। लोकतंत्र में विरोध-प्रदर्शन और सरकार से सवाल पूछना नागरिकों का संवैधानिक अधिकार है, लेकिन जब 'आजादी' जैसे शब्द बार-बार सार्वजनिक विमर्श के केंद्र में आते हैं, तब यह समझना आवश्यक हो जाता है कि आखिर इन नारों के पीछे छिपा संदेश क्या है।

भारत ने स्वतंत्रता के लिए लंबा संघर्ष किया है और आज देश का प्रत्येक नागरिक लोकतांत्रिक अधिकारों का लाभ उठा रहा है। ऐसे में 'आजादी' का नारा केवल एक राजनीतिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक भावना का प्रतीक बन जाता है। यह नारा कई बार व्यवस्था के प्रति असंतोष, उपेक्षा और निराशा को व्यक्त करता है। इसलिए इसे केवल राजनीतिक विरोध के रूप में खारिज कर देना भी उचित नहीं होगा।

वास्तविकता यह है कि देश का एक बड़ा युवा वर्ग आज बेरोजगारी, प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितताओं, बढ़ती महंगाई और अवसरों की कमी जैसी समस्याओं से जूझ रहा है। लाखों युवा वर्षों तक तैयारी करने के बाद भी रोजगार की प्रतीक्षा में हैं। जब मेहनत और अवसर के बीच की दूरी बढ़ती है, तब असंतोष स्वाभाविक रूप से सड़कों पर दिखाई देता है। संभव है कि जंतर-मंतर पर उठी 'आजादी' की आवाज भी इन्हीं चुनौतियों से मुक्ति की मांग कर रही हो।

हालांकि लोकतंत्र में असहमति जितनी आवश्यक है, उतनी ही आवश्यक उसकी जिम्मेदारी भी है। विरोध का उद्देश्य व्यवस्था को कमजोर करना नहीं, बल्कि उसे अधिक जवाबदेह और संवेदनशील बनाना होना चाहिए। लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति अविश्वास या टकराव का वातावरण किसी भी समाज के लिए शुभ संकेत नहीं माना जा सकता। इसलिए राजनीतिक दलों और आंदोलनों की भी जिम्मेदारी है कि वे जनभावनाओं को सकारात्मक दिशा दें और समस्याओं के समाधान पर बल दें।

सरकार के लिए भी यह आत्ममंथन का विषय है। यदि देश के युवा बार-बार सड़कों पर उतरकर अपनी नाराजगी व्यक्त कर रहे हैं, तो केवल राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से स्थिति नहीं बदलेगी। रोजगार सृजन, पारदर्शी भर्ती प्रक्रिया, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और सुशासन जैसे मुद्दों पर ठोस परिणाम ही जनता का विश्वास मजबूत कर सकते हैं। लोकतंत्र केवल चुनाव जीतने का नाम नहीं है, बल्कि जनता की अपेक्षाओं को समझने और उनका समाधान करने की सतत प्रक्रिया है।

जंतर-मंतर से उठे 'आजादी' के नारों को इसी व्यापक संदर्भ में देखने की आवश्यकता है। यदि यह आवाज भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अन्याय और अवसरों की असमानता से मुक्ति की मांग है, तो इसे गंभीरता से सुनना चाहिए। लेकिन यदि यह केवल राजनीतिक ध्रुवीकरण का उपकरण बनकर रह जाए, तो इससे न जनता का भला होगा और न लोकतंत्र का।

लोकतंत्र की असली ताकत नारों में नहीं, बल्कि संवाद, जवाबदेही और सुधार की क्षमता में निहित होती है। देश को आज ऐसी आजादी की जरूरत है जो युवाओं को रोजगार दे, छात्रों को निष्पक्ष अवसर दे और नागरिकों को व्यवस्था पर भरोसा करने का कारण दे। जब शासन और जनता के बीच विश्वास मजबूत होगा, तब 'आजादी' के नारे विरोध का प्रतीक नहीं, बल्कि एक सशक्त और आत्मविश्वासी राष्ट्र की पहचान बनेंगे।

ऐसी भी दर्दनाक मौत: चिलचिलाती धूप, ट्रक खराब और पानी खत्म, तड़प-तड़प कर मर गए ४९ लोग

नई दिल्ली (एजें) ६ जून :. पश्चिमी अफ्रीकी देश नाइजर के सहारा मरुस्थल से दिल दहला देने वाली खबर सामने आई है. ईद-उल-अजहा का त्यौहार मनाने अपने घर लौट रहे ४९ लोगों की प्यास के कारण तड़प-तड़प कर मौत हो गई. भीषण गर्मी के बीच बीच रेगिस्तान में ट्रक खराब हो जाना इन यात्रियों के लिए काल बन गया. इस दर्दनाक हादसे ने एक बार फिर सहारा के खतरनाक रास्तों और वहां की प्रतिकूल परिस्थितियों को सामने ला दिया है.नाइजर के अगाडेज प्रांत के अधिकारियों के अनुसार, ये सभी लोग माली से अपने परिवार के साथ ईद मनाने के लिए नाइजर लौट रहे थे. यात्रा के दौरान असमका से लगभग ८० किलोमीटर दूर उनका ट्रक अचानक खराब हो गया. चालक, उसके सहायकों और यात्रियों ने ट्रक को ठीक करने की काफी कोशिशें कीं, लेकिन वे असफल रहे. पानी की सीमित मात्रा जल्द ही खत्म हो गई और चिलचिलाती धूप व भीषण तापमान के बीच यात्री फंस गए. आपूर्ति का कोई साधन न होने के कारण एक-एक कर ४९ लोगों ने दम तोड.दिया.

रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता का एआई के जरिये मुकाबला

चार्वी अरोडा, अमेरिकी राजदूतावास, नई दिल्ली

रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता के खिलाफ लडाई में सबसे बडा खतरा अक्सर वही होता है, जो तुरंत दिखाई नहीं देता। एक मरीज संक्रमण के साथ आता है और डॉक्टर सबसे संभावित कारण के आधार पर इलाज शुरू कर देता है लेकिन बैक्टीरिया पहले से ही उन मानक दवाओं के प्रति प्रतिरोधी हो सकते हैं, जो मरीज को दी जा रही हैं। इस प्रतिरोध की पुष्टि करने में कई दिन लग सकते हैं और जब तक डॉक्टर प्रयोगशाला की रिपोर्ट का इंतजार करते हैं, संक्रमण उसे रोकने के लिए बनाई गई व्यवस्था की तुलना में तेजी से फैलता रह सकता है।

यही खामोश अनिश्चितता रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता या एएमआर को इतना खतरनाक बनाती है। यह केवल एक और बीमारी नहीं है। यह आधुनिक चिकित्सा की बुनियाद को ही कमजोर कर देता है, जिससे सामान्य संक्रमणों का इलाज करना कठिन हो जाता है। यह ऐसी चुनौती भी है, जिसके लिए बेहतर उपकरण, तेजी से जवाब और मजबूत साझेदारियों की आवश्यकता होती है।यहीं पर डॉ. एशले स्टिचिन्स्की की भूमिका आती है। संक्रामक रोग विशेषज्ञ और यूएस सेंटर्स फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन (सीडीसी) में मेडिकल ऑफिसर डॉ. स्टिचिन्स्की, एम्बेसी साइंस फेलोज. प्रोग्राम के तहत भारत में हैं, ताकि यह समझा जा सके कि अमेरिका रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता (एएमआर) का आकलन करने और उससे निपटने के क्षेत्रीय प्रयासों में किस प्रकार सहयोग कर सकता है। उनका कार्य वैश्विक स्वास्थ्य, स्वास्थ्य सुरक्षा और नई खोजों के मिलन स्थल पर है, विशेष रूप से तब, जब अमेरिका आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) को दवा-प्रतिरोधी संक्रमणों का अधिक प्रभावी ढंग से पता लगाने, निगरानी करने और उनसे निपटने के औजार के रूप में आगे बढा रहा है।

भारत में डॉ. स्टिचिन्स्की की भूमिका यह पहचानना है कि स्थानीय प्राथमिकताएं क्या हैं और कहां कमियां हैं तथा कहां अमेरिका के साथ सहयोग सार्थक बदलाव ला सकता है। राष्ट्रीय कार्य योजनाएं पहले से मौजूद हैं, लेकिन तेज निदान, मजबूत निगरानी और बडे.पैमाने पर लागू किए जा सकने वाले तकनीकी समाधानों की आवश्यकता अभी भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है।रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता के बढते स्तर ने इसे वैश्विक सार्वजनिक स्वास्थ्य खतरों की अग्रिम पंक्ति में ला खडा किया है। वर्षों तक स्वास्थ्य विशेषज्ञ एचआईवी, मलेरिया और तपेदिक को ङ्कबिग थ्रीङ्क कहते रहे, क्योंकि हर वर्ष इनसे बडी संख्या में लोगों की मृत्यु होती थी। अब रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता यानी एएमआर भी उसी श्रेणी में आ गया है। डॉ. स्टिचिन्स्की बताती हैं, ङ्कपिछले कुछ वर्षों में जब हम अधिक ठोस आंकडे.एकत्र करने में सक्षम हुए हैं, तब हमें यह समझ में आया है कि रोगाणुओं की प्रतिरोध क्षमता भी उसी स्तर पर है, जिससे हर वर्ष १० लाख से अधिक लोगों की मौत हो रही है।ङ्कएएमआर केवल इसलिए खतरा नहीं है कि यह सीधे तौर पर बडी संख्या में मौतों का कारण बनता है। यह इसलिए भी खतरनाक है क्योंकि यह उन चिकित्सीय उपकरणों और उपचार प्रणालियों को कमजोर कर देता है, जिन पर स्वास्थ्य सेवाओं के अनेक अन्य रूप निर्भर करते हैं।

वह कहती हैं, ङ्कआधुनिक चिकित्सा में हम जो कुछ भी करते हैं, उसका बडा हिस्सा इस बात पर निर्भर करता है कि एंटीबायोटिक्स संक्रमणों का प्रभावी ढंग से रोकथाम और इलाज कर सकें। इसमें नियमित सर्जरी, कीमोथेरेपी देना और एचआईवी का प्रबंधन जैसी चीजें शामिल हैं। ये सभी प्रभावी एंटीबायोटिक्स पर निर्भर हैं। यदि यह क्षमता समाप्त हो जाती है, तो यह उस स्वास्थ्य सेवा के बडे. हिस्से को कमजोर कर देगा, जिसे हम आवश्यक मानते हैं।ङ्कयही कारण है कि एएमआर भारत और अमेरिका दोनों के लिए इतना महत्वपूर्ण मुद्दा है। यह केवल स्वास्थ्य संबंधी चुनौती नहीं है, बल्कि एक व्यवस्थागत चुनौती भी है, जो तैयारी, आर्थिक स्थिरता और स्वास्थ्य सेवाओं में जनता के विश्वास को प्रभावित करती है।एएमआर की सबसे कठिन बातों में से एक यह है कि यह खुद को स्पष्ट रूप से प्रकट नहीं करता। एक प्रतिरोधी संक्रमण शुरुआत में किसी सामान्य संक्रमण जैसा ही दिख सकता है। अंतर अक्सर प्रयोगशाला परीक्षण के बाद ही स्पष्ट होता है, और इस प्रक्रिया में समय लगता है।जब किसी को बैक्टीरियल संक्रमण होता है, तो यह पुष्टि करने के लिए कि बैक्टीरिया प्रतिरोधी है या नहीं, प्रयोगशालाओं को सामान्यतः उस जीवाणु को विकसित करना पडता है और विभिन्न एंटीबायोटिक्स के खिलाफ उसका परीक्षण करना पडता है। डॉ. स्टिचिन्स्की कहती हैं, ङ्कइसमें आमतौर पर कई दिन लगते हैं और इस बीच आपके पास एक ऐसा मरीज. होता है, जिसे प्रभावी इलाज नहीं मिल रहा होता है। एएमआर से निपटने में यह एक निरंतर चुनौती बनी हुई है- ऐसे तेज.निदान उपकरणों तक पहुंच, जो आपको बता सकें कि आप किससे जूझ रहे हैं और वह किन दवाओं के प्रति संवेदनशील है।ङ्कनिदान संबंधी यही कमी उन प्रमुख कारणों में से एक है, जिनकी वजह से अमेरिका एआई-संचालित तरीकों में इतना अधिक निवेश कर रहा है। एआई वैज्ञानिकों और चिकित्सकों को विलंबित पुष्टि से आगे बढ़कर प्रारंभिक पूर्वानुमान तक पहुंचने में मदद कर रहा है। डॉ. स्टिचिन्स्की कहती हैं, ङ्कनिदान के क्षेत्र में एआई, विशेष रूप से मशीन लर्निंग का उपयोग व्यक्तिगत बैक्टीरियल कोशिकाओं को देखने और एंटीबायोटिक्स के संपर्क में आने पर उनके व्यवहार को बहुत प्रारंभिक चरण में समझने के लिए किया जा रहा है, ताकि प्रतिरोध का अनुमान लगाया जा सके। यानी दिनों तक इंतजार करने के बजाय, आपको मिनटों या घंटों में परिणाम मिल सकता है।ङ्क

वह एआई के एक अन्य व्यावहारिक उपयोग की ओर भी संकेत करती हैं- चिकित्सकों को यह निर्णय लेने में मदद करना कि एंटीबायोटिक्स की आवश्यकता है भी या नहीं। उदाहरण के लिए एआई बैक्टीरिया की उन समान्य विशेषताओं की पहचान करने में मदद कर सकता है, जिससे बीमारी की पहचान हो सके, ताकि आप शुरुआत में ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकें: क्या यह वायरल है या बैक्टीरियल, और क्या मुझे एंटीबायोटिक देनी चाहिए या नहीं?ङ्क भारत जैसे देश के लिए, जहाँ पैमाना और गति दोनों महत्वपूर्ण हैं, ऐसी प्रगति सार्थक बदलाव ला सकती है।

एएमआर के खिलाफ लडाई में एआई की भूमिका केवल निदान तक सीमित नहीं है। डॉ. स्टिचिन्स्की यह भी बताती हैं कि एआई का उपयोग संक्रमण के रुझानों की निगरानी, संपूर्ण जीनोम अनुक्रमण डेटा के विश्लेषण और यहां तक कि नए एंटीबायोटिक्स की खोज को तेज. करने के लिए भी किया जा रहा है।वह कहती हैं, ङ्ककई कंपनियाँ नए एंटीबायोटिक्स विकसित करने के लिए एआई-आधारित प्लेटफॉर्म का उपयोग कर रही हैं। उनमें से कुछ सिर्फ कुछ ही घंटों में लाखों यौगिकों की जांच कर संभावित इलाज की पहचान कर सकती हैं।ङ्क

एक अन्य आशाजनक विकास उपचार संबंधी निर्णयों को मरीज के अनुसार अधिक सटीक बनाने से जुडा है। कुछ

एआई बैक्टीरिया की उन समान्य विशेषताओं की पहचान करने में मदद कर सकता है, जिससे बीमारी की पहचान हो सके, ताकि आप शुरुआत में ही इस प्रश्न का उत्तर दे सकें: क्या यह वायरल है या बैक्टीरियल, और क्या मुझे एंटीबायोटिक देनी चाहिए या नहीं?ङ्क भारत जैसे देश के लिए, जहाँ पैमाना और गति दोनों महत्वपूर्ण हैं, ऐसी प्रगति सार्थक बदलाव ला सकती है।

शोधकर्ता बडे.भाषा मॉडल का उपयोग कर व्यक्तिगत एंटीबायोग्राम विकसित करने में सक्षम हुए हैं, जो विभिन्न प्रकार के प्रतिरोधी संक्रमणों के संभावित जोखिम का वर्गीकरण कर सकते हैं, ताकि अंतिम निदान का इंतजार करते समय एंटीबायोटिक्स अधिक सटीक रूप से निर्धारित की जा सकें।फिर भी, इस क्षेत्र का अधिकांश काम अभी शुरुआती चरण में है। वह कहती हैं, ङ्कहम जानते हैं कि अक्सर किसी तकनीक के विकास और उसके उस ग्रामीण गाँव तक पहुँचने के बीच अंतर होता है, जहाँ उसकी वास्तव में सबसे अधिक आवश्यकता होती है।ङ्कयही व्यावहारिक दृष्टिकोण उनके संदेश को प्रभावशाली बनाता है। अमेरिकी नेतृत्व केवल शक्तिशाली उपकरण विकसित करने तक सीमित नहीं है। यह भरोसेमंद साझेदारियाँ बनाने, व्यवस्थाओं को मजबूत करने और संभावनाशील तकनीकों को व्यापक सार्वजनिक लाभ तक पहुँचाने में मदद करने के बारे में भी है। इसमें कार्ब-एक्स जैसे सार्वजनिक-निजी प्रयास शामिल हैं, जो उदाहरण है कि किस प्रकार अमेरिका ने नए निदान और उपचार पद्धतियों के शुरुआती विकास में मदद दी है, जिनमें नवीन एआई प्रयोग भी शामिल हैं, जिसमें भारत में साझेदारों को मदद शामिल है।डॉ. स्टिचिन्स्की की वर्तमान फेलोशिप का उद्देश्य नेपाल और भारत में हितधारकों के साक्षात्कार सहित ८० से अधिक स्रोतों से जानकारी एकत्र करना है, ताकि यह समझा जा सके कि अमेरिका मौजूदा राष्ट्रीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में किस प्रकार सहयोग कर सकता है। वह भारत को विशेष रूप से महत्वपूर्ण मानती हैं, क्योंकि यहाँ वैज्ञानिक क्षमता और जमीनी स्तर की प्रासंगिकता दोनों मौजूद हैं। वह कहती हैं, ङ्कमुझे लगता है कि भारत तकनीकी और सूक्ष्म जीव विज्ञान दोनों क्षेत्रों में योगदान देने के लिए बहुत अच्छी स्थिति में है, क्योंकि जिन रोगजनकों को लेकर हम सबसे अधिक चिंतित हैं, उनमें से कई इसी क्षेत्र से आते हैं।

भारत के लिए भरोसेमंद और उच्च मानकों वाले अमेरिकी एआई ढांचों का वादा इस बात में निहित है कि वे स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप रहते हुए घरेलू क्षमता को मजबूत कर सकते हैं। अमेरिका के लिए यह कार्य एक समान रूप से महत्वपूर्ण लक्ष्य को दर्शाता है- साझा स्वास्थ्य खतरों का प्रारंभिक स्तर पर सामना कर, नवप्रवर्तन में निवेश कर और बदलती सूक्ष्मजीवी दुनिया के साथ कदम मिलाकर चलने में सक्षम मजबूत साझेदारियां बनाकर अमेरिका को अधिक स्वस्थ बनाना।

ऑन-स्क्रीन मार्किंग सिस्टम पर उठ रहे सवाल ?भविष्य से खिलवाड.कब तक

-सौरभ वार्ष्णेय

किसी भी राष्ट्र की प्रगति का आधार उसकी शिक्षा व्यवस्था होती है। शिक्षा केवल ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम नहीं, बल्कि नागरिकों के व्यक्तित्व, कौशल और सोच को विकसित करने का साधन भी है। इसलिए देश के विकास और भविष्य को मजबूत बनाने के लिए शिक्षा नीति पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षा व्यवस्था में तकनीक का प्रवेश आज की आवश्यकता है। परीक्षा मूल्यांकन को अधिक पारदर्शी, तेज और त्रुटिरहित बनाने के उद्देश्य से केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने २०२६ में कक्षा १२ की उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन के लिए ऑन-स्क्रीन मार्किंग प्रणाली लागू की। इस व्यवस्था में उत्तर पुस्तिकाओं को स्कैन कर परीक्षकों के सामने डिजिटल रूप में प्रस्तुत किया जाता है। बोर्ड का दावा है कि इससे जोड.-घटाव की गलतियां कम होंगी, मूल्यांकन की निगरानी बेहतर होगी और परिणाम अधिक विश्वसनीय बनेंगे।

लेकिन जिस तकनीक को सुधार का माध्यम माना गया था, वही अब विवाद के केंद्र में है। देशभर से छात्रों, अभिभावकों और शिक्षकों ने स्कैनिंग की गुणवत्ता, उत्तर पुस्तिकाओं के कथित मिश्रण, कम अंक मिलने और मूल्यांकन संबंधी विसंगतियों को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। कुछ मामलों में छात्रों ने दावा किया कि उन्हें दिखाई गई स्कैन की गई उत्तर पुस्तिका उनकी नहीं थी, जबकि कई उत्तर पुस्तिकाओं को खराब स्कैनिंग के कारण दोबारा स्कैन करना पडा या मैन्युअल रूप से जांचना पडा।सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, राष्ट्रव्यापी क्रियान्वयन से पहले किए गए परीक्षणों में कई तकनीकी और संचालन संबंधी कमियां सामने आई थीं। आंतरिक रिपोर्टों में प्रशिक्षण की कमी, तकनीकी गडब़डि?ों, मूल्यांकन की गुणवत्ता और निगरानी व्यवस्था को लेकर चेतावनियां दी गई थीं। कुछ विशेषज्ञों ने प्रणाली को पूर्ण रूप से लागू करने से पहले अधिक व्यापक परीक्षण की सलाह भी दी थी।यह विवाद केवल तकनीकी खामी का नहीं, बल्कि विश्वास का भी है। बोर्ड परीक्षाएं लाखों विद्यार्थियों के भविष्य को प्रभावित करती हैं। कुछ अंकों का अंतर उच्च शिक्षा और करियर के अवसरों को बदल सकता है। ऐसे में यदि मूल्यांकन प्रक्रिया पर संदेह पैदा होता है तो उसका प्रभाव केवल परिणामों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि पूरी परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता पर पडता है। यही कारण है कि बडी संख्या में विद्यार्थियों ने उत्तर पुस्तिकाओं के सत्यापन और पुनर्मूल्यांकन का सहारा लिया है।हालांकि यह भी सच है कि डिजिटल मूल्यांकन कोई नई अवधारणा नहीं है। दुनिया के अनेक परीक्षा बोर्ड और संस्थान वर्षों से ऐसी प्रणालियों का सफलतापूर्वक उपयोग कर रहे हैं। समस्या तकनीक में नहीं, बल्कि उसके क्रियान्वयन में दिखाई देती है। यदि स्कैनिंग, डेटा सुरक्षा, परीक्षकों के प्रशिक्षण और गुणवत्ता नियंत्रण पर पर्याप्त ध्यान न दिया जाए तो तकनीक समाधान के बजाय नई समस्याएं पैदा कर सकती है।केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने भी कुछ विसंगतियों को स्वीकार करते हुए सुधारात्मक कदम उठाने का आश्वासन दिया है। यह स्वागतयोग्य है, किंतु केवल आश्वासन पर्याप्त नहीं होगा। आवश्यकता इस बात की है कि पूरे विवाद की स्वतंत्र और पारदर्शी समीक्षा हो, तकनीकी कमियों की सार्वजनिक जानकारी दी जाए तथा प्रभावित विद्यार्थियों को शीघ्र और निष्पक्ष राहत प्रदान की जाए।शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन को रोका नहीं जा सकता और न ही रोका जाना चाहिए। परंतु किसी भी सुधार की सफलता उसकी विश्वसनीयता पर निर्भर करती है। विवाद ने यह स्पष्ट कर दिया है कि तकनीक का उद्देश्य केवल प्रक्रिया को तेज करना नहीं, बल्कि विश्वास को मजबूत करना भी होना चाहिए। यदि पारदर्शिता, जवाबदेही और गुणवत्ता नियंत्रण सुनिश्चित किए जाएं तो भविष्य की दिशा बन सकता है; अन्यथा यह एक ऐसे प्रयोग के रूप में याद किया जाएगा जिसने विद्यार्थियों के मन में परीक्षा व्यवस्था को लेकर अनावश्यक शंकाएं पैदा कर दीं।

ब्लैकलिस्टिंग शर्त हटानाःपारदर्शिता पर उठते सवाल

सीबीएसई की ऑन-स्क्रीन मार्किंग परियोजना के टेंडर से विक्रेता को ब्लैकलिस्ट करने संबंधी शर्त हटाए जाने का मामला स्वाभाविक रूप से चर्चा और सवालों का विषय बना है। अब तक सीबीएसई ने सार्वजनिक रूप से इस बदलाव का स्पष्ट और विस्तृत कारण नहीं बताया है। ऐसे में यह केवल एक प्रशासनिक संशोधन नहीं, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही से जुडा मुद्दा बन जाता है। किसी भी सार्वजनिक संस्था के टेंडर नियमों का उद्देश्य केवल सेवा प्रदाता चुनना नहीं होता, बल्कि निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा, गुणवत्ता और सार्वजनिक धन की सुरक्षा सुनिश्चित करना भी होता है। ब्लैकलिस्टिंग का प्रावधान आमतौर पर उन कंपनियों के विरुद्ध एक निवारक उपाय माना जाता है जो अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन करती हैं या जिनका प्रदर्शन संतोषजनक नहीं रहता। इसलिए यदि ऐसी शर्त हटाई जाती है, तो उसके पीछे की प्रशासनिक और कानूनी तर्कसंगतता स्पष्ट रूप से सामने आनी चाहिए।यह भी संभव है कि सीबीएसई ने किसी कानूनी सलाह, नीति परिवर्तन या प्रक्रियागत सुधार के आधार पर यह निर्णय लिया हो। कई बार संस्थाएं ब्लैकलिस्टिंग के बजाय प्रदर्शन गारंटी, वित्तीय दंड या अन्य अनुबंधीय उपायों को अधिक प्रभावी मानती हैं। लेकिन जब तक आधिकारिक स्पष्टीकरण सार्वजनिक नहीं होता, तब तक अटकलों और संदेहों को बल मिलता रहेगा।शिक्षा जैसे संवेदनशील क्षेत्र में, जहां लाखों विद्यार्थियों के परिणाम और मूल्यांकन प्रक्रिया दांव पर होती है, वहां तकनीकी परियोजनाओं से जुडे.निर्णयों में अधिकतम पारदर्शिता अपेक्षित है। छ्क्चस्श्च के लिए यह अवसर है कि वह इस बदलाव के पीछे के कारणों को सार्वजनिक करे और यह स्पष्ट करे कि गुणवत्ता, जवाबदेही तथा निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए कौन-से वैकल्पिक सुरक्षा उपाय अपनाए गए हैं। प्रश्न केवल एक टेंडर शर्त का नहीं है, बल्कि सार्वजनिक संस्थानों में विश्वास बनाए रखने का है। स्पष्ट संवाद और पारदर्शी निर्णय प्रक्रिया ही ऐसे मामलों में भरोसे को मजबूत कर सकती है। **लेखक वरिष्ठ पत्रकार, चिंतक, राजनीतिक विचारक हैं।**

प्रकृति से संगति, भविष्य से दोस्ती: सिर्फ एक दिन क्यों?

-सुनील कुमार महला

नीला ग्रह यानी कि यह पृथ्वी हमारा इकलौता घर है और इसकी सुरक्षा तथा संरक्षण किसी एक व्यक्ति, देश या संस्था की नहीं, बल्कि हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। यही संदेश प्रतिवर्ष ५ जून को मनाया जाने वाला विश्व पर्यावरण दिवस देता है।यदि इस दिवस को मनाने के प्रमुख उद्देश्यों की बात करें, तो इनमें प्रदूषण, वनों की कटाई, ग्लोबल वार्मिंग और जैव विविधता के ह्रास जैसे गंभीर मुद्दों के प्रति लोगों को जागरूक करना; सरकारों, उद्योगों और आम नागरिकों को पर्यावरण संरक्षण हेतु ठोस कदम उठाने के लिए प्रेरित करना; विकास के साथ सतत विकास की अवधारणा को बढावा देना; तथा हर परिस्थिति में पृथ्वी के पर्यावरण का संरक्षण और संवर्धन सुनिश्चित करना शामिल है।

उल्लेखनीय है कि प्रत्येक वर्ष संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (यूएनईपी) द्वारा विश्व पर्यावरण दिवस के लिए एक विशेष थीम निर्धारित की जाती है। वर्ष २०२५ की थीम 'प्रकृति के साथ हमारे संबंधों की पुनर्कल्पना' रखी गई थी। दरअसल,यह थीम इस बात पर केंद्रित थी कि जिस प्रकार मानव प्रकृति का निरंतर दोहन कर रहा है, उसे बदलकर अधिक संतुलित और टिकाऊ दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है। वहीं वर्ष २०२६ की थीम 'प्रकृति से प्रेरित। जलवायु के लिए। हमारे भविष्य के लिए।' निर्धारित की गई है। इस वर्ष का प्रमुख अभियान ङ्काऊ फोर क्लाइमेट है, जो जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता पर बल देता है। साथ ही वर्ष २०२६ के वैश्विक आयोजन की मेजबानी अजरबैजान को सौंपी गई है। हाल फिलहाल,यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास पर दृष्टि डालें, तो पाठकों को बताता चलूं कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष १९७२ में स्टॉकहोम सम्मेलन के दौरान इसकी नींव रखी थी। यही वह अवसर था जब विश्व के देशों ने पहली बार पर्यावरण और मानव जीवन के पारस्परिक संबंधों पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया। आधिकारिक रूप से पहला विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून १९७३ को मनाया गया था, जिसका मुख्य नारा(स्लोगन) 'केवल एक पृथ्वी' था। वास्तव में इस दिवस को मनाने का महत्व आज और अधिक बढ.गया है। वैज्ञानिक चेतावनियों के अनुसार पृथ्वी का औसत तापमान खतरनाक स्तर अर्थात १.५ डिग्री सेल्सियस की सीमा के निकट पहुंच रहा है। ऐसे में यह दिवस जलवायु संकट के प्रति दुनिया को सचेत करने वाले एक वैश्विक अलार्म की तरह कार्य करता है। वर्तमान में १५० से अधिक देश और करोडों लोग इस अभियान(पर्यावरण संरक्षण)से जुडक़र पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में भाग लेते हैं। आज इस दिवस पर ग्रीन हाइड्रोजन जैसी स्वच्छ ऊर्जा तथा जलवायु परिवर्तन से निपटने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के उपयोग जैसे आधुनिक विषयों पर भी चर्चा की जा रही है। स्पष्ट है कि अब दुनिया का ध्यान ग्रीन टेक्नोलॉजी और सतत विकास की ओर तेजी से बढ.रहा है। कहना गलत नहीं होगा कि भारत भी पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर देशभर में बडे. पैमाने पर पौधारोपण अभियान चलाए जाते हैं, सिंगल-यूज प्लास्टिक पर

रोक लगाने के प्रयास किए जा रहे हैं तथा 'श्री अन्न' (मोटे अनाज/मिलेट्स) जैसी टिकाऊ कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है।किन्तु दूसरी ओर एक कटु सत्य यह भी है कि आज का आधुनिक मानव विकास के जिस रथ पर सवार है, उसकी गति जितनी तीव्र है, उसकी दिशा उतनी ही आत्मघाती प्रतीत होती है। हर वर्ष जून का महीना आते ही पर्यावरण संरक्षण को लेकर संगोष्ठियों, सेमिनारों और भाषणों का दौर आरंभ हो जाता है, मानो पूरा समाज प्रकृति को बचाने के लिए व्याकुल हो उठा हो। वातानुकूलित सभागारों में बैठकर, प्लास्टिक की बोतलों से पानी पीते हुए पर्यावरण की चिंता व्यक्त करना हमारे समय का सबसे बडा विरोधाभास बन चुका है। आज वास्तविकता यह है कि धरातल पर स्थितियां सुधरने के बजाय लगातार बिगडती जा रही हैं। हमारा पर्यावरण प्रेम अक्सर एक दिन के दिखावे, सोशल मीडिया पोस्टों और अखबारों में तस्वीरें प्रकाशित करवाने तक सीमित रह जाता है। साफ-सुथरे वस्त्र पहनकर चमचमाती कुदाल से, पानी डालते हुए पौधारोपण की तस्वीरें खिंचवाने वाले लोग अगले ही दिन उन पौधों को भूल जाते हैं।पाठक जानते होंगे कि हमारे प्राचीन शास्त्रों में प्रकृति और मनुष्य के बीच अत्यंत आत्मीय संबंध का वर्णन मिलता है। मनीषियों ने कहा है कि 'एक वृक्ष दस पुत्रों के समान होता है।' इस कथन का आशय यह है कि जिस प्रकार एक नवजात शिशु को निरंतर स्नेह, संरक्षण और देखभाल की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार एक पौधे को भी वृक्ष बनने तक पालना और संरक्षित करना पडता है। दुर्भाग्यवश आज उपभोक्तावादी मानसिकता के दौर में हमने वृक्षों को 'पुत्र' मानना तो दूर, उन्हें केवल एक वार्षिक आयोजन की वस्तु बनाकर छोड.दिया है। परिणामस्वरूप अधिकांश पौधे पर्याप्त देखभाल और पानी के अभाव में शीघ्र ही नष्ट हो जाते हैं। इसके विपरीत, हमारे स्वार्थ की कोई सीमा नहीं रह गई है। आधुनिकता और विकास की अंधी दौड.में हमने हरे-भरे जंगलों, पर्वतों और प्राकृतिक वादियों को उजाड़कर कंक्रीट के जंगल खडे.कर दिए हैं। नदियों के प्राकृतिक मार्गों को अवरुद्ध करना, तालाबों को पाटकर कॉलोनियां बसाना तथा पहाडों का अंधाधुंध दोहन करना आज विकास का प्रतीक माना जाने लगा है। परिणामस्वरूप संपूर्ण प्राकृतिक चक्र असंतुलित हो गया है। आज तथाकथित विकास का सबसे भयावह स्वरूप प्लास्टिक प्रदूषण के रूप में सामने आया है। सिंगल-यूज प्लास्टिक और पैकेज्ड पानी की बोतलों का उपयोग लगातार बढ.रहा है। यह प्लास्टिक केवल भूमि को प्रदूषित नहीं कर रहा, बल्कि सूक्ष्म कणों अर्थात माइक्रोप्लास्टिक के रूप में हमारी खाद्य श्रृंखला, जल और वायु के माध्यम से हमारे शरीर में प्रवेश कर रहा है तथा स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा बनता जा रहा है। सच तो यह है कि सुख-सुविधाओं की असीमित चाहत ने पृथ्वी पर कार्बन फुटप्रिंट को इस सीमा तक बढा दिया है कि ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं, नदियां सिकुड.रही हैं और मौसम का संतुलन पूरी तरह बिगड.चुका है। आज न पहाड.सुरक्षित हैं और न ही मैदान। प्रकृति चक्रवातों, बेमौसम वर्षा, सूखे और रिकॉर्ड तोड.गर्मी के रूप में अपने साथ किए गए अन्याय का उत्तर दे रही है, जिन्हें हम सुविधानुसार 'प्राकृतिक आपदा' कहकर अपनी जिम्मेदारी से बच निकलना चाहते हैं। अब समय आ गया है कि हम कागजी प्रस्तावों, खोखले भाषणों और दिखावटी हरियाली के इस मायाजाल से बाहर निकलें। भाषणों और सेमिनारों का दौर बहुत हो चुका; अब आवश्यकता जमीनी जवाबदेही और वास्तविक कार्रवाई की है। यदि हम सचमुच अपनी आने वाली पीढिय़ों को सुरक्षित भविष्य देना चाहते हैं, तो हमें अपनी जीवनशैली में बदलाव लाना होगा। पेडों को केवल लगाना ही नहीं, बल्कि बच्चों की तरह उनका पालन-पोषण भी करना होगा।अंततः यही कहा जा सकता है कि विश्व पर्यावरण दिवस केवल कैलेंडर की एक तारीख या औपचारिक उत्सव नहीं है, बल्कि आत्ममंथन का अवसर है। सरकारें कानून बना सकती हैं, संस्थाएं योजनाएं चला सकती हैं और कंपनियां बजट उपलब्ध करा सकती हैं, लेकिन वास्तविक परिवर्तन हमारे दैनिक जीवन के छोटे-छोटे निर्णयों से ही आएगा-चाहे वह बिजली की बचत हो, जल संरक्षण हो, प्लास्टिक का कम उपयोग हो या एक पौधे का रोपण और उसका संरक्षण। यदि आज भी हमारी कुंभकर्णी नींद नहीं टूटी और हमने प्रकृति के साथ इस खिलवाड.को नहीं रोका, तो कंक्रीट के जिन जंगलों को हम आज अपनी उपलब्धि और प्रगति का प्रतीक मान रहे हैं, वही एक दिन हमारे अस्तित्व की कब्रगाह बन सकते हैं। प्रकृति के बिना मनुष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए पृथ्वी को बचाना किसी और पर किया गया उपकार नहीं, बल्कि स्वयं को और आने वाली पीढिय़ों को बचाने की अंतिम पुकार है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार, पिथौरागढ, उत्तराखंड।मोबाइल ९८२८१०८८५८

प्रथम पृष्ठ का शेषांश.....

संघर्ष से शिखर तक : बराक घाटी की राजनीति ....

२०२६ में और मजबूत हुआ जनादेश : वर्ष २०२६ के विधानसभा चुनाव में कौशिक राय ने एक बार फिर अपनी लोकप्रियता का परिचय देते हुए बडे.मतों के अंतर से जीत हासिल की। लगातार दूसरी बार विधायक चुने जाने के पीछे कई महत्वपूर्ण कारण रहे। क्षेत्र में हुए विकास कार्य, मंत्री पद पर रहते हुए विभिन्न परियोजनाओं का लाभ, जनता के साथ निरंतर संपर्क तथा उनकी संघर्षशील और कर्मठ छवि ने मतदाताओं का विश्वास और अधिक मजबूत किया। चुनावी मैदान में विपक्षी दलों की चुनौतियों के बावजूद लखीपुर विधानसभा क्षेत्र में उनकी स्थिति अत्यंत मजबूत दिखाई दी।

दूसरी बार कैबिनेट मंत्री, बढा राजनीतिक कद

तीन वर्षों की प्रतीक्षा के बाद मुख्यमंत्री के नेतृत्व वाली असम सरकार में पुनः कैबिनेट मंत्री के रूप में शामिल होना कौशिक राय के बढते राजनीतिक प्रभाव का प्रमाण माना जा रहा है। यह केवल एक पद प्राप्ति नहीं, बल्कि संगठन और सरकार दोनों स्तरों पर उनकी स्वीकार्यता तथा नेतृत्व क्षमता की आधिकारिक मान्यता है।राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि भाजपा नेतृत्व ने बराक घाटी में संगठन को मजबूत करने और चुनावी सफलता दिलाने में उनकी भूमिका को ध्यान में रखते हुए उन्हें महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है।

भविष्य की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका

आज कौशिक राय केवल लखीपुर के विधायक या असम सरकार के मंत्री भर नहीं हैं, बल्कि बराक घाटी में भाजपा की राजनीति के प्रमुख रणनीतिकारों में गिने जाते हैं। संगठनात्मक अनुभव, प्रशासनिक दक्षता और जनाधार का यह समन्वय उन्हें आने वाले वर्षों में राज्य राजनीति का और अधिक प्रभावशाली चेहरा बना सकता है।संघर्ष, धैर्य, संगठन और रणनीति के बल पर सत्ता के शिखर तक पहुंचने वाले कौशिक राय की राजनीतिक यात्रा उन कार्यकर्ताओं के लिए भी प्रेरणा है जो जमीनी स्तर से राजनीति में आगे बढ़ने का सपना देखते हैं। दूसरी बार कैबिनेट मंत्री बनकर उन्होंने न केवल अपनी राजनीतिक स्थिति को और मजबूत किया है, बल्कि बराक घाटी की राजनीति में अपनी 'चाणक्य' छवि को भी और अधिक सुदृढ.कर दिया है।

FSSAI की चेतावनी, अब अखबार में परोसा खाना ....

खाना परोसते और उसी में पार्सल पैक करते हुए पकडा गया था. इसके बाद एफएसएसएआई के पश्चिमी क्षेत्र की टीम और मुंबई नगर निगम ने मिलकर उस दुकान पर एक संयुक्त छापेमारी की और सख्त एक्शन लिया. इस कार्रवाई के बाद अथॉरिटी ने पूरे देश के लिए गाइडलाइन जारी करते हुए साफ कर दिया है कि जो भी दुकानदार, होटल मालिक या रेहडी-पटरी वाला इस आदेश का उल्लंघन करेगा, उसका लाइसेंस रद्द होने के साथ-साथ उसके खिलाफ कडी कानूनी कार्रवाई की जाएगी.एफएसएसएआई ने स्पष्ट किया है कि यह नया नियम छोटे से लेकर बडे, हर तरह के खाद्य विक्रेताओं पर समान रूप से लागू होगा. इस दायरे में सभी स्ट्रीट फूड विक्रेता, रेस्तरां, क्लाउड किचन, शादियों और पार्टियों के कैटरर्स, क्विक सर्विस रेस्टोरेंट, फूड स्टॉल, किराना और मिठाई के छोटे दुकानदार, मोबाइल फूड वेंडर और गली-मोहल्लों में सामान बेचने वाले हॉकर शामिल हैं. अब किसी को भी खाद्य सामग्री पैक करने के लिए अखबार या मैगजीन के पन्नों का इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं होगी.अखबार में खाना पैक करने या परोसने पर रोक लगाने के पीछे एफएसएसएआई ने बेहद चौंकाने वाली और गंभीर वजहों का खुलासा किया है. अथॉरिटी के वैज्ञानिकों और डॉक्टरों के मुताबिक, अखबारों की छपाई (प्रिंटिंग) में जिस स्याही (इंक) का इस्तेमाल किया जाता है, वह सेहत के लिए बेहद खतरनाक होती है. इस स्याही में कई तरह के हानिकारक केमिकल, खतरनाक सिंथेटिक रंग, पिगमेंट और सीसा जैसी घातक भारी धातुएं शामिल होती हैं.जब कडा.ही से निकला हुआ बेहद गर्म और तैलीय (ऑयली) खाना अखबार पर रखा जाता है, तो गर्मी के कारण वह स्याही तुरंत पिघल जाती है और खाने के साथ चिपककर हमारे पेट में पहुंच जाती है. लंबे समय तक ऐसा दूषित और केमिकल युक्त खाना खाने से शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को नुकसान पहुंचता है और यह शरीर में एक धीमे जहर की तरह इकट्ठा होने लगता है, जिससे कैंसर, पेट की गंभीर बीमारियां और लिवर-किडनी खराब होने का जोखिम कई गुना बढ.जाता है.

विद्यालय में गोमांस सेवन और हिंदू छात्रों पर दबाव....

प्रदीप तिमुंग कल्याणपुर हाईस्कूल भी पहुंचे, जहां उन्होंने चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारी सुबल राभा से मुलाकात कर एक अन्य विवादित घटना की जानकारी ली। सुबल राभा ने प्रशासन को बताया कि जिला विद्यालय निरीक्षक कार्यालय में उन्हें कथित रूप से बंद कमरे में कान पकडक़र दंडित किया था।मामले में जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय के निम्न श्रेणी सहायक प्रियमज्योति बोरा तथा शिक्षिका स्नेहलता कलिता के विरुद्ध भी आरोप लगाए गए हैं। प्रशासन ने इन आरोपों की भी जांच करने का आश्वासन दिया है।

शिलचर के स्कूल परिसर के पास ९ फुट लंबा बर्मी...

करीब एक घंटे के प्रयास के बाद अजगर को सुरक्षित रूप से नीचे उतारा गया। त्रिकाल चक्रवती ने बताया कि बरामद सर्प बर्मी अजगर (ईीशीश झीहेप) प्रजाति का है, जिसकी लंबाई लगभग ९ फुट तथा वजन करीब १२ किलोग्राम है।उन्होंने कहा कि बर्मी अजगर भारत के वन्यजीव संरक्षण कानून के तहत संरक्षित प्रजाति है और इसे नुकसान पहुंचाना या मारना दंडनीय अपराध है। सामान्यतः यह प्रजाति जलाशयों, दलदली क्षेत्रों और आर्द्रभूमियों के आसपास निवास करती है। उनके अनुसार, संभवतः आसपास के किसी जलाशय से निकलकर धूप सेंकने के उद्देश्य से यह अजगर पेड.पर चढ.गया था।इस घटना पर चिंता व्यक्त करते हुए शिशु वितान स्कूल की प्रधानाचार्या इंद्राणी भट्टाचार्य ने बताया कि विद्यालय के पास स्थित एक बडा नाला लंबे समय से उपेक्षित पडा हुआ है। नियमित सफाई के अभाव और झाडि़यों के घने होने के कारण वहां अजगर समेत विभिन्न प्रकार के सर्पों के छिपे रहने की आशंका बनी रहती है।उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र में दो प्राथमिक विद्यालय और एक संगीत विद्यालय स्थित हैं, जहां प्रतिदिन बडी संख्या में विद्यार्थी और अभिभावक आते-जाते हैं। ऐसे में विद्यालय परिसर के आसपास जंगली जीवों, विशेषकर बडे.आकार के सर्पों की मौजूदगी जनसुरक्षा के लिए गंभीर चिंता का विषय है।प्रधानाचार्या ने शिलचर नगर निगम तथा स्थानीय प्रशासन से तत्काल हस्तक्षेप करने की मांग करते हुए विद्यालय के आसपास स्थित नालों, झाडियों और जंगली वनस्पतियों की सफाई कराने की अपील की, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।उधर, वन विभाग के अधिकारियों ने बताया कि बरामद बर्मी अजगर को उसके संरक्षण में रखा गया है। आवश्यक स्वास्थ्य परीक्षण और निरीक्षण के बाद उसे उसके प्राकृतिक आवास के अनुकूल सुरक्षित स्थान पर छोड.दिया जाएगा।इस घटना ने जहां स्थानीय लोगों में चिंता पैदा की है, वहीं सर्प उद्धारक दल की तत्परता और जागरूकता के कारण एक संरक्षित वन्यजीव को सुरक्षित बचाने में सफलता मिली। अब क्षेत्रवासियों की मांग है कि प्रशासन जल्द से जल्द आसपास के नालों और झाडियों की सफाई कर क्षेत्र को सुरक्षित बनाए।

डिब्रूगढ़ बार एसोसिएशन के अंदर क्लाइंट ने मारपीट....

लिए दौडे। इस घटना से कोर्ट कैंपस में तनाव फैल गया क्योंकि हैरान सहकर्मियों ने कानूनी पेशे के एक सदस्य के खिलाफ कथित हिंसा की निंदा की।सूचना मिलने पर, डिब्रूगढ.पुलिस के लोग तुरंत मौके पर पहुंचे और आरोपी को हिरासत में ले लिया। इसके बाद गंगा सागर पासवान को गिरफ्तार कर लिया गया और पूछताछ के लिए ले जाया गया। इस घटना से कोर्ट परिसर में वकीलों की सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं पैदा हो गई हैं। कानूनी समुदाय के सदस्यों ने हमले की कडी निंदा की है और आरोपियों के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की मांग की है।पुलिस ने उन हालात का पता लगाने के लिए जांच शुरू कर दी है जिनकी वजह से हमला हुआ। आगे की जानकारी का इंतजार है। एक प्रोफेशनल कानूनी संस्था के अंदर एक वकील पर उसके ही क्लाइंट द्वारा किए गए इस चौंकाने वाले हमले ने सुरक्षा उपायों और सार्वजनिक जगहों पर हिंसा की बढती घटनाओं पर नए सवाल खडे.कर दिए हैं।

धोलाई में बडी कार्रवाई: १.२७८ किलोग्राम संदिग्ध....

की खेप तस्करी के लिए लाई जा रही थी। अभियान के दौरान बरामद मादक पदार्थों के साथ-साथ तस्करी में प्रयुक्त दोनों वाहनों को भी जब्त कर लिया गया। मौके से तीन संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई, जिसके बाद उन्हें औपचारिक रूप से गिरफ्तार कर लिया गया।पुलिस सूत्रों के अनुसार, जांच के हित में गिरफ्तार व्यक्तियों की पहचान फिलहाल सार्वजनिक नहीं की गई है। अधिकारियों का मानना है कि यह बरामदगी अंतराज्यीय मादक पदार्थ तस्करी नेटवर्क के खिलाफ एक महत्वपूर्ण सफलता है।जांच एजेंसियां अब यह पता लगाने में जुटी हैं कि इस तस्करी गिरोह से और कौन-कौन लोग जुडे. हुए हैं तथा मादक पदार्थों की इस खेप का अंतिम गंतव्य क्या था। कछार पुलिस और एनसीबी ने स्पष्ट किया है कि क्षेत्र में मादक पदार्थों की तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए भविष्य में भी ऐसे अभियान और अधिक सख्ती से जारी रहेंगे।पुलिस अधिकारियों ने इस कार्रवाई को हाल के समय में मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान की एक बडी उपलब्धि बताया है।

किसानों के नाम पर सरकारी अनुदान प्राप्त पावर टिलर...

गिरोह के बारे में सुराग मिला। जांच की प्रगति के आधार पर नुरुल इस्लाम लस्कर को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई जिसमें कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आई। उसके द्वारा दी गई सूचना के आधार पर पुलिस ने विभिन्न स्थानों से चार पावर टिलर बरामद किए।पुलिस का कहना है कि बरामद किए गए पावर टिलर कृषि विभाग के माध्यम से वास्तविक किसानों एवं लाभार्थियों के नाम पर केंद्र सरकार की कृषि यंत्रीकरण उपमिशन (डचअच) योजना के तहत अनुदानित दरों पर आवंटित किए गए थे। लेकिन इन मशीनों को वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचाने के बजाय अवैध रूप से एकत्र कर बेच दिया जा रहा था जिससे सरकारी योजना को नुकसान पहुंच रहा था।उल्लेखनीय है कि कृषि उत्पादन बढाने तथा किसानों को आधुनिक यांत्रिक सुविधाएं उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केंद्र सरकार एसएमएएम (डचअच) योजना के तहत अनुदानित दरों पर विभिन्न कृषि उपकरण उपलब्ध कराती है। इस योजना के अंतर्गत वितरित पावर टिलरों की अवैध बिक्री न केवल सरकारी संसाधनों का दुरुपयोग है बल्कि वास्तविक किसानों को उनके अधिकारों से वंचित करने के समान भी है।घटना के संबंध में पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता (बीएन एस) की धारा ६१(२)३०३(२) ३१६(२) तथा ३१८(४) के तहत मामला दर्ज किया है। वर्तमान में आरोपी से पूछताछ जारी है तथा यह पता लगाने का प्रयास किया जा रहा है कि इस गिरोह में और कौन-कौन लोग शामिल हैं।जांच अधिकारियों के अनुसार इस पूरे मामले के पीछे एक बडे.नेटवर्क के सक्रिय होने की आशंका है। सरकारी अनुदान प्राप्त कृषि यंत्रों के संग्रहण परिवहन और अवैध बिक्री में कई अन्य व्यक्तियों के भी शामिल होने की संभावना जताई जा रही है। इसी दिशा में पुलिस अपनी जांच को आगे बढा रही है।हाइलाकांदी पुलिस की इस कार्रवाई से सरकारी अनुदान आधारित योजनाओं के दुरुपयोग का एक महत्वपूर्ण मामला उजागर हुआ है। प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि किसानों के लिए निर्धारित सरकारी सुविधाएं किसी भी स्थिति में असामाजिक तत्वों या अवैध गिरोहों के हाथों में न जाएं इसके लिए कडी निगरानी जारी रहेगी। साथ ही इस मामले में शामिल प्रत्येक व्यक्ति को कानून के दायरे में लाने के लिए जांच को और तेज किया गया है।

बांग्लादेश के अधिकारी ने आपसी व्यापार संबंधों को मजबूत करने के लिए असम पेट्रो-केमिकल्स लिमिटेड का दौरा किया

नामरूप:(अर्णव शर्मा) ६ जून : भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार और आर्थिक सहयोग बढाने के मकसद से एक अहम कदम उठाते हुए, गुवाहाटी में बांग्लादेश के असिस्टेंट हाई कमिश्नर और हेड ऑफ.मिशन, जिशुल हसन फरहाद ने डिब्रूगढ.जलि़े के नामरूप में असम पेट्रो-केमिकल्स लिमिटेड (APL) का दौरा किया।इस दौरे को दोनों पडोसी देशों के बीच कमर्शियल सहयोग बढाने और मजबूत आर्थिक संबंधों को बढावा देने की दिशा में एक अहम कदम के तौर पर देखा जा रहा है। अझङ परिसर में पहुंचने पर, फरहाद ने पर्यावरण की स्थिरता के लिए एक साझा कमिटमेंट का प्रतीक, एक पौधा लगाकर वर्ल्ड एनवायरनमेंट डे मनाया।इस दौरे के दौरान, बांग्लादेशी डिप्लोमैट ने कंपनी की अलग-अलग प्रोडक्शन और प्रोसेसिंग यूनिट्स का दौरा किया और उन्हें अझङ के ऑपरेशन्स, मैन्युफैक्चरिंग क्षमताओं और चल रहे प्रोजेक्ट्स के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने अझङ कॉन्फ्रेंस हॉल में हुई एक मीटिंग में कंपनी के सीनियर मैनेजमेंट और अधिकारियों के साथ डिटेल में बातचीत भी की।बातचीत में भारत-बांग्लादेश ट्रेड रिलेशन को मजबूत करने, पेट्रोकेमिकल प्रोडक्ट्स का एक्सपोर्ट बढाने और बॉर्डर पार ट्रेड को आसान बनाने के लिए नए ट्रांसपोर्टेशन और लॉजिस्टिक्स ऑप्शन खोजने पर फोकस रहा।मीटिंग के बाद मीडिया से बात करते हुए, फरहाद ने पिछले दो सालों में असम से बांग्लादेश को पेट्रोकेमिकल एक्सपोर्ट में हुई जबरदस्त बढोतरी के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जहाँ असम ने २०२३ में बांग्लादेश को लगभग ३०० मीट्रिक टन पेट्रोकेमिकल प्रोडक्ट्स एक्सपोर्ट किए, वहीं २०२४-२५ के दौरान यह वॉल्यूम काफी बढक़र लगभग ६,००० मीट्रिक टन हो गया, जो लगभग २०० गुना बढोतरी दिखाता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि अझङ और बांग्लादेशी स्टेकहोल्डर्स के बीच बेहतर सहयोग से बाइलेटरल ट्रेड को और बढावा मिलेगा और दोनों इलाकों के इकोनॉमिक डेवलपमेंट में मदद मिलेगी।यह दौरा बांग्लादेश को पेट्रोकेमिकल प्रोडक्ट्स के एक मुख्य सप्लायर के तौर पर असम की बढती अहमियत को दिखाता है और आपसी फायदे वाली पार्टनरशिप के जरिए इकोनॉमिक जुडाव को गहरा करने के लिए दोनों पक्षों के कमिटमेंट को मजबूत करता है।

AMCH कैंपस से अजीब हालात में युवक लापता; परिवार उसके लौटने का इंतजार कर रहा है

डिब्रूगढ:(अर्णव शर्मा) ६ जून : डिब्रूगढ.जिले के टिंगखांग चुनाव क्षेत्र में बरबाम पुलिस चौकी के तहत रंगसुअल गांव में २९ साल के युवक प्रांजल लाहोन के अजीब हालात में लापता होने के बाद चिंता और अनिश्चितता का माहौल है। प्रांजल लाहोन २२ मई से लापता है। प्रांजल लाहोन हाल ही में असम मेडिकल कॉलेज और हॉस्पिटल (AMCH), डिब्रूगढ.के कैंपस में PNB गर्ल्स हॉस्टल की कैंटीन में कर्मचारी के तौर पर शामिल हुआ था। परिवार वालों के मुताबिक, प्रांजल को आखिरी बार २२ मई की सुबह देखा गया था, जब वह हॉस्टल कैंपस से बाहर निकला था। CCTV फुटेज में उसकी आखिरी हरकत कैद हुई है। तब से उसका कोई पता नहीं चला है। उसका मोबाइल फोन बंद है, और उसने परिवार के किसी भी सदस्य से संपर्क नहीं किया है। उसके लापता होने के हालात अभी साफ नहीं हैं, जिससे रिश्तेदारों और स्थानीय लोगों में चिंता बढ.गई है।प्रांजल अपने पीछे अपनी पत्नी, छह साल के बेटे, माता-पिता, बूढी दादी और बहन को छोड.गया है, जो सभी बेसब्री से उसके लौटने का इंतजार कर रहे हैं। परिवार ने अपील की है कि अगर किसी के पास उसके बारे में कोई जानकारी हो तो वह आगे आए। इस घटना से रंगसुअल गांव में बहुत चिंता फैल गई है, कई लोग सवाल कर रहे हैं कि क्या वह लडक़ा अपनी मर्जी से गया है या उसके गायब होने के पीछे कोई और वजह हो सकती है।परिवार ने डिब्रूगढ.सदर पुलिस स्टेशन, बारबारी पुलिस चौकी और बारबाम पुलिस चौकी में गुमशुदगी की शिकायत दर्ज कराई है, और उसे ढूंढने में तुरंत दखल और मदद की मांग की है। जब दिन बीत रहे हैं और कोई सुराग नहीं मिल रहा है, तो प्रांजल के माता-पिता और बूढी दादी ने एक इमोशनल अपील की है, जिसमें उससे कहा है कि अगर वह हो सके तो सुरक्षित घर लौट आए। इस रहस्यमयी गायब होने से पूरे इलाके में काफी चिंता और चर्चा है, और लोग उसके सुरक्षित और जल्दी लौटने की उम्मीद कर रहे हैं।

जोरहाट एडमिनिस्ट्रेशन ने डिस्ट्रिक्ट डे २०२६ की तैयारियों का रिव्यू किया

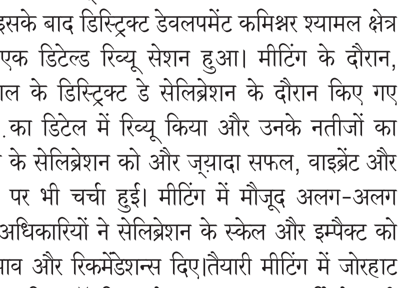

जोरहाट (अर्णव शर्मा) ६ जून :: आने वाले डिस्ट्रिक्ट डे के इंतजामों पर चर्चा करने के लिए आज जोरहाट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के कॉन्फ्रेंस हॉल में एक जरूरी तैयारी मीटिंग हुई, जो १ जुलाई, २०२६ को मनाया जाना है। मीटिंग एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर पंकज बोरा के वेलकम एड्रेस से शुरू हुई, जिन्होंने पार्टिसिपेंट्स का गर्मजोशी से स्वागत किया और मीटिंग के मकसद बताए। इसके बाद डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिश्नर श्यामल क्षेत्र गोगोई की अध्यक्षता में एक डिटेल्ड रिव्यू सेशन हुआ। मीटिंग के दौरान, पार्टिसिपेंट्स ने पिछले साल के डिस्ट्रिक्ट डे सेलिब्रेशन के दौरान किए गए प्रोग्राम्स और एक्टिविटीज.का डिटेल में रिव्यू किया और उनके नतीजों का असेसमेंट किया। इस साल के सेलिब्रेशन को और ज़्यादा सफल, वाइब्रेंट और एंगेजिंग बनाने की स्ट्रेटेजी पर भी चर्चा हुई। मीटिंग में मौजूद अलग-अलग डिपार्टमेंट्स के हेड्स और अधिकारियों ने सेलिब्रेशन के स्केल और इम्पैक्ट को बढाने के लिए कीमती सुझाव और रिकमेंडेशन्स दिए।तैयारी मीटिंग में जोरहाट जलि़ा परिषद के चीफ.एग्जीक्यूटिव ऑफसि़र मनोज कुमार बरुआ, जलि़े के सभी एडिशनल डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, टीओक और टिटाबोर के को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर, सर्कल ऑफसि़र और अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट के हेड शामिल हुए।जलि़ा एडमिनिस्ट्रेशन से उम्मीद है कि आने वाले हफ्तों में जोरहाट जलि़े में डिस्ट्रिक्ट डे २०२६ को कामयाबी से मनाने के लिए एक बडा प्रोग्राम फाइनल किया जाएगा।

रेसोनिया ने वर्ल्ड एनवायरनमेंट डे के मौके पर प्लांटेशन ड्राइव शुरू की

काजलगांव:(अर्णव शर्मा) ६ जून : वर्ल्ड एनवायरनमेंट डे २०२६ के मौके पर, रेसोनिया ने अपने प्रोजेक्ट एरिया में बडे.पैमाने पर प्लांटेशन ड्राइव शुरू की है, जिसका मकसद वर्ल्ड एनवायरनमेंट वीक के दौरान ५०० पौधे लगाना है।यह पहल ५ जून को राखलडुबी में घएउ स्टोर में एक उद्घाटन कार्यक्रम के साथ शुरू हुई, जिसके बाद काजलगांव पुलिस स्टेशन और सिदली सर्कल ऑफिस में प्लांटेशन एक्टिविटीज.हुई। इस इवेंट में पुलिसवालों, सरकारी अधिकारियों और स्टाफ मेंबर्स ने एक्टिव रूप से हिस्सा लिया, जिससे एनवायरनमेंट बचाने और सस्टेनेबल डेवलपमेंट के लिए मिलकर कमिटमेंट दिखाया गया। यह प्रोग्राम घएउ के साथ मिलकर ऑर्गनाइज.किया गया था।एक हफ्ते तक चलने वाले इस कैंपेन के हिस्से के तौर पर, ८-९ जून तक प्रोजेक्ट एरिया में हॉस्पिटल, स्कूल, कॉलेज और सरकारी ऑफिस समेत अलग-अलग जगहों पर प्लांटेशन ड्राइव जारी रहेंगी।इस मौके पर, रेसोनिया के एक स्पोक्सपर्सन ने कहा कि इस पहल का मकसद न सिर्फ ग्रीन कवर बढाना है, बल्कि लोकल कम्युनिटीज.के लिए एक हेल्दी और ज़्यादा सस्टेनेबल भविष्य को बढावा देना भी है।प्रवक्ता ने पर्यावरण से जुडी चुनौतियों से निपटने और एक बेहतर कल को बढावा देने के लिए मिलकर काम करने की अहमियत पर जोर दिया। प्रोग्राम की लंबे समय तक सफलता पक्का करने के लिए, रेसोनिया ने हर महीने फॉलो-अप और जरूरी देखभाल के तरीकों के जरिए लगाए गए पौधों की रेगुलर मॉनिटरिंग और मेंटेनेंस करने का वादा किया है।रेसोनिया ने सभी स्टेकहोल्डर्स का उनके सपोर्ट के लिए शुक्रिया भी कहा और पूरे इलाके में पर्यावरण की स्थिरता और कम्युनिटी द्वारा चलाए जा रहे संरक्षण के कामों को आगे बढाने के अपने वादे को फिर से दोहराया।

असम के जोनाई में बिना आदमी वाले क्रॉसिंग पर ट्रेन की टक्कर से अरुणाचल की महिला की मौत, एक गंभीर रूप से घायल

जोनाई: (अर्णव शर्मा) ६ जून : असम के धेमाजी जिले में बिना आदमी वाले रेलवे क्रॉसिंग पर एक दर्दनाक हादसे में अरुणाचल प्रदेश की एक महिला की मौत हो गई और एक पैसेंजर ट्रेन के चार पहिया वाहन से टकराने से एक और व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया।यह हादसा जोनाई में डेकापम डेका-शांतिपुर बिना आदमी वाले रेलवे क्रॉसिंग पर हुआ। अधिकारियों के मुताबिक, एक बोलेरो गाडी (रजिस्ट्रेशन नंबर अठ-०२अ-१५४८) रेलवे ट्रैक पार करने की कोशिश कर रही थी, तभी लेडो-मुरकोंगसेलेक ऊएचण एक्सप्रेस तेज.रफ्तार से क्रॉसिंग के पास आई।ट्रेन ने गाडी को जोरदार टक्कर मारी, जिससे वह लगभग ४०० मीटर तक ट्रैक पर घसीटती चली गई। टक्कर से गाडी पूरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई, जिससे उसकी पहचान नहीं हो पाई। मृतक की पहचान अरुणाचल प्रदेश की रहने वाली रूपा रीबा (४५) के रूप में हुई है। उसे जानलेवा चोटें आई और उसकी मौके पर ही मौत हो गई।गाडी का ड्राइवर, जिसका सरनेम भी रीबा है, टक्कर में गंभीर रूप से घायल हो गया। उसे तुरंत इमरजेंसी इलाज के लिए पास के एक मेडिकल सेंटर में ले जाया गया और बाद में उसकी हालत गंभीर होने की वजह से एडवांस मेडिकल केयर के लिए डिब्रूगढ.रेफर कर दिया गया।रेलवे और लोकल अधिकारी हादसे के तुरंत बाद मौके पर पहुंचे और जरूरी काम शुरू किए। इस घटना ने एक बार फिर बिना आदमी वाले रेलवे क्रॉसिंग पर सुरक्षा को लेकर चिंता बढा दी है, खासकर दूर-दराज के इलाकों में जहां ऐसी क्रॉसिंग आने-जाने वालों के लिए बडा खतरा बनी हुई हैं।

जोरहाट में अर्बन जलदूत पायलट प्रोजेक्ट सफलतापूर्वक पूरा हुआ

जोरहाट:(अर्णव शर्मा) ६ जून : अर्बन जलदूत पायलट प्रोजेक्ट का वेलेडिक्टरी प्रोग्राम पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग (PHE) डिपार्टमेंट, जोरहाट के ऑडिटोरियम में सफलतापूर्वक हुआ। इस इवेंट में जोरहाट डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर जय शिवानी चीफ गेस्ट के तौर पर शामिल हुई। इस प्रोजेक्ट को reapbenefit.org ने पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट और डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन के एक्टिव सपोर्ट से लागू किया था।इस पहल के तहत, जिले भर के नौ स्कूलों ने हिस्सा लिया, जिसमें लगभग ४५० स्टूडेंट्स ने वॉटर मैनेजमेंट और सैनिटेशन पर फोकस करने वाली एक्टिविटीज.की एक सीरीज.में हिस्सा लिया। स्टूडेंट्स को ट्रेनिंग दी गई और उन्हें अपने समुदायों में पानी और सैनिटेशन से जुडी समस्याओं को पहचानने और उन्हें हल करने से जुडी जमि्मेदारियाँ सौंपी गई।प्रोग्राम के जरिए, पार्टिसिपेंट्स को लोकल चुनौतियों की असली वजहों को एनालाइज.करने, प्रैक्टिकल सॉल्यूशन बनाने और कम्युनिटी की भलाई में योगदान देने के लिए बढावा दिया गया। इस पहल ने स्टूडेंट्स में सिविक जमि्मेदारी और एक्टिव सिटिजनशिप की भावना भी बढाई, जिससे वे समाज की बेहतरी के लिए काम के एक्शन लेने के लिए मजबूत हुए।उनकी कोशिशों को पहचानने और बढावा देने के लिए, जलि़ा प्रशासन और डिपार्टमेंट ने आखिरी सेरेमनी में हिस्सा लेने वाले स्कूलों, स्टूडेंट्स और बहुत अच्छा काम करने वालों को सर्टिफिकेट और तारीफ.के अवॉर्ड दिए। प्रोग्राम में पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग डिपार्टमेंट, जोरहाट के एग्जीक्यूटिव इंजीनियर के साथ-साथ डिपार्टमेंट के दूसरे अधिकारी और स्टाफ मेंबर भी शामिल हुए।

तिनसुकिया प्रशासन ने NH-15 पर दुर्घटना-संभावित इलाकों में सड़क सुरक्षा उपायों की समीक्षा की

तिनसुकिया: (अर्णव शर्मा) ६ जून : सडक़ सुरक्षा को बेहतर बनाने और सडक़ दुर्घटनाओं को कम करने की दिशा में एक सक्रिय कदम उठाते हुए, तिनसुकिया के जलि़ा आयुक्त सुमित सत्तावन और वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक मयंक कुमार ने संबंधित विभागों के अधिकारियों के साथ मिलकर नेशनल हाईवे-१५ पर दुर्घटना-संभावित कई जगहों का विस्तृत निरीक्षण किया।इस निरीक्षण में माकुम, बोरहापजन, बिषाकोपी, रूपई साइडिंग (पुराना अ.ढ. रोड) और चामडांग बाईपास जैसे संवेदनशील इलाके शामिल थे, जहाँ अधिकारियों ने सडक़ सुरक्षा से जुडी मौजूदा सुविधाओं की समीक्षा की और अतिरिक्त सुरक्षा उपायों की जरूरत का आकलन किया।दौरे के दौरान, जलि़ा आयुक्त ने लोक निर्माण विभाग (सडक़) को निर्देश दिया कि वे अहम जगहों पर जरूरी सुरक्षा सुविधाओं, जैसे स्पीड ब्रेकर, ट्रैफकि़ साइन और सडक़ पर मार्किंग लगाने का काम तेजी से पूरा करें। उन्होंने तेज.रफ्तार (ओवरस्पीडिंग) के खलि़ाफ.सख्त कार्रवाई करने पर भी जोर दिया और अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे ट्रैफकि़ नियमों का उल्लंघन करने वाले वाहन चालकों, खासकर बिना हेलमेट के गाडी चलाने वालों के खलि़ाफ.अभियान तेज.करें।

अधिकारियों ने स्थानीय निवासियों, यात्रियों और पैदल चलने वालों से बातचीत की ताकि सडक़ सुरक्षा से जुडी चिंताओं पर उनकी राय जानी जा सके और ट्रैफकि़ नियमों का पालन करने के महत्व के बारे में जागरूकता फैलाई जा सके। उन्होंने वाहन चालकों से अपील की कि वे हेलमेट पहनें, ट्रैफकि़ नियमों का पालन करें और सुरक्षित ड्राइविंग करें ताकि दुर्घटनाओं को रोका जा सके और जानें बचाई जा सकें।यह निरीक्षण तिनसुकिया जलि़े में सडक़ सुरक्षा सुविधाओं को मजबूत करने और सडक़ के जमि़्मेदार इस्तेमाल को बढावा देने के लिए जलि़ा प्रशासन की चल रही कोशिशों का हिस्सा है।

डिब्रूगढ.के स्टूडेंट ने SASMO 2026 में इंडिया में रैंक १ और वर्ल्ड में रैंक २ हासिल की

डिब्रूगढ: (अर्णव शर्मा) ६ जून : एक शानदार कामयाबी में, जिसने असम और देश को बहुत गर्व महसूस कराया है, डिब्रूगढ.के निखिलेश गोगोई ने मशहूर सिंगापुर और एशियन स्कूल्स मैथ ओलंपियाड (डअडचज) २०२६ में इंडिया में रैंक १ और वर्ल्ड में रैंक २ हासिल की है, जो दुनिया के सबसे मशहूर इंटरनेशनल मैथेमेटिक्स कॉम्पिटिशन में से एक है। ५२ देशों के ६१,००० से ज़्यादा स्टूडेंट्स के साथ मुकाबला करते हुए, निखिलेश ने जबरदस्त मैथेमेटिकल एप्टीट्यूड, एनालिटिकल थिंकिंग और प्रॉब्लम-सॉल्विंग स्किल्स का प्रदर्शन किया और इंडिया से सबसे ज़्यादा रैंक पाने वाले पार्टिसिपेंट और दुनिया भर में दूसरे सबसे ज़्यादा स्कोर करने वाले के तौर पर उभरे।निखिलेश जुनमोनी गोगोई के बेटे और पुलिन चंद्र गोगोई और सुमित्रा गोगोई के पोते हैं। उनकी इस शानदार कामयाबी की एजुकेटर्स, शुभचिंतकों और कम्युनिटी के लोगों ने बहुत तारीफ.की है, जिन्होंने इस कामयाबी को असम के एकेडमिक माहौल के लिए एक बडा माइलस्टोन बताया है। SASMO को अपने मुश्किल और कॉन्सेप्ट पर आधारित सवालों के लिए इंटरनेशनल लेवल पर पहचान मिली है, जो स्टूडेंट्स की मैथ की समझ, लॉजिकल रीजनिंग और क्रिटिकल थिंकिंग की काबिलियत का अंदाजा लगाते हैं। इतने कॉम्पिटिटिव एग्जाम में टॉप ग्लोबल रैंक हासिल करना एक बहुत कम मिलने वाली और खास कामयाबी मानी जाती है। निखिलेश की कामयाबी न सिर्फ उनके डेडिकेशन, लगन और पढाई में बेहतरीन होने को दिखाती है, बल्कि इंटरनेशनल लेवल पर असम के टैलेंटेड युवा दिमागों की बढती मौजूदगी को भी दिखाती है। उनकी कामयाबी से राज्य और देश भर के स्टूडेंट्स को मैथ और दूसरे एकेडमिक सब्जेक्ट्स में बेहतरीन करने के लिए इंस्पायर होने की उम्मीद है। जहां अलग-अलग जगहों से बधाई के मैसेज आ रहे हैं, वहीं निखिलेश गोगोई की यह शानदार कामयाबी भारत की युवा पीढी की ग्लोबल एकेडमिक कॉम्पिटिशन में बेहतर करने और देश का नाम रोशन करने की बहुत ज़्यादा काबिलियत का एक शानदार उदाहरण है।

सिबसागर डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिटी ने जरूरी सरकारी स्कीमों की प्रोग्रेस का रिव्यू किया

सिबसागर (अर्णव शर्मा) ६ जून :: सिबसागर डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिटी की मंथली मीटिंग शनिवार को डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ऑफिस के वीडियो कॉन्फ्रेंस हॉल में डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर मृदुल यादव की अध्यक्षता में हुई। मीटिंग में अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट के डिस्ट्रिक्ट लेवल के हेड शामिल हुए, जिन्होंने डेवलपमेंट एक्टिविटीज.की प्रोग्रेस और जिले भर में चल रही कई जरूरी सरकारी स्कीमों के इम्प्लीमेंटेशन स्टेटस का रिव्यू किया। पंचायत और रूरल डेवलपमेंट, एग्रीकल्चर, एजुकेशन, हेल्थ, फूड, पब्लिक डिस्ट्रीब्यूशन और कंज्यूमर अफेयर्स, रेवेन्यू, पब्लिक वर्क्स (रोड्स एंड बिल्डिंग्स), पब्लिक हेल्थ इंजीनियरिंग, ट्रांसपोर्ट, विमेन एंड चाइल्ड डेवलपमेंट, अर्बन डेवलपमेंट, असम पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड (APDCL), एनिमल हस्बैंड्री और वेटनरी, फिशरीज, इंडस्ट्रीज एंड कॉमर्स, वॉटर रिसोर्स, इरिगेशन, और असम स्टेट रूरल लाइवलीहुड्स मिशन (ASRLM) जैसे डिपार्टमेंट्स के कामकाज और परफॉर्मेंस पर डिटेल में चर्चा हुई। मीटिंग के दौरान, डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने डिपार्टमेंट हेड्स को इम्प्लीमेंटेशन की क्वालिटी बनाए रखने और सभी डेवलपमेंट प्रोजेक्ट्स और स्कीमों को समय पर पूरा करने का निर्देश दिया। उन्होंने पब्लिक वेलफेयर प्रोग्राम और सर्विस को अच्छे से पहुंचाने के लिए डिपार्टमेंट के बीच तालमेल को मजबूत करने की जरूरत पर भी जोर दिया। मीटिंग का एक खास फोकस चीफ मिनिस्टर डैशबोर्ड (CM Dashboard) पर था। डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर ने डैशबोर्ड से जुडी सरकारी स्कीमों के स्टेटस का रिव्यू किया और सही मॉनिटरिंग और इवैल्यूएशन पक्का करने के लिए संबंधित डिपार्टमेंट द्वारा प्रोग्रेस डेटा को समय पर अपडेट करने और इंटीग्रेट करने की जरूरत पर जोर दिया। इसमें डिस्ट्रिक्ट डेवलपमेंट कमिश्नर पवित्र कुमार दास, डिस्ट्रिक्ट काउंसिल के चीफ एग्जीक्यूटिव ऑफिसर सतीश चंद्र ठाकुरिया, नाजरि़ा की को-डिस्ट्रिक्ट कमिश्नर प्रतिभा मेश्राम, असिस्टेंट कमिश्नर गणेश चंद्र बोरो, म्युनिसिपल बॉडी के एग्जीक्यूटिव ऑफिसर, ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर, अलग-अलग सरकारी डिपार्टमेंट के सीनियर अधिकारी और डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन के अधिकारी और स्टाफ मौजूद थे।

एसएसबी और कोकराझार पुलिस की बडी कार्रवाई: अवैध देसी हथियार के साथ शिकारी गिरफ्तार

प्रे.सं. कोकराझार ६ जून : सशस्त्र सीमा बल (एसएसबी) की ६वीं वाहिनी और कोकराझार पुलिस ने एक संयुक्त अभियान के तहत वन्यजीवों के शिकार की बडी साजिश को नाकाम कर दिया है। सुरक्षा बलों ने गुप्त सूचना के आधार पर कार्रवाई करते हुए एक संदिग्ध शिकारी को अवैध देसी हथियार के साथ रंगे हाथों गिरफ्तार किया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार एसएसबी की वाह्य सीमा चौकी (बीओपी) नहरानी को एक सटीक खुफिया इनपुट मिला था। सूचना मिली थी कि सरलपारा क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले आमगुरी गांव के वन क्षेत्र में कुछ उपद्रवी अवैध शिकार की फिराक में देसी बंदूक के साथ छिपे हुए हैं।सूचना मिलने के तुरंत बाद, नहरानी बीओपी के सहायक कमांडेंट श्री महा मृत्युंजय कुमार पाठक के नेतृत्व में एसएसबी की टीम हरकत में आई। कोकराझार की डीएसपी सुश्री मीतुमा बसुमतारी और सरलपारा बीओपी के कंपनी प्रभारी के साथ मिलकर एक संयुक्त 'नाका सह तलाशी दल' का गठन किया गया। टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आमगुरी गांव के लक्षित इलाके की घेराबंदी (कॉर्डन) की और सघन तलाशी अभियान शुरू किया।तलाशी के दौरान, रात लगभग ११:२७ बजे सुरक्षा बलों ने एक संदिग्ध व्यक्ति को पकडा। तलाशी लेने पर उसके पास से एक अवैध देसी निर्मित हथियार बरामद हुआ। सुरक्षा बलों ने हथियार को जब्त कर आरोपी को मौके पर ही हिरासत में ले लिया। ?पकडा गया आरोपी: ?नाम: लखी राम मुर्मू?पिता का नाम: राम साई मुर्मू ?निवासी: ग्राम- आमगुरी, सरलपारा, डाकघर- उलटापानी, जिला- कोकराझार। गिरफ्तारी और जब्ती की प्रक्रिया पूरी करने के बाद, आरोपी और बरामद अवैध हथियार को अग्रिम विभागीय कार्यवाही हेतु कोकराझार पुलिस चौकी के सुपुर्द कर दिया गया है। ?६वीं वाहिनी एसएसबी के अधिकारियों ने बताया कि सीमा सुरक्षा के साथ-साथ सीमावती क्षेत्रों में वन्यजीवों की रक्षा और कानून-व्यवस्था बनाए रखना उनकी प्राथमिकता है। इस सफल ऑपरेशन से क्षेत्र में अवैध शिकार की घटनाओं पर अंकुश लगाने में बडी मदद मिली है।

सीजेपी का विरोध प्रदर्शन समाप्त, जमकर गरजे अभिजीत, भरपूर मिला छात्र-युवाओं का समर्थन, रखी ये मांगे

नई दिल्ली. (एजें) ६ जून : कॉकरोच जनता पाटी के संस्थापक अभिजीत दिपके ने सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि सरकार उनकी मांगों को पूरा करने के बजाय संगठन की सोशल मीडिया गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित कर रही है. सीजेपी भती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं को लेकर शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का इस्तीफा मांग रही है.दिपके ने कहा कि लोग कहते हैं कि आंदोलन, धरना प्रदर्शन और जुलूस निकालने से क्या होता है? इससे यह सिद्ध होता है कि हम जीवित हैं. सरकार के लिए हम कीडे.मकोडे.हो सकते हैं लेकिन हम जीवित हैं और अपने हक की लडाई लडने के लिए सक्षम हैं.सीजेपी के विरोध प्रदर्शन के मद्देनजर दिल्ली में भारी संख्या में सुरक्षा बल तैनात किया गया था. भीषण गमी होने की वजह से अभिजीत दिपके की तबीयत बिगड.गई. उन्हें तुरंत मंच से पीछे ले जाया गया, लेकिन भीड.ज्यादा होने की वजह से उन्हें पास ही की गाडी में बिठाया गया.तबीयत बिगडने से पहले दिपके ने जंतर-मंतर से हुंकार भरते हुए कहा कि मेरी मां को बहुत डर था कि ये सरकार मुझे जेल में डाल देगी. इस देश की हर मां को ये डर होता है जब उनका बच्चा इस सरकार के खिलाफ आवाज उठाता है. आखिर कब तक हम इस सरकार से डर कर जिएंगे. भीषण गमी में भी बडी संख्या में युवा अभिजीत का समर्थन करने जंतर-मंतर पहुंचे.प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए दिपके ने कहा कि दोस्तों यह एक लंबा संघर्ष है. उन्होंने कहा कि धर्मेंद्र प्रधान के इस्तीफे की मांग शुरू हुए एक महीना हो गया लेकिन ये लोग इतने बेशर्म हैं कि कार्रवाई करने के बजाय अन्य कामों में लगे हुए हैं जैसे हमारे अकाउंट हैक करना और हमारी पोस्ट डिलीट करना. आप हमारी पोस्ट डिलीट कर सकते हैं लेकिन आप हमें इस जगह से मिटा नहीं सकते.दिपके ने विरोध प्रदर्शन में शामिल होने के लिए कार्यकर्ता सोनम वांगचुक का धन्यवाद दिया. उन्होंने कहा कि जब सुबह मैं आईजीआई एयरपोर्ट पर उतरा तो विमान से उतरने से ठीक पहले मुझे लगा कि मैं अपनी आजादी का अंतिम पल जी रहा हूं. दिपके ने कहा, मैं इस उद्देश्य की खातिर अपनी आजादी का बलिदान देने के लिए पूरी तरह तैयार हूं. अभिजीत ने कहा कि कई लोगों ने जेल जाने के डर से समझौता कर लिया है औ खुद को बेच दिया है लेकिन इस देश का युवा और छात्र नहीं बिका. बता दें कि विरोध प्रदर्शन में सैकडों की संख्या में लोग शामिल हुए जिनमें से ज्यादातर छात्र और युवा थे. कई स्कूली छात्र अपने माता-पिता के साथ प्रदर्शन में शामिल होने पहुंचे थे.इस विरोध प्रदर्शन के जरिए सीजेपी राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सीबीएसई), सामान्य विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा (सीयूईटी) और कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) सहित विभिन्न परीक्षाओं और भती परीक्षाओं में कथित अनियमितताओं के लिए जवाबदेही की मांग कर रहा है.

शत गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ का संकल्प सिद्धि को प्राप्त हो रहा है - स्वामी श्रीप्रखर जी महाराज

काशी/जम्मू ६ जून - आज पावन पवित्र पुरुषोत्तम मास में विगत माह ८ मार्च २०२६ से १९ अप्रैल २०२६ तक ब्रह्मातीर्थ, पुष्कर, राजस्थान में आयोजित शत १०० गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ को निर्विघ्नता पूर्वक संपन्न करवाने के पश्चात परम श्रद्धेय महामंडलेश्वर यज्ञसम्राट स्वामी श्रीप्रखर जी महाराज के काशी आगमन पर श्रीकाशीविद्वद्धर्मपरिषद (संस्थापित श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट- न्यास) के गणमान्य विद्वानों द्वारा भव्य दिव्य अभिनंदन पत्र एवं अंग वस्त्र से प्रदान करके वंदन किया गया। अभिनन्दन कार्यक्रम को वैदिक मंगलाचरण से आरम्भ किया गया। इस अवसर पर शत गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ के विषय में विस्तार से जानकारी देते हुए श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास के मुख्य न्यासी व मन्दिर एवं गुरुकुल सेवा योजना प्रमुख जम्मू कश्मीर प्रान्त डॉ. अभिषेक कुमार उपाध्याय ने बताया है कि इस महायज्ञ के संकल्प से सनातन धर्म, संस्कृति एवं परम्परा को संरक्षण करने में अधिक बल मिलेगा। खास करके उन विप्रों में जागृति आई है जो संध्या गायत्री से विमुख हो चुके थे। इस महायज्ञ से न केवल समस्त विश्व में सनातन धर्म के प्रति समर्पण एवं उससे होने वाले परिवर्तन को स्वीकार्यता बढने वाली है। यह महायज्ञ वास्तव में एक दिव्य अलौकिक महाप्रयोग ही है जिसे एक तपस्वी सन्त ने संकल्प से सिद्धि तक पहुंचाया। इस अवसर पर सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के मीमांसा विभाग के निवर्तमान अध्यक्ष एवं श्रीकाशीविद्वद्धर्मपरिषद के कार्यकारी अध्यक्ष तथा महायज्ञ के यजमान प्रो. कमलाकान्त त्रिपाठी जी ने अपने मुखारबिंद से यज्ञ की दिव्य अनुभूति एवं चमत्कारों को भी सभी से साझा किया और बताया कि हमने अपने जीवन में बहुत से यज्ञ देखे है लेकिन ऐसा अलौकिक, अकल्पनीय शत गायत्री पुरश्चरण महाप्रयोग जो पूर्ण रूप से शास्त्रीय विधिविधान से सपन्न हुआ हो ऐसा नहीं देखा था।उसी क्रम में परिषद के अध्यक्ष प्रो. छोटेलाल त्रिपाठी ने बताया कि समाज में यज्ञ करने वाले बाबाओं की कमी नहीं है लेकिन सभी यज्ञ को व्यापार रूप में करने लगे हैं, लेकिन प्रखर जी महाराज आज भी अपनी गुरु परम्परा का रक्षण करते हुए सनातन धर्म एवं वैदिक परम्परा के अंतर्गत विश्व कल्याण हेतु ऐसे दुर्लभ प्रयोग करके समाज का उपकार किया है। इन्हीं सभी महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय तथ्यों पर विचार विमर्श करके हमारी परिषद ने उन्हें सम्मान पत्र एवं अंग वस्त्र देकर सम्मानित किया है।कार्यक्रम में अपना वक्तव्य देते हुए महामंडलेश्वर यज्ञसम्राट स्वामी श्रीप्रखर जी महाराज ने बताया कि हमारे याज्ञिक महाप्रयोग में से यह अभी तक का अद्भुत अलौकिक अकल्पनीय महाप्रयोग था जो पूर्ण रूप से शास्त्रीय विधिविधान से सपन्न हुआ। यज्ञ में कुल २७ करोड. गायत्री मंत्रों का जप एवं हवन त्रिकालिक संध्यानिष्ठ ब्राह्मणों एवं यजमानों के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस महायज्ञ की एक और विशेषता यह भी थी कि आज तक सभी यज्ञों में हमारे धनाढ्य शिष्यों द्वारा धन का सहयोग प्राप्त होता रहा लेकिन यह महायज्ञ केवल ब्राह्मणों के सहयोग से संपन्न होना था और विश्वभर के ब्राह्मणों ने इसमें पूरे तन, मन एवं धन से सहयोग भी किया। समस्त विश्व में सनातन धर्म की स्थापना, शान्ति एवं वैश्विकस्तर पर आतंकवाद से मुक्ति दिलाने हेतु अनुष्ठित यह महायज्ञ की परिकल्पना महर्षि विश्वामित्र जी के द्वारा पूर्व में शत गायत्री पुरश्चरण महायज्ञ के दृष्टांत को ध्यान करके काशी विद्वानों एवं शास्त्रोक्त दृष्टि से सुनिश्चित करके भगवती की कृपा से सम्पन्न कराया गया।

इस महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर बहुत बडे.स्तर पर देश एवं विश्व में परिवर्तन भी आप सभी देख रहे हैं। दृष्टांत के रूप में पश्चिम बंगाल के चुनाव का परिणाम, हार्मोज पर भारत के तेल एवं गैस के जहाज का बिना रोक टोक के आवागमन आदि बहुत से उदाहरण देखने को मिल रहा हैं। इस महायज्ञ के माध्यम से विश्वस्तर पर निरंतर परिवर्तन के लिए ब्राह्मणों की शक्ति का मूल साधन संध्या एवं गायत्री के प्रति निष्ठा एवं नियम को भी बढावा दिया गया।

अपने वक्तव्य के क्रम में सम्पूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी के वेदान्त विभाग के विभागाध्यक्ष एवं श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास के न्यासी प्रो. सुधाकर मिश्र ने बताया कि यज्ञ के इतिहास में एक और आश्चर्य देखने को मिला कि श्री श्री १००८ श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास द्वारा संचालित सनातन वैदिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक समृद्धि उत्थान समिति द्वारा इस महायज्ञ को विश्व रिकॉर्ड दर्ज करवाने के लिए एक प्रयास किया गया जिसके परिणाम स्वरूप १२ विश्व रिकॉर्ड प्राप्त भी हुए जो बहुत ही गौरव का विषय है। इस अवसर परिषद के प्रवक्ता डॉ. विजय कुमार शर्मा ने भी अपने विचार व्यक्त किया। परिषद के मंत्री आचार्य उमंग नाथ शर्मा ने भविष्य में होने वाले इस प्रकार के याज्ञिक प्रयोग में बढ.चढकर के हिस्सा लेने के लिए बोला। संगठन मंत्री डॉ. संजय त्रिपाठी ने आगे से और अधिक प्रयास के लिए धन्यवाद दिया। इसी क्रम में कोषाध्यक्ष डॉ. आशीषमणि त्रिपाठी से उपस्थित सभी सम्मानित विद्वानों का धन्यवाद ज्ञापन किया।अन्त में महाराज जी की शिष्या माता चिदानन्दमयी ने आगंतुक सभी सम्मानित विद्वानों का सम्मान किया। इस अवसर पर पंडित राम प्रिय पाण्डेय, पंडित नरेन्द्र शर्मा जी, आचार्य बृजेश मणि दीक्षित, अभिषेक पाण्डेय, हर्षित शर्मा, डॉ. विश्वेश्वर देव प्रसाद मिश्र सहित गणमान्य विद्वान उपस्थित रहें।

पर्यावरण संरक्षण के नारों के साथ भाजपा का महत्वपूर्ण संदेश हाइलाकांडी में

हाइलाकांडी प्रतिनिधि, ६ जून: भारतीय जनता पाटी (भाजपा) के आयनाखाल-राज्येश्वरपुर मंडल के तत्वावधान में शुक्रवार को वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंडल अध्यक्ष किरण तेली के नेतृत्व तथा मंडल सचिव सत्यजीत सिंह की देखरेख में विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में इस कार्यक्रम को जोरदार ढंग से संचालित किया गया। इसके अंतर्गत मनाछडा ग्रांट, पूर्व कित्तारबंद, राज्येश्वरपुर, अमाला सहित विभिन्न क्षेत्रों के शैक्षणिक संस्थानों तथा ग्रामीण इलाकों में वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाया गया। पर्यावरण संरक्षण का संदेश हर जगह फैलाने के लिए अनेक लोगों ने अपने-अपने घरों में भी पौधे लगाए।अमाला के पूर्व कित्तारबंद एच.एस. स्कूल परिसर में पौधारोपण कर इस कार्यक्रम का शुभारंभ मंडल सचिव सत्यजीत सिंह ने किया। इस अवसर पर सहायक शिक्षक बक्तार उद्दीन बरभुइया, बूथ अध्यक्ष सजल दास, बाबुल डे आदि उपस्थित थे।इसी प्रकार, ४९५ लाला ब्लॉक एल.पी. स्कूल परिसर में सहायक शिक्षक देवज्योति दास, नजरुल हुसैन लस्कर तथा कुंजमणि सिंह की उपस्थिति में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के महत्व एवं उद्देश्य पर सहायक शिक्षक देवज्योति दास ने प्रकाश डाला।साथ ही, पूर्व कित्तारबंद क्षेत्र के आइडियल सेंट्रल स्कूल में भी इसी प्रकार आयोजित वृक्षारोपण

कार्यक्रम को व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ। इस दिन मनाछडा ग्रांट क्षेत्र के वीर टिकेंद्रजीत एल.पी. स्कूल परिसर में विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने ङ्गपेड. लगाओ, जीवन बचाओङ्ग तथा ङ्गएक पेड, एक प्राणङ्ग के नारे लगाए। उन्होंने विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर वैश्विक तापमान वृद्धि को रोकने के लिए सभी से अधिक जागरूक एवं सक्रिय होने का आह्वान किया।इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाध्यापिका निर्मलता सिंह, सहायक शिक्षिका के. नामिना सिंह तथा स्थानीय लोगों में १३१ नंबर बूथ अध्यक्ष सुजीत सिंह, बबिता सिंह, मंडल सचिव सत्यजीत सिंह आदि उपस्थित थे। इस दिन मंडल सचिव सत्यजीत सिंह ने सैकडों पौधे लगाकर उनके संरक्षण पर विशेष जोर दिया। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों में आयोजित अलग-अलग जागरूकता कार्यक्रमों में शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं ने पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए अधिक से अधिक वृक्षारोपण पर बल दिया तथा आने वाली पीढियों के लिए एक हरित और रहने योग्य पृथ्वी के निर्माण हेतु सभी से आगे आने का आह्वान किया।स्थानीय लोगों की स्वैच्छिक एवं उत्साहपूर्ण भागीदारी से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ तथा पूरे क्षेत्र में इसकी व्यापक सराहना और सकारात्मक प्रतिक्रिया देखने को मिली।

प्रकृति की रक्षा, भविष्य की सुरक्षा, विश्व पर्यावरण दिवस पर भव्य आयोजन

ओसमान गनी, बिलासिपाडा- ६ जून:- विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज लक्षीगंज उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण एवं पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का आयोजन धुबरी जिला वन मंडल के तत्वावधान में किया गया, जिसमें सपटग्राम वन कार्यालय तथा शालकोचा क्षेत्रीय वन अधिकारी कार्यालय का सक्रिय सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री बिपुल नाथ ने की। वहीं १० नंबर बिलासिपाडा विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्री जिवेश राय की ओर से उनके प्रतिनिधि श्री जयंत नाथ उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शालकोचा वन क्षेत्र अधिकारी, सपटग्राम वन क्षेत्र अधिकारी, विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाएं, छात्र-छात्राएं एवं स्थानीय नागरिक बडी संख्या में शामिल हुए। कार्यक्रम के दौरान सभी उपस्थित लोगों ने पर्यावरण संरक्षण, वृक्षारोपण और हरियाली बढाने के महत्व पर जोर दिया। विद्यार्थियों और स्थानीय लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपनी जिम्मेदारी और जागरूकता का परिचय दिया। इस अवसर पर यह संदेश दिया गया कि पेड-पौधों का संरक्षण ही स्वस्थ भविष्य की नींव है। सामूहिक प्रयासों से ही एक हरित और संतुलित पर्यावरण का निर्माण संभव है। इसी क्रम में लक्षीगंज ब्राइट क्लब एंड लाइब्रेरी की ओर से भी क्षेत्र के विभिन्न स्थानों पर लगभग सैकडों पौधों का रोपण एवं वितरण किया गया, जिससे पूरे क्षेत्र में हरियाली बढाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया।

लखीमपुर विश्व पर्यावरण दिवस पर सर्वेश्वर बरुवा हिंदी विद्यालय में वृक्षारोपण

लखीमपुर, ५ जून :विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर आज सर्वेश्वर बरुवा हिंदी विद्यालय, खेलमाटी छठ घाट परिसर में विद्यालय के प्रधानाध्यापक शमशेर सिंह और एस एस आर इनोवेटिव फाउंडेशन के सहयोग से विद्यालय परिषर में धूमधाम से वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत विद्यालय के प्रधानाध्यापक शमशेर सिंह और एस.एस.आर. इनोवेटिव फाउंडेशन के पदाधिकारियों द्वारा शगुन पीपल और फलदार पौधे लगाकर की गई। इसके बाद शिक्षकों और छात्रों ने उत्साह के साथ पौधरोपण में भाग लिया। कुल मिलाकर ३५ से अधिक पौधे विद्यालय परिसर और छठ घाट के आसपास लगाए गए।प्रधानाध्यापक शमशेर सिंह ने कहा कि पर्यावरण की रक्षा हमारी जिम्मेदारी है।अगर आज हम पेड.लगाएंगे, तो कल की पीढी को शुद्ध हवा और हरियाली मिलेगी। खेल माटी छठ घाट को हरा-भरा बनाना इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। एस.एस.आर. इनोवेटिव फाउंडेशन के सहयोग से यह कार्यक्रम और सफल हुआ।छात्रों ने एक पेड, एक जीवन' और पेड.लगाओ,जीवन बचाओ' के नारे लगाए। एस.एस.आर.इनोवेटिव फाउंडेशन के प्रतिनिधियों ने बच्चों को पौधों की देखभाल के तरीके भी समझाए।

कार्यक्रम के अंत में सभी ने संकल्प लिया कि वे न सिर्फ पौधे लगाएंगे, बल्कि उनकी नियमित देखभाल भी करेंगे।विद्यालय से जुड़े अभिभावकों और समिति के सदस्यों ने भी इस पहल की सराहना की और कहा कि छठ घाट अब और सुंदर दिखेगा।

टिपुक चाय बगान में विभिन्न मांगों को लेकर श्रमिकों का विरोध प्रदर्शन

दुमदुमा, प्रेरणा भारती ६ जून: टिपुक चाय बगान में आज विभिन्न मांगों को लेकर श्रमिकों एवं संगठनों ने विरोध प्रदर्शन किया। प्रदर्शन का नेतृत्व असम चाय जनजाति छात्र संस्था तथा असम चाय मजदूर संघ ने संयुक्त रूप से किया।प्रदर्शनकारियों ने चाय बागान श्रमिकों को ग्रेच्युटी राशि का समय पर भुगतान, बागान में एम्बुलेंस की समुचित व्यवस्था, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार तथा श्रमिकों से जुडे.अन्य बुनियादी मुद्दों के समाधान की मांग उठाई।प्रदर्शन के दौरान संगठनों के प्रतिनिधियों ने कहा कि श्रमिक लंबे समय से विभिन्न समस्याओं का सामना कर रहे हैं, लेकिन उनकी मांगों पर उचित ध्यान नहीं दिया जा रहा है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही समस्याओं का समाधान नहीं किया गया तो भविष्य में आंदोलन को और तेज किया जाएगा।प्रदर्शन में बडी संख्या में श्रमिकों ने भाग लेकर अपनी मांगों के समर्थन में नारेबाजी की तथा बागान प्रबंधन से शीघ्र आवश्यक कदम उठाने की अपील की।स्थानीय श्रमिकों के अनुसार, प्रदर्शन शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुआ। श्रमिक संगठनों ने उम्मीद जताई कि प्रबंधन एवं संबंधित विभाग उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार करेंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस: बोडोलैंड में उत्साह के साथ मनाया गया पर्यावरण संरक्षण का संकल्प

कोकराझार/ चिरांग, ०६ जून २०२६: आज विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बोडोलैंड टेरिटोरियल काउंसिल (इढउ) क्षेत्र में प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लिया गया। इस अवसर पर १३५ ईटीएफ (TA), बीटीसी प्रशासन, आईओसीएल (खजउङ) बोंगाईगांव और स्थानीय स्कूलों ने मिलकर पर्यावरण की सुरक्षा के लिए साझा प्रतिबद्धता दोहराई। ?दिन की शुरुआत सुबह ०७:०० बजे बिश्मुरी और आसपास के क्षेत्रों में एक उत्साही 'संयुक्त वृक्षारोपण अभियान' के साथ हुई। इस कार्यक्रम में लगभग २०० लोगों ने भाग लिया और धरती को हरा-भरा बनाने के लिए ५०० पौधे रोपे। इसके अलावा, सतत जीवन शैली (sustainable living) और अपशिष्ट प्रबंधन पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन भी किया गया, जिसका उद्देश्य स्थानीय लोगों को पर्यावरण के प्रति जागरूक करना था।वहीं, बोडोलैंड टेरिटोरियल काउंसिल द्वारा आयोजित एक अन्य मुख्य कार्यक्रम में, १३५ ईटीएफ ने चिरांग वन प्रभाग के तहत रनिखाता वन सर्कल में सक्रिय रूप से भाग लिया। यह मेगा कार्यक्रम बीटीसी के प्रमुख श्री हाग्रामा मोहिलारी के नेतृत्व में आयोजित किया गया।?इस अवसर पर बीटीसी के कई अधिकारी, अतिरिक्त पीसीसीएफ (Addl PCCF), डीएफओ के साथ-साथ स्थानीय बोडो और वनवासी आदिवासी समुदायों के प्रतिनिधि भी मौजूद रहे। कार्यक्रम में लगभग ५,००० लोग शामिल हुए। प्रकृति के संरक्षण का संदेश फैलाते हुए १३५ ईटीएफ और एसएफडी (ड्रऋ्रे) द्वारा प्रतिभागियों के बीच १०,००० पौधों का वितरण किया गया। इस आयोजन ने न केवल पर्यावरण संरक्षण के महत्व को रेखांकित किया, बल्कि सुरक्षा बलों, सरकारी संस्थाओं और आम जनता के बीच एकता का भी अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया।

भारतीय इतिहास बोध और उसे बदलने के प्रयास

हृदयनारायण दीक्षित

अभी तक भारतीय इतिहास बोध को अपनी मंशा के अनुसार बदलने की कोशिशें चल रही थीं, अब देवी-देवताओं पर भी हमले हो रहे हैं। भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय ने मोहनजोदडो से प्राप्त ४३०० वर्ष पुरानी पशुपति मुहर और मूलबंधासन योग मुद्रा में बैठी आकृति को शिव का रूप बताते हुए इसे भारत की सांस्कृतिक धरोहर का जीवंत प्रतीक बताया है। एक इतिहासकार आद्रे ने इस दावे को खारिज कर दिया है और कहा है कि यह आकृति शिव की नहीं है। यह पश्चिमी संस्कृति और यूरेशियाई पशुओं के देवता से प्रभावित है। इसके पहले भी ऐसे लोग सिंधु सभ्यता पर बाहरी प्रभावों का जिक्र करते रहे हैं। दरअसल, १९२२ में मोहनजोदडो में खुदाई के दौरान एएसआई के महानिदेशक मार्शल ने इसे शिव का रूप बताया था। उन्होंने अपनी किताब में भी शिव का प्रारंभिक रूप बताया है। लेखक अमीश ने मुहर पर अंकित जानवरों को विदेशी नहीं बताया। वे भारत में पाए जाते हैं।दक्षिणी पश्चिमी ईरान में भी यह पशु प्राकृतिक रूप में नहीं पाए जाते। डॉ. एल. वेमसानी का तर्क ध्यान देने योग्य है। पशुपति मुहर में आकृति योग मुद्रा में है। पश्चिमी इतिहासकारों द्वारा बहुत पहले से ही भारतीय इतिहास को विकृत किया जाता रहा है। वामपंथी इतिहासकारों ने हम भारत के निवासियों को बाहर से आया हमलावर बताया था लेकिन यह झूठ पकड़ा गया। वे सिद्ध करना चाहते थे कि भारतीय ज्ञान, देवता और सभ्यता उधार के हैं। जबकि भारत में ऋग्वैदिक काल और उसके बहुत पहले से सांस्कृतिक निरंतरता है। आर्य आक्रमण का झूठ लोग जान गए हैं। शिव भारत के देवता ही हैं। यजुर्वेद का एक पूरा अध्याय शिव पर है। अब आर्य आक्रमण की बात करने वाले खिसियाए हुए हैं। संस्कृति मंत्रालय ने एक ट्वीट में लिखा है कि, ङ्गभारत के अखंड और निरंतर चली आ रही सभ्यता की यह सबसे शक्तिशाली प्रतीकों में से एक है। अविभाजित भारत के मोहनजोदडो में मिली यह लगभग ४३०० साल पुरानी मुहर एक योग मुद्रा में बैठे व्यक्ति को दिखाती है, जिसे व्यापक रूप से शिव पशुपति माना जाता है। यह आकृति मूलबंधासन में बैठी दिखाई देती है और उसके चारों ओर कई जानवर बने हुए हैं।ङ्ग

इतिहास की वैज्ञानिक समझ से वर्तमान को बदलना मार्क्सवादी लक्ष्य था, उन्होंने वर्तमान की निजी जरूरतों के मुताबिक इतिहास बदला। यही काम अंग्रेजों ने किया। उन्होंने अंग्रेजी राज को जायज ठहराने के लिए भारत का नया इतिहास लिखाया। इतिहास से सीखकर वर्तमान बदलना अच्छा विचार है लेकिन अपनी आवश्यकतानुसार इतिहास बदलना महापाप है। इतिहास ने उन्हें दंडित किया। मार्क्सवादी इतिहास शेष रहे, लेकिन दोनों के विषाणु भारत में आज भी मौजूद हैं। भारत पर अंग्रेजी शासन के लिए भाषा, इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान जरूरी था। बेशक पश्चिमी विद्वानों ने मेहनत की। पश्चिम की संस्कृति का मूलाधार यूनान था लेकिन विलियम जोंस ने थर्ड एनुअल डिसकोर्स एशियाटिक रिसर्चेज में कहा,

ङ्गयूनानी दार्शनिक पाइथागोरस और प्लेटो के उत्कृष्ट अनुभव प्राचीन भारतीय ऋषियों के अनुरूप थे। हिन्दू कला व शौर्य में विलक्षण थे। प्रशासन में सुयोग्य, विधि निर्माण में बुद्धिमान और ज्ञान में प्रवीण थे। डेविड कोफ जैसे विद्वानों को भारतीय समाज वैदिक आदर्शों से भटका हुआ लगा। वैदिक काल में मूर्ति पूजा नहीं थी।ङ्ग

यह अध्ययन ईसाई मिशनरियों के लिए खतरनाक था। उनकी नजर में शासन के लिए अंग्रेजी और परमात्मा के मार्ग के लिए प्रभु ईशु ही विकल्प थे। इस चुनौती से जूझे एक अंग्रेज जेएस मिल। जेएस मिल ने 'हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया' लिखकर भारत के सनातन ज्ञान पर हल्ला बोला। इतिहास में उन्हें 'उपयोगितावादी चिंतक' की सही संज्ञा मिली।कांग्रेसजनों और मार्क्सवादियों का उपयोगितावाद विचारणीय है। बच्चे पढ़ें कि आर्यों ने ईरान के रास्ते आकर हड़प्पा सभ्यता नष्ट की। किले तोडे। वे चरवाहे और लुटेरे थे। मोहन जोदड़ो और हड़प्पावासी सभ्य थे। हड़प्पा सभ्यता का पतन दरअसल १७५० ई. पूर्व के आसपास हुआ। कालीबंगा की खुदाई से मिले तथ्यों में यही समय सरस्वती के सूखने का भी है। ऋग्वेद में सरस्वती भरी पूरी वेगवती आराध्य नदी है। ऋग्वेद के बाद रचे गए यजुर्वेद में भी सरस्वती पूरे यौवन और उफान पर है। ऋग्वेद, यजुर्वेद के बाद सरस्वती सूखी और हड़प्पा सभ्यता का ह्रास हुआ। सरस्वती समय विभाजक रेखा है। उसे पार करके ही आर्य आक्रमण के झूठ का प्रचार संभव है। ऋग्वेद हड़प्पा सभ्यता से पुराना है। मिस्त्र और सुमेर की सभ्यता से भी प्राचीन। दयाराम साहनी व आर. के. बनर्जी ने हडप्पा और मोहनजोदड़ो नामक दो प्राचीन नगरों की खोज (१९२१-२२) की। हड़प्पा रावी तट पर था, मोहनजोदड़ो सिंध पर।

राम प्रसाद चंद ने आर्यों को हड़प्पा सभ्यता के नाश का अभियुक्त ठहराया। चंद ने ऋग्वेद का सहारा लिया। उन्होंने 'पणि' को इन नगरों का मूल निवासी बताया। इंद्र को पुरंहा-पुरंदर ध्वंसक बताया। चंद के अनुसार इंद्र ने

डेविड कोफ जैसे विद्वानों को भारतीय समाज वैदिक आदर्शों से भटका हुआ लगा। वैदिक काल में मूर्ति पूजा नहीं थी। यह अध्ययन ईसाई मिशनरियों के लिए खतरनाक था। उनकी नजर में शासन के लिए अंग्रेजी और

आर्य दिवोदास के लिए दास शंबर के पुर जीते। शंबर 'दास' था। पहाड़ पर रहता था, जबकि सच यह है कि पहाड़ पर न मोहन जोदडो था और न ही हड़प्पा। फिर ऋग्वेद (९.६१.२) में दिवोदास के शत्रुओं की सूची में शंबर के साथ यदु और तुर्वस जैसे आर्य भी हैं यानी कथित आर्य हमले में दोनों तरफ आर्य थे। सवाल पेंचीदे हैं। उन्होंने ऋग्वेद को गवाह बनाया है यानी ऋग्वेद हड़प्पा सभ्यता के नाश (सरस्वती के सूख जाने) के बाद रचा गया। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पुरातत्वविद् रेनफ्रीव ने लिखा-ङ्गआर्य आक्रमण का समय निर्धारण निःसंदेह डांवाडोल है।ङ्ग ऋग्वेद १०-१५ हजार वर्ष से ज्यादा पुराना है। पश्चिम के विद्वान भी इसे २५००-३००० वर्ष पुराना मानते हैं। सिंधु क्षेत्र में सिंधु लिपि थी। इसी से ब्राह्मी आई। लैंगडन के अनुसार सिंधु की चित्र लिपि का समय २८०० ई.पू. है। उन्होंने लिखा-ङ्गइतिहास जितना मानता है, भारत में आर्य उससे कहीं अधिक प्राचीन हैं।ङ्ग फिलाडेल्फिया के पुरातत्वविद डेल्स १९६० के दशक में पाकिस्तान में उत्खनन कार्य से जुड़े। उन्होंने 'द मिथिकल मैस्केयर ऑफ मोहनजोदड़ो' (मोहनजोदड़ो के हत्याकांड की कपोलकथा) में व्हीलर, चंद, मार्शल, मैकाय आदि सिद्धांतकारों की बातें काट दीं। रेनफ्रीव ने आर्यों को भारत का मूल निवासी माना, आर्य आक्रमण सिद्धांत को गलत बताया। उन्होंने लिखा-ङ्गऋग्वेद के दर्जन भर प्रसंगों में से एक में भी आक्रमण का संकेत नहीं मिलता। प्रख्यात मार्क्सवादी विचारक डॉ. रामविलास शर्मा ने आर्य आक्रमण को भाषाविज्ञान की कल्पना बताते हुए लिखा-ङ्गसघोष महाप्राण ध्वनियों वाले भारतीय शब्दों के ईरानी, यूरोपियन प्रतिरूपों में सघोषता और महाप्राणता का संयोग नहीं होता। यह विशेषता केवल भारतीय आर्य भाषाओं की है। यही एक तथ्य आर्य आक्रमण सिद्धांत को ध्वस्त करने के लिए काफी है।ङ्ग डॉ. अम्बेडकर ने ऋग्वेद के छठे, सातवें, आठवें और नौवें मंडल के सूक्तों के हवाले से लिखा-ङ्गलेखकों ने आर्य नस्ल का जो सिद्धांत बनाया वह वैज्ञानिक अनुसंधान का उल्टा है। भारत ही आर्यों का मूल निवास था।ङ्ग (लेखक, उत्तर प्रदेश विधानसभा के पूर्व अध्यक्ष हैं।)

महिला

हेयर स्पा बालों में डाले जान

प्रदूषण, धूल-मिट्टी और तनाव बालों की जडों को नुकसान पहुंचाते हैं और बाल बेजान होने लगते हैं। ऐसे में जब बालों की देखभाल ठीक से नहीं होती तो उनसे संबंधित तमाम समस्याएं पैदा हो जाती हैं मसलन डैंड्रफ, बालों का गिरना, बेजान और दोमुंहे होना। जिस प्रकार त्वचा को पोषण देने के लिए क्लींजिंग, टोनिंग, मॉयस्चराइजिंग और कंडिशनिंग की जरूरत होती है उसी प्रकार बालों को भी विशेष देखभाल की जरूरत होती है। दूसरी अहम बात है बालों के लिए उपयोगी और उचित हेयर केयर प्रोडक्ट का इस्तेमाल। अलग-अलग प्रकार के बालों के लिए अलग तरह के हेयर प्रोडक्ट्स की जरूरत होती है। गलत प्रोडक्ट के इस्तेमाल से सिर की त्वचा और बालों को हानि पहुंच सकती है।

इसके अलावा बालों को नियमित रूप से साफ करना भी जरूरी है ताकि सिर की त्वचा पर जमा अतिरिक्त तेल और फॉलिकल्स साफ हो जाएं। मृत कोश भी निकल जाएं और बालों को विकसित होने के लिए जरूरी पोषण मिल सके। बालों से जुडी समस्याओं को दूर करने के लिए हेयर स्पा एक बेहतर और आधुनिक उपाय है।

हेयर स्पा

इसमें बालों से जुडी विभिन्न समस्याएं जैसे तैलीय बाल, डैंड्रफ, फंगल इन्फेक्शन, बालों का झडना, डीप स्टैंड कंडिशनिंग ट्रीटमेंट आदि का उपचार किया जाता है। बालों पर आपके खानपान का बहुत प्रभाव पडता है। हेयर स्पा ट्रीटमेंट के दौरान आपके दैनिक आहार पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

स्वस्थ बालों के लिए विटमिन ए, बी और सी के साथ कैल्शियम और कार्बोहाइड्रेट की विशेष जरूरत होती है और यह सभी आपके आहार में शामिल होना जरूरी है। हेयर स्पा ट्रीटमेंट बालों की किस्म को ध्यान में रखकर किया जाता है। किस तरह के बाल और किस समस्या को कैसे ट्रीटमेंट की जरूरत है यह एक्सपर्ट आपको पहले ही बता देते हैं। इसमें एक इलेक्ट्रॉनिक मशीन स्कैल्प एनेलाइजर के जरिये सिर की त्वचा की जांच होती है, जिससे यह पता चल जाता है कि बालों की क्या समस्या है और सिर की त्वचा के पोर खुले हैं या बंद। साथ ही आपको कैसे ट्रीटमेंट की जरूरत है। इसके बाद डीप क्लींजिंग, हेयर पैक, हेयर ऑयल, सक्शन मशीन का इस्तेमाल किया जाता है। स्कैल्प एनेलाइजर की सहायता से यह जाना जाता है कि अगर फंगल इन्फेक्शन है तो वह किस तरफ ज्यादा है और डैंड्रफ रूखी है या तैलीय। कहीं आपको ज्यादा तनाव या सिरदर्द तो नहीं होता है, इन सभी बातों की सही-सही जानकारी एक्सपर्ट को देनी जरूरी होती है ताकि ट्रीटमेंट का पूरा लाभ मिल सके।

तरह-तरह के स्पा

बालों से जुडी हर प्रकार की समस्या को दूर करके उन्हें स्वस्थ और उनके टेक्सचर को मजबूत बनाती हैं। हर स्पा में अलग-अलग मसाज दी जाती है।

मॉयस्चराइजर बूस्ट

प्रदूषित वातावरण धूल-मिट्टी, खराब मौसम, ब्लो ड्रायर्स और स्ट्रेटनिंग प्रोडक्टस के इस्तेमाल से होने वाले नुकसान को दूर करने के लिए मॉयस्चर बूस्ट हेयर थेरेपी का प्रयोग किया जाता है। इस थेरेपी में मिल्क प्रोटीन और पैंथेनॉल कॉम्प्लेक्स से युक्त प्रोडक्ट का प्रयोग किया जाता है, जो सिर की त्वचा को प्राकृतिक नमी भी प्रदान करता है और नमी के संतुलन को बनाने में मदद करता है।

एक्स्ट्रा केयर

को स्टाइल में रखना आज की जरूरत है। लेकिन स्टाइल के लिए बालों को तमाम रसायनों और तकनीकी प्रक्रियाओं से गुजरना पडता है, जो उन्हें कमजोर बना देते हैं। एक्स्ट्रा केयर हेयर स्पा ऐसे बेजान और कमजोर बालों को पोषण देने के लिए किया जाता है। यह प्रोटीन और सिलिकॉन ऑयल के नए मिश्रण से तैयार किया जाता है, जो बालों को मजबूत और चमकदार बनाने में मदद करता है।

स्मूद एंड सॉफ्ट

यह स्पा सिर की त्वचा को पोषण देकर उसे नर्म मुलायम बनाने के साथ ही बेजान बालों में जान डालता है। उनकी उलझन को आसानी से दूर करता है। यह बालों को मजबूत बनाता है।

डैंड्रफ कंट्रोल

अपने नाम के अनुसार यह स्पा डैंड्रफ की समस्या से निजात दिलाने में मदद करता है। इस थेरिपी में ऑक्टीपिरॉक्स मौजूद है जो रूसी से मुकाबला करने के लिए सबसे असरदायक होता है। इससे सिर की त्वचा लंबे समय तक स्वस्थ और साफ रहती है।

ग्रोथ एनहैंसिंग

यह स्पा बालों की जडों के मेटाबॉलिज्म को ऊर्जा प्रदान करता है और उसे संचालित करता है। जिससे बालों की ग्रोथ अच्छी होती है। साथ ही बालों के असमय सफेद होने की समस्या से भी बचाता है।

इस मौसम में मन को भाएं कॉटन साड़ियां

साड़ियां परंपरागत भारतीय परिधान है जो महिलाओं को सौम्य, सुंदर और शालीन छवि प्रदान करता है। बात गर्मियों की हो तो इस मौसम में कॉटन साड़ियों से बेहतर विकल्प नहीं। मार्केट में इन दिनों कॉटन साड़ियों की बेहतरीन वैरायटी मौजूद हैं

समर सीजन में हर महिला की यह चाहत होती है कि वह कुछ ऐसा पहनें जो उसे सौम्य और सुंदर दिखाने के साथ-साथ उसके लिए आरामदायक भी हो। इसलिए इस सीजन में कॉटन साड़ियों से बेस्ट कोई दूसरा ऑप्शन हो ही नहीं सकता। खासतौर से शादीशुदा महिलाएं, जो अमूमन साड़ियां पहनना ही पसं द करती हैं। ऐसे में आप एक बार कॉटन साड़ियों को जरूर ट्राई करें। इन दिनों मार्केट में काफी कलरफुल, कई वैरायटीज और प्रिंट्स में कॉटन साड़ियां मौजूद हैं। इन्हें पहनकर आप सिर्फ भीतरी ही नहीं बाहरी तौर पर भी कूल लगेंगी। फैशन डिजाइनर रीमा विस्तार से बता रही हैं कि कौन-सी साड़ियां इन दिनों ट्रेंड में बनी हुई हैं-

ऑरगेंडी साड़ियां

इस सीजन में आप एक बार प्लेन ऑरगेंडी साड़ियां पहन कर जरूर देखें। लाइट मैटीरियल से बनी होने के कारण ये समर सीजन के लिए एकदम परफेक्ट हैं। वैसे ऑरगेंडी में प्लेन साड़ियों के लिए भी ढेरों ऑप्शन मौजूद हैं। यह कई सारे कलर और फैब्रिक में मार्केट में उपलब्ध है। डिजाइनर ऑरगेंडी साड़ी में बॉर्डर वाली साड़ी ट्राई करें, यह आपके लुक को सोबर और एलीगेंट बनाती है।

प्रिंटेड साड़ियां

डेली वियर और ऑफिस वियर के लिए प्रिं टेड क ॉ ट न साड़ियां भी काफी चलन में हैं। प्रिंटेड साड़ियों में आजकल कई वैरायटी मिलती है। खासकर दो शेड की कॉटन साड़ियां बेहतरीन लुक देती हैं। इसके अलावा प्लेन साड़ी में प्रिंटेड पल्ला भी आपको ग्रेसफुल लुक देता है।

तांत साड़ियां

पश्चिम बंगाल की तांत साड़ियां अपने ग्रेसफुल लुक, चौड़े और अट्रैक्टिव बॉर्डर, बूटीदार डिजाइंस की वजह से देशिवदेश में काफी पॉपुलर है। वैसे तो यह हर सीजन में काफी डिमांड में रहती हैं लेकिन गर्मियों के मौसम में इनकी लोकप्रियता काफी बढ़ जाती है। स्कूल- कॉलेज की टीचर्स या प्रोफेसर हों या फिर वर्किंग वुमेन, सभी की यह पहली पसंद बनती जा रही हैं। प्योर कॉटन के अलावा पार्टीवियर में भी तांत सिल्क की साड़ियां बेहद चलन में हैं।

चंदेरी कॉटन साड़ियां

चंदेरी कॉटन साड़ियां अब सिर्फ आम महिलाओं की पसंद बनकर ही नहीं रह गयी हैं, बल्कि बॉलीवुड स्टार्स भी इसका प्रयोग अपनी फिल्मों में जमकर कर रहे हैं। वैसे चंदेरी कॉटन और सिल्क दोनों ही फैब्रिक में काफी पसंद की जाती है। पारंपरिक चंदेरी डिजाइन में नाचता हुआ मोर, झाड़ पल्लू, चंदेरी बूटी, पटैला बूटी से सजी साड़ियां मार्केट में उपलब्ध हैं। साथ ही साथ आपको मार्केट में चंदेरी कॉटन और सिल्क पर बाघ, बटिक, दाबु और डिस्चार्ज प्रिंट की साड़ियां भी आसानी से मिल जाएंगी।

खासतौर से शादीशुदा महिलाएं, जो अमूमन साड़ियां पहनना ही पसंद करती हैं। ऐसे में आप एक बार कॉटन साड़ियों को जरूर ट्राई करें।

बनें आदर्श माता-पिता

आधुनिक दौर में बच्चों को संभालना और उनका सही मार्गदर्शन करना काफी मुश्किल होता जा रहा है। पैरेंट्स के लिए यह चैलेंज बन गया है। यदि बच्चों को समझदारी से हैंडल न किया जाए तो उनके दिलोदिमाग पर बुरा असर हो सकता है। यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे अनुशासित, जिम्मेदार और सबकी आंखों का तारा बनें और आप आदर्श माता-पिता कहलाएं तो आजमाएं ये टिप्स

- **बच्चों** की सभी बातों में मीन-मेख न निकालें और न ही बात-बात में उन्हें रोकें-टोकें। बच्चों को प्यार से समझाएं। उसके दोस्तों के सामने उसे डांटें नहीं, उसे इस बात का बुरा लगेगा।
- जब आपका बच्चा कोई अच्छा काम करे तो उसकी प्रशंसा करना न भूलें। माता-पिता की प्रशंसा बच्चों के अंदर आत्मविास जगाती है और भविष्य में वे और भी अच्छा परफॉर्म करते हैं।
- बच्चों को बचपन से ही 'सॉरी' और 'थैंक्यू' जैसे शब्दों का प्रयोग करना सिखाएं। घर आए मेहमानों और बड़े-बुजुर्गो का सम्मान करना सिखाएं। अच्छे आचरण के बीज बचपन में ही बोए जा सकते हैं।
- कभी-कभी बच्चों की जिद भी मान लें। जिद करना तो बाल सुलभ स्वभाव है । थोड़ी समझदारी से उसके इस स्वभाव को हैंडल करें तो उसकी यह आदत धीरे-धीरे स्वत: ही कम हो जाएगी।
- आमतौर पर पैरेंट्स बोलते हैं और बच्चों को उनकी बात सुननी पड़ती है। बच्चों को भी बोलने का मौका दें, उनकी बातों को ध्यान से सुनें। बाल मनोवैज्ञानिकों के अनुसार, यदि बच्चों को अपनी बात कहने का मौका दिया जाए तो उन्हें दिशा देना आसान हो जाता है।
- बच्चों से फ्रेंडली रहें लेकिन एक सीमा तक ही। अपना पैरेंटल अधिकार बनाए रखें और अनु शासन में रखकर बच्चों को जरूरी दिशा-निर्देश दें।
- दूसरे बच्चों से अपने बच्चों की तुलना न करें। इससे बच्चों में सुपीरियोरिटी कॉम्प्लेक्स या हीन भावना उत्पन्न हो सकती है। हर पैरेंटिंग बच्चा दूसरे से अलग होता है। उसके अच्छे गुणों को उभारना हर माता-पिता की जिम्मेदारी होती है।
- बच्चों में शुरू से ही शेयरिंग की आदत डालें। उसे अपने खिलौने या चॉकलेट अपने दोस्तों या भाई-बहनों के साथ मिल-बांटकर खेलना खाना सिखाएं। इस तरह वे बचपन से ही सोशल होना सीखेंगे।
- अपने बच्चों में ईर्ष्या-द्वेष की भावना न पनपने दें, न ही ओवर रिएक्ट करें।
- बच्चे अनुशासन घर से ही सीखते हैं। अत: बच्चों को जिम्मेदार और अनुशासित बनाने से पहले स्वयं अनुशासित व जिम्मेदार बनें।
- बच्चों को अपने पारिवारिक या आपसी झगड़ों का हिस्सा न बनाएं और न ही उन्हें मोहरे के तौर पर इस्तेमाल करें।
- बच्चों से बहुत अधिक अपेक्षाएं न करें। अक्सर पैरेंट्स अपनी अधूरी महत्वाकां क्षा बच्चों के जरिए पूरी करना चाहते हैं। इसके लिए वे बच्चों पर दबाव डालते हैं, जो सही नहीं है।
- बच्चों को अनुशासन सिखाएं, लेकिन उन्हें अनुशासन के दायरे में बांधकर न रखें। अनुशासन के दायरे में बां धकर रखने से बच्चों का समुचित विकास नहीं हो पाता।
- बच्चों के सामने गाली-गलौज या अपशब्दों का इस्तेमाल न करें और न ही बच्चों के सामने अनावश्यक झूठ बोलें क्योंकि जैसा आप बोलेंगे, उसका प्रभाव निश्चित रूप से आपके बच्चों पर पड़ेगा।
- बच्चों के लिए भी वक्त निकालें। बच्चों की दिनचर्या में शामिल होना भी बच्चों के संपूर्ण विकास का हिस्सा है।
- कोई भी फंक्शन या फैमिली गेट-टुगेदर हो तो बच्चों को साथ जरूर ले जाएं। इससे बच्चे सोशल बनते हैं। हमारी परंपराओं से बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।
- बच्चों के सवालों या उसकी किसी जिज्ञासा पर उसे डांटकर चुप न कराएं बल्कि समझदारीपूर्वक उसके सवालों का जवाब दें और उसकी जिज्ञासाओं को शांत करें। इससे बच्चा भ्रमित नहीं होगा।
- उन्हें इतनी छूट भी न दें कि वे लापरवाह बन जाएं। बच्चों को कोई भी स्वतंत्रता समय से पहले और जरूरत से ज्यादा न दें, ताकि वे चीजों व भावनाओं की कद्र करना जानें।
- बच्चों को आत्मनिर्भर बनना सिखाएं। उसके छोटे-छोटे काम उसे स्वयं करने दें। ऐसा करने से वे बचपन से ही जिम्मेदार और आत्मनिर्भर बनेगा।
- बच्चों की प्रथम पाठशाला उसका घर होता है। अत: अपने बच्चों के सामने सभ्यता से बोलें और अच्छा आचरण करें क्योंकि जैसा आप बोलेंगे और जैसा आचरण आप करेंगे, वैसा ही आपका बच्चा सीखेगा।

इन सब बातों का ध्यान रखकर और उपरोक्त बातों को अपनी और अपने बच्चों की दिनचर्या में शामिल करके आप भी आदर्श माता पिता बन सकते हैं।

पंचतत्वों पर आधारित खानपान रखे स्वस्थ

पंचतत्व अर्थात् पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। हमें अपने खानपान में प्रतिदिन इन पांचों तत्वों का भी सेवन करना चाहिए। ऐसा होने पर हम अधिकाधिक स्वस्थ व सक्रिय रह सकेंगे।

वायु - सांस के माध्यम से हर प्राणी वायु ग्रहण करता है। बाकी तत्वों को कुछ समय या कुछ दिन के लिए छोड़ा जा सकता है, पर वायु को नहीं। जो लोग अनशन या उपवास करते हैं, वे भी अन्न, फल, सब्जी या जल आदि छोड़ देते हैं, पर वायुसेवन नहीं। एक समय आहार लेने वाले संन्यासी भी वायुसेवन तो प्रतिक्षण करते ही हैं। अर्थात् पंचतत्व में से वायु प्राणियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण आवश्यकता है।

यह वायु व्यक्ति को शुद्ध एवं प्राकृतिक रूप में पर्याप्त मात्रा में मिले, यह भी आवश्यक है। जो लोग बड़े शहरों में या उद्योगों के पास रहते हैं, उन्हें शुद्ध वायु नहीं मिल पाती। इसीलिए इन दिनों नये-नये रोग लगातार बढ़ रहे हैं। अब तो बड़े नगरों में शुद्ध ऑक्सीजन के बूथ खुलने लगे हैं, जहां पैसे देकर व्यक्ति दस-पन्द्रह मिनट शुद्ध प्राणवायु ले सकता है। जैसे आजकल हर व्यक्ति अपने साथ साफ पानी की बोतल रखने लगा है, लगता है कुछ समय बाद लोग प्राणवायु के छोटे सिलेंडर भी साथ लेकर चला करेंगे। ताजी और शुद्ध प्राणवायु प्राप्त करने की निःशुल्क विधि प्रातःकालीन भ्रमण है। सूर्योदय होने पर पेड़ों द्वारा रात में उत्सर्जित कार्बन डायआक्साइड वायुमंडल में चली जाती है। ऐसे शीतल और शांत वातावरण में अकेले या सपरिवार घूमना शुद्ध वायु ग्रहण करने का सबसे सरल उपाय है।

केवल घूमना ही नहीं, तो इस समय कुछ आसन, व्यायाम और प्राणायाम करना भी बहुत लाभदायक है। सुबह की ही तरह शाम का भ्रमण भी बहुत लाभकारी है। इन दोनों समय पर दिन और रात का मिलन होता है। इसके सदुपयोग से हम अपने शरीर तथा मन को स्वस्थ रख सकते हैं। बच्चों और युवाओं को तो शाम के समय पढ़ने की बजाय खेलना ही चाहिए।

चाहे कोई स्वयं वाहन न चलाता हो, पर प्रदूषित वायु सेवन करना तो उसकी भी मजबूरी ही है। इसलिए जहां सार्वजनिक यातायात व्यवस्था का बहुत अच्छा होना जरूरी है, वहां दस-बीस कदम जाने के लिए वाहन निकालने की आदत भी छोड़नी होगी। पेड़ों को कटने से बचाकर तथा परिवार के हर सदस्य के नाम पर एक पेड़ लगाकर हम प्रदूषण नियंत्रण में सहयोग दे सकते हैं।

जल- वायु की ही तरह जल भी व्यक्ति की प्राथमिक आवश्यकता है। किसी समय बहता पानी निर्मला कहकर नदियों का जल सर्वाधिक शुद्ध माना जाता था, पर अब नगरों के सीवर, कारखानों के अपशिष्ट, समय-समय उसमें विसर्जित की जाने वाली रासायनिक रंगों से पुती मूर्तियों तथा अन्य कूड़े करकट के कारण नदियां आचमन योग्य भी नहीं रह गयी हैं। अब तो सब जगह कुछ घंटों के लिए सरकारी पानी मिलता है। वह कितना शुद्ध होता है, कहना कठिन है। पानी साफ और भरपूर मिले, इसके लिए निजी बोरिंग कराने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। जिनके लिए यह संभव नहीं है, उन्होंने भी घरों में फिल्टर लगा लिये हैं। इनसे एक लीटर पानी साफ होने के चक्कर में चार लीटर पानी नाली में बह जाता है। शहरीकरण का अर्थ ही है, बिजली और पानी का अत्यधिक प्रयोग। अतः जल का स्तर लगातार नीचे जा रहा है।

विद्वानों का मत है कि अगला विश्व युद्ध जल के कारण होगा। इसका सत्य तो भविष्य बताएगा पर नलों पर हर दिन डिब्बे और कनस्तर लिये लोगों को झगड़ते हुए कोई भी देख सकता है। मंगल आदि ग्रहों पर जाने वाले यान भी वहां सबसे पहले पानी की ही तलाश कर रहे हैं। इसके बाद भी लोगों का ध्यान इस ओर नहीं है। जो कार दो बाल्टी पानी में धोई जा सकती है, उसे दो हजार लीटर साफ पानी से धोते हुए लोग प्रायः मिल जाते हैं। हम वर्षा जल का संरक्षण कर तथा पानी को व्यर्थ न जाने देकर भी इस दिशा में अपना व्यक्तिगत सहयोग दे सकते हैं। हम साफ पानी पिएं, यह तो आवश्यक है ही पर कितना पिएं, इस बारे में अलग-अलग मत हैं। फिर भी एक व्यस्क व्यक्ति को दिन भर में आठ-दस गिलास पानी तो पीना ही चाहिए। सुबह उठकर कुल्ला-मंजन के बाद तांबे के साफ पात्र में रखा पानी भरपेट पीना बहुत लाभ देता है। तांबा जल की अधिकांश अशुद्धियां दूर कर देता है। सर्दियों में पानी को गुनगुना कर लें, तो और अच्छा रहेगा।

आकाश- आकाश की पहचान खालीपन या शून्यता है। घटाकाश और मठाकाश जैसी कल्पनाएं इसी में से आई हैं। आकाश में कोई भी चीज फेंकें, खाली होने के कारण वह मना नहीं करता। वायु और अंतरिक्ष यान इसीलिए आकाश में निर्द्वन्द उड़ते हैं। किसी पात्र के खाली होने का अर्थ है कि उसमें आकाश तत्व विद्यमान है पर जब उसमें कोई वस्तु डालते हैं, तो वह हट जाता है। ऐसी शून्यता हम अपने पेट को बिल्कुल खाली रखकर प्राप्त कर सकते हैं। अतः प्रातः शौचादि से निवृत्त होने के बाद लगभग दो घंटे तक पेट को अवकाश दें। इससे जहां भोजन पचाने वाली इंद्रियों को आराम तथा अपनी टूट-फूट ठीक करने का समय मिलेगा, वहां हमें आकाश तत्व भी प्राप्त होगा। व्रत और उपवास आकाश तत्व की प्राप्ति का अवसर कुछ अधिक समय तक प्रदान करते हैं। इनका भरपूर उपयोग करना चाहिए पर इस नाम पर दिन में कई बार पेट में गरिष्ठ चीजें ठूंसते रहना शुद्ध पाखंड है।

पृथ्वी- पृथ्वी हमें अन्न, दाल और सब्जियां आदि देती है। अतः इनके सेवन से हमें पृथ्वी तत्व की प्राप्ति होती है पर इन्हें कच्चा नहीं खा सकते। इन्हें आग पर पकाकर तथा आवश्यकतानुसार कुछ अन्य मिर्च-मसाले डालकर प्रयोग किया जाता है। इनका सेवन कितना और कितनी बार करें, इसका कोई मापदंड नहीं है। शारीरिक परिश्रम करने वाले किसान या मजदूर तथा कार्यालय में बैठकर काम करने वाले की आवश्यकता अलग-अलग होगी। उन्हें उसी अनुसार इनका सेवन करना चाहिए। ऐसा न होने पर जहां एक ओर तोंद वाले, तो दूसरी ओर दुबले-पतले लोग सर्वत्र घूमते मिलते हैं।

अग्नि-
अग्नि का स्रोत सूर्य है। सर्दियों में तो सीधे धूप में लेटना या बैठकर काम करना अच्छा लगता है। गर्मियों में भी अपने काम के सिलसिले में घूमते-फिरते धूप लगती रहती है। इससे अग्नि तत्व अपने आप ही मिल जाता है। जो लोग दिन भर वातानुकूलित वातावरण अर्थात् एसी वाले घर, कार्यालय और कार में रहते हैं, उनके शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम हो जाती है। इसलिए थोड़े से परिश्रम या मौसम बदलने मात्र से ही ये लोग बीमार होकर बिस्तर पकड़ लेते हैं। भीषण गर्मियों में जहां लू से बचना आवश्यक है, वहां धूप से डरना भी अनुचित है।

जहां तक खानपान की बात है, तो सूर्य की ऊर्जा से पके हुए फल और सलाद आदि के सेवन से अग्नि तत्व भरपूर मात्रा में प्राप्त होता है पर इनका सेवन सूर्यकाल में ही करना चाहिए। अर्थात् सूर्यास्त के बाद इन्हें खाना ठीक नहीं है। इसी तर्ज पर कुछ लोग यह भी कहते हैं कि पृथ्वी तत्व वाले जिन पदार्थों को खाने से पूर्व आग पर चढ़ाना पड़ता है, उन्हें सूर्य की उपस्थिति में नहीं खाना चाहिए। यद्यपि बहुत से लोग अपनी धार्मिक आस्था या वृद्धावस्था के कारण सूर्यास्त के बाद अन्न नहीं खाते। उनका कहना है कि सूर्यास्त के बाद शरीर की पाचनक्रिया मंद हो जाती है। अतः उस समय भारी भोजन ठीक नहीं है। विचार भिन्नता के कारण इस विषय को स्वतंत्र छोड़ देना ही उचित है। ये कुछ ऐसी बातें हैं, जिन्हें समय-समय पर कुछ बुजुर्गों के मुंह से सुना है। इसमें से कुछ का प्रयोग करने से लाभ भी हुआ है। यद्यपि आज की भागदौड़ वाले जीवन में सब नियमों का पालन संभव नहीं होता। फिर भी जितना हो सके, उतना पालन करके देखें।

पेट दर्द के घरेलू उपचार

अधिकतर बीमारियों की वजह होती है असंयमित खान-पान। गलत खान-पान के कारण कभी-कभी पेट में दर्द होने लगता है। आमतौर पर पेट दर्द का एक मुख्य कारण अपच, मल सूखना, गैस बनना यानी वात प्रकोप होना और लगातार कब्ज बना रहना भी है। पेट दर्द को दूर करने के लिए कुछ घरेलू उपाय हैं, जो दर्द तो दूर करते हैं, साथ ही साथ पेट की क्रियाओं को भी ठीक करते हैं।

- पेट दर्द मे हींग का प्रयोग लाभकारी होता है। 2 ग्राम हींग थोड़े पानी के साथ पीसकर पेस्ट बनाएं। नाभी पर और उसके आस-पास यह पेस्ट लगाएं।
-अजवाइन को तवे पर सेक लें और काले नमक के साथ पीसकर पाउडर बनाएं। 2-3 ग्राम गर्म पानी के साथ दिन में 3 बार लेने से पेट का दर्द दूर होता है।
-जीरे को तवे पर सेकें और 2-3 ग्राम की मात्रा गर्म पानी के साथ दिन में 3 बार लें। इसे चबाकर खाने से भी लाभ होता है।
-पुदीने और नींबू का रस एक-एक चम्मच लें। अब इसमें आधा चम्मच अदरक का रस और थोड़ा सा काला नमक मिलाकर उपयोग करें। दिन में 3 बार इस्तेमाल करें, पेट दर्द में आराम मिलेगा।
-सूखी अदरक मुंह में रखकर चूसने से भी पेट दर्द में राहत मिलती है।
-बिना दूध की चाय पीने से भी कुछ लोग पेट दर्द में आराम महसूस करते हैं।
-अदरक का रस नाभी स्थल पर लगाने और हल्की मालिश करने से पेट दर्द में लाभ होता है।
-अगर पेट दर्द एसिडिटी से हो रहा हो तो पानी में थोड़ा सा मीठा सोडा डालकर पीने से फायदा होता है।
-पेट दर्द निवारक चूर्ण बनाएं। इसके लिए भुना हुआ जीरा, काली मिर्च, सौंठ, लहसुन, धनिया, हींग, सूखी पुदीना पत्ती सबकी बराबर मात्रा लेकर बारीक चूर्ण बनाएं। इसमें थोड़ा सा काला नमक भी मिलाएं। खाने के बाद एक चम्मच थोड़े से गर्म पानी के साथ लें। पेट दर्द में आशातीत लाभकारी है।
-एक चम्मच शुद्ध घी में हरे धनिये का रस मिलाकर लेने से पेट की व्याधि दूर होती है।
-अदरक का रस और अरंडी का तेल प्रत्येक एक-एक चम्मच मिलाकर दिन में 3 बार लेने से पेट दर्द दूर होता है।
-अदरक का रस एक चम्मच, नींबू का रस 2 चम्मच लेकर उसमें थोड़ी सी शक्कर मिलाकर प्रयोग करें। पेट दर्द में लाभ होगा। दिन में 2-3 बार ले सकते हैं।
-अनार पेट दर्द मे फायदेमंद है। अनार के बीज निकालें। थोड़ी मात्रा में नमक और काली मिर्च का पाउडर डालें। और दिन में दो बार लेते रहें।
-मेथी के बीज पानी में भिगोएं। पीसकर पेस्ट बनाएं। और इस पेस्ट को 200 ग्राम दही में मिलाकर दिन में दो बार लेने से पेट के विकार नष्ट होते हैं।
-इसबगोल के बीज दूध में 4 घटे भिगोएं। रात को सोते समय लेते रहने से पेट में मरोड़ का दर्द और पेचिश ठीक होती है।
-सौंफ में पेट का दर्द दूर करने के गुण होते है। 15 ग्राम सौंफ रात भर एक गिलास पानी में भिगोएं। छानकर सुबह खाली पेट पीयें। बहुत गुणकारी उपचार है।
-आयुर्वेद के अनुसार हींग दर्द निवारक और पित्तवर्द्धक होती है। छाती और पेट दर्द में हींग का सेवन बेहद लाभकारी होता है। छोटे बच्चों के पेट में दर्द होने पर एकदम थोड़ी सी हींग को एक चम्मच पानी में घोलकर पका लें। फिर बच्चे की नाभी के चारों लगा दें। कुछ देर बाद दर्द दूर हो जाता है।
-नींबू के रस में काला नमक, जीरा, अजवायन चूर्ण मिलाकर दिन में तीन बार पीने से पेट दर्द से आराम मिलता है।

आंखों पर दें ध्यान

आंखें अनमोल हैं, इसलिए इनकी सेहत का बदलते मौसम के अनुसार ध्यान रखना आवश्यक है

- आंखों में सूखापन की समस्या सर्दियों में बढ़ सकती है। सूखेपन से बचाव के लिए डॉक्टर के परामर्श से आर्टीफिशियल टीयर ड्रॉप का इस्तेमाल करें।
- इस मौसम में एलर्जी की शिकायत भी सभव है। इससे बचने के लिए दिन में दो बार आंखों को साफ पानी से धोएं। इन्हें मलें या रगड़ें नहीं।
- चेहरे के साथ आंख के आसपास व पलक की त्वचा को सूखेपन से बचाएं, लेकिन ध्यान रहे कि कोई भी मॉइश्चराइजर या कोल्ड क्रीम आंख के अंदर न जाए।
- काला चश्मा लगाकर ही धूप में बैठें।
- नेत्रों को चश्मे के जरिये ठंडी हवाओं से बचाएं।

मुझे नींद नहीं आती, आपने अक्सर लोगों को यह शिकायत करते सुना होगा। नींद एक जैविक प्रक्रिया है। हमारे शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए पर्याप्त नींद बहुत ही जरूरी है। पर्याप्त नींद नहीं लेने से हमारी कार्यक्षमता पर भी बुरा असर पड़ता है। अनिद्रा के शिकार लोगों को अक्सर दिन में इधर-उधर झपकियां लेते देखा जा सकता है।

होम्योपैथी का सहारा ले सकते हैं

अनिद्रा के रोगी

अनिद्रा आजकल एक महामारी की तरह फैलती जा रही है। एक अनुमान के मुताबिक आज विश्व में हर पांचवां व्यक्ति अनिद्रा का शिकार है। अनिद्रा का अर्थ है नींद में व्यवधान, नींद उचटना या कम नींद आना। यह दो प्रकार की होती है। पहले प्रकार की अनिद्रा का संबंध उन लोगों से जिन्होंने कभी अच्छी, चैन की नींद का आनंद नहीं लिया हो तथा ये लोग तनाव, घबराहट या अन्य किसी असहनीय पीड़ा से पीड़ित न हो। पहली प्रकार की अनिद्रा से पीड़ित लोगों की नाड़ी की गति तेज तथा शरीर का तापमान अधिक होता है। इनकी बाह्य धमनियां प्रायः संकुचित होती हैं। ये लोग प्रायः हिलते-डुलते रहते हैं। दूसरे प्रकार की अनिद्रा का संबंध उन लोगों की अनिद्रा से है जो किसी न किसी बीमारी से पीड़ित होते हैं जैसे पेट में दर्द, पैरों में बेचैनी, थकान, स्पाइनल कॉर्ड में दर्द आदि। इन बीमारियों से नींद की प्रारंभिक अवस्था में बाधा पहुंचती है।

दूसरे प्रकार की अनिद्रा साइकेट्रीक, साइकोसिस तथा साइकोन्यूरोसिस के मरीजों में आमतौर पर देखी जा सकती है। डर तथा चिंता भी अनिद्रा के कारण हो सकते हैं। डिप्रेशन तथा मेनियक डिप्रेशन से भी अनिद्रा की शिकायत हो सकती है इससे सोने पर एक बार तो नींद आ जाती है परन्तु सुबह जल्दी आंख खुल जाती है तथा बाद में रोगी सो नहीं पाता। सन्निपात तथा कोई काल्पनिक डर भी अनिद्रा के कारण हो सकते हैं।

चिकित्सा की होम्योपैथिक शाखा के अंतर्गत अनेक ऐसी दवाईयां हैं जिनका प्रयोग अनिद्रा के उपचार के लिए किया जाता है। मरीज के लक्षणों के आधार पर कोई भी दवा उसे दी जा सकती है।

आर्सेनिक एलबम 30- यह दवा उन मरीजों को दी जाती है जो किसी मानसिक बेचैनी के कारण करवटें बदलते रहते हैं। वह शारीरिक रूप से इतना कमजोर होता है कि उसका चलना-फिरना भी मुश्किल होता है। मरीज को निरंतर मृत्यु का भय बना रहता है। वह इलाज के प्रति निराश हो चुका होता है। ऐसे रोगी को बार-बार थोड़े पानी की प्यास लगती रहती है।

केनाबिस इंडिका 30- यह उन रोगियों के लिए उपयुक्त होती है जो भय, भ्रांति तथा मानसिक दुर्बलता के शिकार होते हैं। ऐसे रोगी अक्सर मरे हुए लोगों को सपने में देखते हैं। उन्हें लगता है कि वह पागल हो जाएंगे। ऐसा रोगी लगातार बोलता रहता है और सिर हिलाता रहता है। अक्सर बोलते-बोलते वह यह भी भूल जाता है कि उसे आगे क्या बोलना है। विनम्र स्वभाव का व्यक्ति यदि उद्दण्ड स्वभाव हो जाए तो उसे यह दवा दी जाती है।

हायोसाइमस नाइगर 200- इसमें मरीज बहुत बातूनी और ईर्ष्यालु होता है। इस प्रकार का रोगी बहुत डरता है। उसे हर बात में डर लगता है जैसे अकेले रहने का डर, विष खिलाने का डर, किसी षड़यंत्र का डर आदि। बच्चों में नींद न आना, नींद आते ही डर जाना, बिस्तर से निकलने या भागने की कोशिश करना जैसे लक्षण होने पर यह दवा दी जाती है।

कैफिया क्रूडा 200- यह दवा उन रोगियों के लिए उचित है जिन्हें रात को नींद नहीं आती। वे अक्सर भविष्य के बारे में चिंता करते रहते हैं। ऐसे रोगी अचानक ही हंसने या रोने लगते हैं ऐसे रोगियों को बहुत अधिक चिंता, बातचीत या मानसिक परिश्रम करने में सिर में तेज दर्द होता है।

एकोनाइटम नैपेलस 30- इसमें रोगी अक्सर बैचेन रहता है जिससे उसे नींद नहीं आती। उसे इतना डर लगता है कि वह बेहोश भी हो जाता है। स्थिति गिंभीर होने पर रोगी को मरने का डर लगने लगता है। रोगी अक्सर डर के कारण घर से नहीं निकलता, भीड़भाड़ वाली जगहों से भी बचता है। उसे बार-बार पानी की प्यास भी लगती है।

इग्नेशिया अमारा 200- यह दवा उन रोगियों को दी जाती है जो शोक, भय या दुख की वजह से एकाएक बेहोश हो जाते हैं। उसे तम्बाकू या धुंआ सहन नहीं होता। उसके सिर में भी दर्द होता है। प्रेम या काम में निराशा से उत्पन्न अनिद्रा के लिए भी यही दवा कारगर होती है।

पोर्स फ्लोरा इन्कार्नेटा (क्यू)- वृद्धों तथा बच्चों में अनिद्रा दूर करने के लिए यह दवा कारगर सिद्ध होती है। यह दवा उन रोगियों की दी जाती है। जिन्हें तनाव और अत्यधिक मानसिक कार्य के कारण नींद नहीं आ पाती या सिर दर्द और आंखों में दर्द के कारण नींद नहीं आती।

किसी भी दवा के चुनाव से पहले रोगी के लक्षण पहचानना जरूरी होता है तथा किसी भी दवा के प्रयोग से पहले किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना भी जरूरी होता है।

भरपूर मात्रा में दही खाएं, चिंता से मुक्ति मिलेगी

एक शोध के मुताबिक, दही जैसे प्रोबायोटिक्स का सेवन करने से न सिर्फ आंत में बैक्टीरिया को नियंत्रित करने में मदद मिलती है, बल्कि यह चिंता कम करने के साथ-साथ मस्तिष्क की कार्यक्षमता में सुधार भी करती है। आजकल की बदलती जीवनशैली, व्यस्तता और खराब सामाजिक जीवन के चलते अक्सर चिंता और बेवजह का तनाव होने लगता है, जो धीरे-धीरे अवसाद के तौर पर गंभीर समस्या बन सकता है। इसलिए, जिंदगी में शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रहना बेहद जरूरी हो गया है। हालांकि, चिंता से मुक्ति पाना आसान नहीं है। लेकिन शोध के मुताबिक,खाने में भरपूर मात्रा में दही शामिल करके चिंता व तनाव से राहत मिल सकती है। शोध में पता चला है कि प्रोबायोटिक्स आंत के बैक्टीरिया को नियंत्रित करने के अलावा मस्तिष्क की कार्यक्षमता को सुधारने में भी अहम भूमिका निभाते हैं, जो चिंता के लक्षणों को कम करती है। प्रोबायोटिक्स को अच्छे बैक्टीरिया होते हैं, क्योंकि ये हानिकारक बैक्टीरिया से लड़ते हैं। शोध यह भी बताता है कि आंतों के माइक्रोबायोटो को नियंत्रित करके मानसिक विकारों का उपचार हो सकता है। इसका समर्थन करने वाला अभी कोई ठोस सबूत नहीं है।

शरीर सुन्न हो जाने पर घरेलु नुस्खे

पपीता और सरसों

पपीते या शरीफे के बीजों को पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर सुन्न होने वाले अंगों पर धीरे-धीरे मालिश करें।

सोंठ, लहसुन और पानी

सुबह के समय शौच आदि से निपट कर सोंठ तथा लहसुन की दो कलियों को चबाकर ऊपर से पानी पी लें।

यह प्रयोग आठ-दस दिनों तक लगातर करने से सुन्न स्थान ठीक हो जाता है।

अजवायन, लहसुन और तिली तेल

तिली के तेल में एक चम्मच अजवायन तथा लहसुन की दो पूतियां कुचलकर डालें। फिर तेल को पका-छानकर शीशी में भर लें। इस तेल से सुन्न स्थान की मालिश करें।

बादाम

बादाम घिसकर लगाने से त्वचा स्वाभाविक हो जाती है। और बादाम का तेल मलने से सुन्न स्थान ठीक हो जाता है।

पीपल और सरसों

पीपल के पेड़ की चार कोंपलें सरसों के तेल में मिलाकर आंच पर पकाएं। फिर छानकर इस तेल को काम में लाएं।

सोंठ, पीपल, लहसुन और पानी

सोंठ, पीपल तथा लहसुन सभी बराबर की मात्रा में लेकर सिल पर पानी के साथ पीस लें। फिर इसे लेप की तरह सुन्न स्थान पर लगाएं।

कालीमिर्च और इलायची

कालीमिर्च तथा लाल इलायची को पानी में पीसकर त्वचा पर लगाएं।

नारियल और जायफल

100 ग्राम नारियल के तेल में 5 ग्राम जायफल का चूर्ण मिलाकर त्वचा या अंग विशेष पर लगाएं।

लहसुन और पानी

एक गांठ लहसुन और एक गांठ शुंठी पीस लें। इसके बाद पानी में घोलकर लेप बना लें। इस लेप को त्वचा पर लगाएं।

घी

रात को सोते समय तलवों पर देशी घी की मालिश करें। इससे पैर का सुन्नपन खत्म हो जाएगा।

चोपचीनी, पीपरामूल, मक्खन और दूध

5 ग्राम चोपचीनी, 2 ग्राम पीपरामूल और 4 ग्राम मक्खन तीनों को मिलाकर सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करें।

बेल, पीपल, चित्रक और दूध

बेल की जड़, पीपल और चित्रक को बराबर की मात्रा में लेकर आधा किलो दूध में औटाएं। फिर रात को सोते समय उसे पी जाएं।

सैन्धव तेल

सैन्धव तेल की मालिश से सुन्नपन में काफी लाभ होता है।

शरीर सुन्न हो जाने का कारण

शरीर के किसी अंग के सुन्न होने का प्रमुख कारण वायु का कुपित होना है। इसी से वह अंग भाव शून्य हो जाता है। लेकिन विशेषज्ञों का कहना है कि खून के संचरण में रुकावट पैदा होने से सन्नता आती है। यदि शरीर के किसी विशेष भाग को पूरी मात्रा में शुद्ध वायु नही मिलती तो भी शरीर का वह भाग सुन्न पड़ जाता है।

शरीर सुन्न हो जाने की पहचान

जो अंग सुन्न हो जाता है, उसमें हल्की झनझनाहट होती है। उसके बाद लगता है कि वह अंग सन्न हो गया है। सुई चुभने की तरह उस अंग में धीरे-धीरे लपकन-सी पड़ती है, लेकिन दर्द नही मालूम पड़ता।

रेसिपी

पनीर कोरमा

सामग्री

- 300 ग्रम पनीर
- 1 कप पानी
- 1 प्याज
- 1 टमाटर
- 4 तेज पत्ता
- 5 काजू
- 1 टी स्पून अदरक लहसुन पेस्ट
- 1 टी स्पून गरम मसाला
- 1/2 टी स्पून हल्दी
- 1/2 टी स्पून लाल मिर्च
- 1/2 टी स्पून हरी मिर्च पेस्ट
- 2 टी स्पून खसखस
- 2 टी स्पून नारियल
- 2 टी स्पून धनिया पत्ता
- 2 टी स्पून तेल
- नमक स्वादानुसार

विधि

पनीर कोरमा बनाने के लिए सबसे पहले प्याज और टमाटर को बारीक काट लें। अब खसखस, काजू और नारियल को मिक्सी में पीस लें। साथ ही थोड़ा पानी डालकर एक पेस्ट तैयार कर लें। अब एक कढ़ाई में तेल डालकर गरम करें। गरम तेल में तेज पत्ता और इलायची डालकर भूनें। अब इसमें कटा हुआ प्याज डालें और धीमी आंच पर उसे भूनें। प्याज का रंग हल्का ब्राउन होने लगेगा। इस मिश्रण में हरी मिर्च का पेस्ट, अदरक लहुसन का पेस्ट डालें और इसी मिश्रण के साथ भूनें। इतना करने के बाद इसमें कटा हुआ टमाटर डालें साथ ही नमक, लाल मिर्च और हल्दी डालकर मिश्रण को भूनें। 2 मिनट तक मिश्रण को पकने के लिए छोड़ दें। अब इसमें पिसा हुआ खसखस का पेस्ट और पानी डालकर पकने के लिए छोड़ दें। 5 मिनट तक सब्जी को पकने दें। इस मिश्रण में पनीर के कटे हुए टुकड़े डालें, साथ ही गरम मसाला डाले और 2 मिनट तक सब्जी को पकाएं। आपका स्वादिष्ट पनीर कोरमा बनकर तैयार है। इसे बाउल में निकालें ऊपर से धनिया पत्ता डालें और सभी को गरम-गरम सर्वे करें।

शाही मशरूम

सामग्री

- मशरूम 200 ग्राम
- प्याज 4
- टमाटर 5
- अदरक 1 टुकड़ा
- हरी मिर्च 2
- नमक स्वादानुसार
- लाल मिर्च पाउडर 1/2 चम्मच
- गरम मसाला पाउडर 1/2 चम्मच
- चीनी 1 चम्मच
- क्रीम 1 कप
- काजू 1 कप
- घी 3 चम्मच

विधि

मशरूम को धोकर दो टुकड़ों में काट लें। प्याज और टमाटर को भी छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें। कढ़ाही में दो चम्मच घी गर्म करें और प्याज को सुनहरा होने तक भूनें। फिर टमाटर, अदरक और हरी मिर्च डालें। जब टमाटर मुलायम होने लगे तो गैस बंद कर दें और मिश्रण के ठंडा होने पर उसका घोल बना लें। अब उसी कढ़ाही में बचा हुआ घी डालें और गर्म करें। तैयार घोल को घी में डालें। लाल मिर्च पाउडर, सभी मसाले, चीनी और काजू का घोल डालें। चार से पांच मिनट तक धीमी आंच पर भूनें ग्रेवी के लिए आधा कप पानी डालें। जब ग्रेवी उबलने लगे तो कड़ाही में मशरूम डालकर धीमी आंच पर पांच से सात मिनट तक पकाएं। सबसे अंत में नमक और क्रीम डालकर मिलाएं। लगातार चलाते हुए पांच मिनट तक पकाएं और गैस बंद कर दें। लो तैयार हो गया आपका शाही मशरूम। इसे मेहमान के सामने गर्मागर्म परोसें।

टाईम पास

आज का राशिफल

मेष (चू चे चो ला ली लू ले लो आ)
अपनी गतिविधियों पर पुनर्विचार करें। वैचारिक द्वन्द्व और असंतोष बना रहेगा। किसी सूचना से पूर्ण निर्णय सम्भव। सुख आरोग्य प्रभावित होगा। शत्रुभय, चिंता, संतान को कष्ट, अपव्यय के कारण बनेंगे। आय-व्यय की स्थिति समान रहेगी। किसी नजदीकी शुभचिंतक सलाह उपयोगी सिद्ध होगी। शुभांक-5-6-7

वृष (इ उ ए ओ वा वी वू वे वो)
संतोष रखने से सफलता मिलेगी। नौकरी में स्थिति सामान्य ही रहेगी। बुद्धि, बल व पराक्रम सफल होगा। व्यापार में वृद्धि व उत्तम लाभ मिलेगा। मित्रों की उपेक्षा करना ठीक नहीं रहेगा। आत्मचिंतन कर। पुराने मित्र से मिलन होगा। पुरुषार्थ का सहारा लें। यात्रा का योग बनेगा। विद्यार्थियों को लाभ। शुभांक-5-7-8

मिथुन (का की कू घ ङ छ के को हा)
शिक्षा में परेशानी आ सकती है। स्वास्थ्य की ओर विशेष ध्यान रखें। व्यापार में वृद्धि होगी। नौकरी में सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा। शत्रुपक्ष पर आप हावी रहेंगे। पारिवारिक परेशानी बढ़ेगी। कुछ प्रतिकूल गोचर का क्षोभ दिन-भर रहेगा। स्वविवेक से कार्य कर। दाम्पत्य जीवन सुखद रहेगा। शुभांक-4-6-7

कर्क (ही हू हे हो डा डी डू डे डो)
कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दीजिए। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। पूर्व नियोजित कार्यक्रम सरलता से संपन्न हो जाएंगे। व्यापार व व्यवसाय में स्थिति उत्तम रहेगी। कामकाज की अधिकता रहेगी। शुभांक-4-6-7

सिंह (मा मी मू मे मो टा टी टू टे)
प्रसन्नता के साथ सभी जरूरी कार्य बनते नजर आएंगे। मनोरथ सिद्धि का योग है। सभा-गोष्ठियों में सम्मान मिलेगा। प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए कुछ सामाजिक कार्य संपन्न होंगे। कई प्रकार के हर्ष उल्लास के बीच आनन्ददायक दिन रहेगा। आमोद-प्रमोद का दिन होगा। व्यावसायिक प्रगति भी होगी। शुभांक-6-7-9

कन्या (टो पा पी पू ष ण ठ पे पो)
स्वास्थ्य और जीवन स्तर में सुधार की अपेक्षा रहेगी। ज्ञान-विज्ञान की वृद्धि होगी और सज्जनों का साथ भी रहेगा। कुछ कार्य भी सिद्ध होंगे। व्यर्थ की भाग-दौड़ से यदि बचा जाए तो अच्छा है। प्रियजनों से समागम का अवसर मिलेगा। अवरुद्ध कार्य संपन्न हो जाएंगे। उन्नति के योग हैं। शुभांक-4-5-7

तुला (रा री रु रे रो ता ती तू ते)
नवीन उद्योगों के अवसर बढ़ेंगे व अभिलाषाएं पूर्ण होंगी। कार्य साधक दिन है व्यर्थ न गंवाएं। विश्वस्त लोगों के कहे अनुसार चलें। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। जोश से कम व होश में रहकर कार्य करें। नये आगंतुकों से लाभ होगा। जो चल रहा है उसे सावधानीपूर्वक संभालें। शुभांक-7-8-9

वृश्चिक (तो ना नी नू ने नो य यी यू)
जमीन जायदाद का लाभ भी हो सकता है। आवास, मकान तथा वाहन की सुविधाएं मिलेंगी। कर्ज तथा रोगों से मुक्ति भी संभव है। मान-सम्मान में वृद्धि होगी। अच्छे कार्य के लिए रास्ते बना लेंगे। अपने हित के काम सुबह-सवेरे ही निपटा लें। रुपए पैसों की सुविधा नहीं मिल पाएगी। शुभांक-4-6-8

धनु (ये यो भा भी भू धा फा ढा भे)
कामकाज सीमित तौर पर ही बन पाएंगे। स्वास्थ्य का पाया कमजोर बना रहेगा। यात्रा प्रवास का सार्थक परिणाम मिलेगा। मेल-मिलाप से काम बनाने की कोशिश लाभ देगी। कुछ आर्थिक चिंताएं भी कम होंगी। नियोजित धन से लाभ होने लगेगा। घर वाले मदद करेंगे। शुभांक-5-7-9

मकर (भे जा जी खी खू खे खो गा गी)
बचते-बचते कलह विवाद का डर रहेगा। हित के काम में आ रही बाधा मध्याह्न पश्चात् दूर हो जाएगी। अपने काम आसानी से बनते चले जाएंगे साथ ही आगे के लिए रास्ता भी बन जाएगा। कहीं रुका हुआ पैसा वसूलने में मदद मिल जाएगी। व्यर्थ प्रपंच में समय नहीं गंवाकर अपने काम पर ध्यान दे शुभांक-2-4-6

कुंभ (गू गे गो सा सी सू से सो दा)
सुखद समय की अनुभूतियां प्रबल होंगी। व्ययाधिक्य का अवसर आ सकता है। शुभ कार्यों का लाभदायक परिणाम होगा। कामकाज की अधिकता रहेगी। लाभ भी होगा और पुराने मित्रों से समागम। व्यवसायिक अभ्युदय होगा और प्रसन्नताएं बढ़ेगी। ज्ञानार्जन का वातावरण बनेगा। धार्मिक यात्रा का योग हैं। शुभांक-5-6-7

मीन (दी दू थ झ ञ दे दो चा ची)
धर्म-कर्म के प्रति रुचि जागृत होगी। लाभ में आशातीत वृद्धि तय है मगर नकारात्मक रुख न अपनाएं। किसी पुराने संकल्प को पुरा कर लेने का दिन हैं। 'आगे-आगे गौरख जागे' वाली कहावत चरितार्थ होगी। निष्ठा से किया गया कार्य पराक्रम व आत्मविश्वास बढ़ाने वाला होगा। इच्छित कार्य सफल होंगे। शुभांक-4-6-8

लॉफिंग जौन

बेटा (मां से)- मां, क्या पीला रंग महंगा मिलता है ?

मां- नही तो।

बेटा- मगर पडोस वाली आंटी तो कह रही थी, कि बेटी के हाथ पीले करने में लाख रूपए लगेंगे।

□ □ □

प्रदीप- मेरा मुंह मत धोओ बहुत ठंड है।

दादी- बेटे जब मैं तेरी उम्र की थी, तो दिन में चार बार मुंह धोआ करती थी।

प्रदीप- इसलिए तो तुम्हारा मुंह इतना सिकुड गया है।

□ □ □

मां- बेटे तू यह कैसी माचिस लाया है। इसमें एक भी तीली नही है ?

बेटा- मां आपने ही तो कहा था कि माचिस देखकर लाना, तीलियां सीली हुई मत लाना। इसलिए मैंने माचिस की सारी तीलियां जलाकर देख ली।

□ □ □

जज (चोर से)- तुमने सुनार की दुकान से गहने क्यों चुराए ?

चोर- जज साहब, दुकान के बाहर लिखा था 'सुनहरे मौके का लाभ उठाएं'।

काकुरो पहेली - 4076

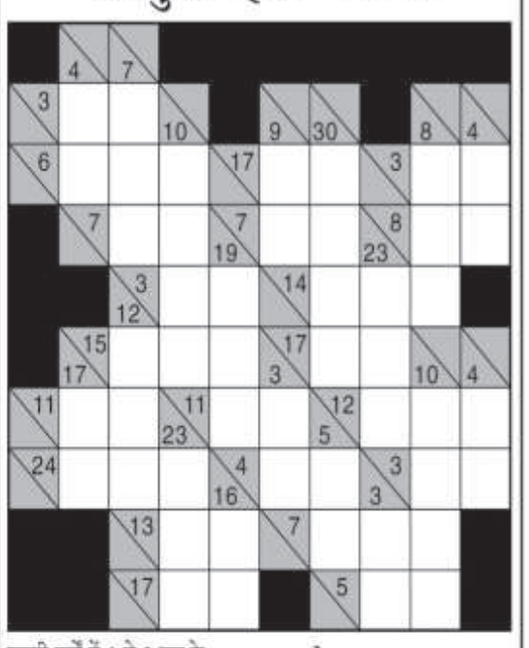

खाली वर्गों में 1 से 9 तक के अंक लिखकर नीचे से ऊपर व दाएं से बाएं की जोड़ हल्के रंग के आधे वर्ग की संख्या से मेल खानी चाहिए,किसी भी अंक का उस जोड़ में पुनः उपयोग नहीं किया जा सकता.

उदाहरणत:

1+2 = 3
1+3 = 4
7+9 = 16
8+9 = 17

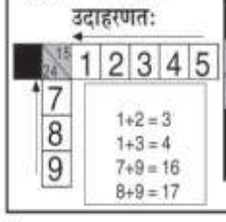

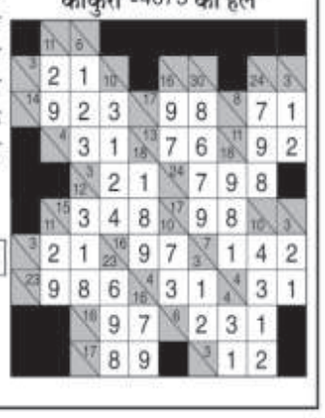

काकुरो -4075 का हल

फिल्म वर्ग पहेली- 4076

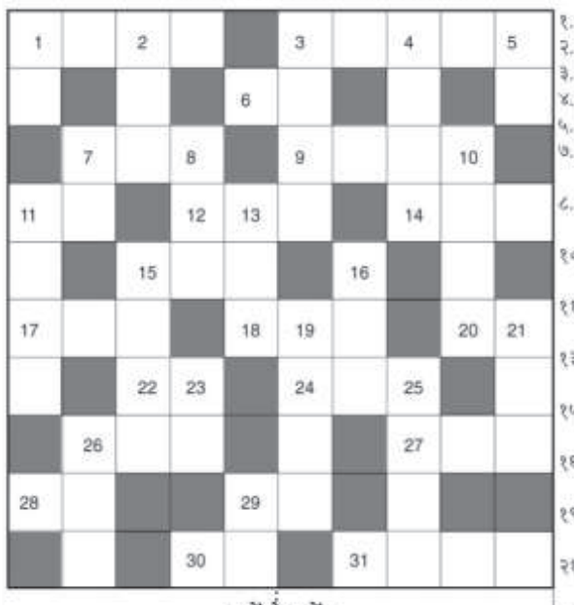

बायें से दायें:-

१. 'तू मिले दिल खिले और' गीत वाली नागार्जुन, रमैया, मनीषा की फिल्म-४
३. राजकपूर, माला की 'आँसू भरी हैं ये जीवन की राहें' गीत वाली फिल्म-५
६. 'केसरिया बालम' गीत वाली श्रेयस तलपदे, आयशा टाकिया की फिल्म-२
७. शाहरूख, माधुरी की 'अठरा बरस की कँवारी कली थी' गीत वाली फिल्म-३
९. 'वो चाँद जैसी' गीत वाली शाहरूख खान, माधुरी, ऐश्वर्या की फिल्म-४
११. जैकी श्रॉफ, डिम्पल कपाड़िया की 'फूल ये कहाँ से' गीत वाली फिल्म-२
१२. शॉवर अली, तरूण अरोड़ा, मेघना की फिल्म-३
१४. संजय दत्त, फरहा की 'मेरा प्यार तेरे जीवन के संग' गीत वाली फिल्म-३
१५. विनोद मेहरा, बिंदिया की फिल्म-३
१७. हिमालय, भाग्यश्री की 'तेरा ही प्यार मेरे इस दिल में' गीत वाली फिल्म-३
१८. फिल्म 'कभी कभी' में ऋषि की नायिका कौन थी-३
२०. अनिल, अक्षय खन्ना, ऐश्वर्या की 'इश्क बिना क्या' गीतवाली फिल्म-२
२२. दिलीप कुमार, रेखा, ममता कुलकर्णी की फिल्म-२
२४. अमिताभ, रेखा की 'कोई गाता मैं सो जाता' गीत वाली फिल्म-३
२६. 'बागां मां जब मोर बोले' गीत वाली अक्षयकुमार, करीना की फिल्म-३
२७. विनोद खन्ना, हेमा की अरूणा राजे द्वारा निर्मित एवं निर्देशित फिल्म-३
२८. 'क्यूं मेरा दिल तुझको' गीत वाली करण नाथ, मनीषा की फिल्म-२
२९. नसीर, ओमपुरी, स्मिता की 'शमशीर बजे ना' गीत वाली फिल्म-२
३०. 'बंधन' में सलमान का नाम ?-२
३१. फिल्म 'काफी हाउस' में शम्मी कपूर की नायिका ?-२,२

ऊपर से नीचे:-

१. 'दिल ना दिया' गीत वाली फिल्म-२
२. विनोद खन्ना, बिंदू की फिल्म-३
३. 'दो दिल मिल रहे' गीत वाली फिल्म-४
४. विनोद मेहरा, रीना राय की फिल्म-४
५. 'आप से प्यार हुआ' गीत वाली फिल्म-२
७. 'सिर्फ संडे को करती हूँ मैं' गीत वाली अब्बास, शर्वाणी मुखर्जी की फिल्म-२
८. देव आनंद, आशा पारेख की 'ये दुनिया वाले पूछेंगे' गीत वाली फिल्म-३
१०. 'बड़ी दूर से आये हैं प्यार' गीत वाली अनिल धवन, योगिता की फिल्म-४
११. देव आनंद, मधुबाला की 'उन के खयाल आए तो' गीत वाली फिल्म-२,२
१३. 'जब लिया हाथ में हाथ' गीत वाली राजेंद्रकुमार, गीताबाली की फिल्म-३
१५. जयराज, निरूपा की 'ना किसी की आँख का नूर हूँ' गीत वाली फिल्म-२,२
१६. फिल्म 'शिवा' में नागार्जुन के साथ नायिका कौन थी-३
१९. 'लेके पहला पहला प्यार गीत वाली फिल्म-१,२,१
२१. मिथुन, आदित्य, डिम्पल, मंदाकिनी की फिल्म-३
२३. अनिल धवन, रश्मि वर्मा, सोनिका गिल की एक सस्पेंस फिल्म-२
२५. 'पियु बोले जिया' गीत वाली फिल्म-४
२६. बिस्वजीत, माला की 'अजी हो ताश के बावन पत्ते' गीत वाली फिल्म-३
२९. 'चालबाज' में श्रीदेवी के एक किरदार का नाम अंजू था दूसरे किरदार का नाम ?-२

फिल्म वर्ग पहेली- 4075

सूडोकु 4076

6					7			
		8	2				7	5
	4			3				6
	7	1			2		5	
8				4				3
	2		8			9	6	
2				8			3	
4	3				9	8		
			3					9

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु 4075 हल

7	4	6	9	1	5	8	3	2
1	5	2	8	3	7	4	6	9
9	3	8	2	6	4	7	1	5
8	6	4	7	9	1	5	2	3
5	2	7	3	4	6	9	8	1
3	9	1	5	8	2	6	7	4
2	7	9	1	5	8	3	4	6
6	1	5	4	7	3	2	9	8
4	8	3	6	2	9	1	5	7

शब्द पहेली - 4076

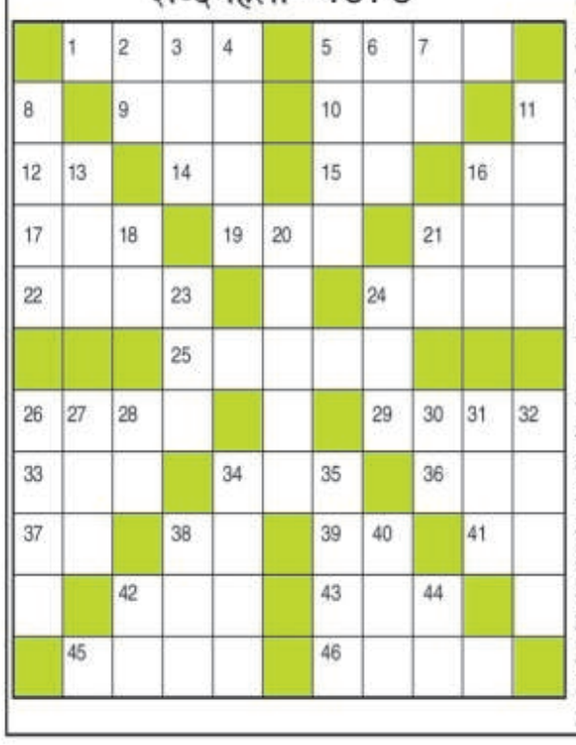

बाएँ से दाएँ

1.सरदार,अगुआ-4
5.जनमत,एक राय-4
9.पुराना जुकाम-3
10.चिंता,परवाह-3
12.पेंदा,तल्ला-2
14.ताल,सुर,आलाप-2
15.महोदय (अंग्रेजी-2)
16.लाडला,दुलारा-2
17.निवास करना-3
19.डोली उठाने वाले-3
21.नसीरुद्दीन शाह की फिल्म-3
22.तड़फाना-4
24.जल में रहनेवाला-4
25.दरियादिल,करुण-5
26.इराक की राजधानी-4
29.भेंट,पुरस्कार-4
33.पासों से भविष्य देखना-3
34.अश्ववाहक,घुड़सवार-3
36.चौकसी,रखवाली-3
37.हलक,कंठ-2
38.सदैव-2
39.लार -2
42.निश्चिंत-2
42.कालीन-3
43.बंदर,मर्कट-3
45.किसान-4
46.इस्लामी कैलेंडर का एक महीना -4

ऊपर से नीचे

2.क्रिकेट में बनते हैं-2
3.नगमा,गीत (उर्दू-3)
4.जो लायक न हो-4
5.अधिकारी,अफसर-4
6.राशिचक्र की एक राशि -3
7.झगड़ा,बैर-2
8.आदत,व्यवहार-4
11.शमशीर-4
13.तरंग,हिलोर-3
16.तृष्णा,लोभ-3
18.अमेरिका स्थित वेधशाला-2
20.जितेंद्र इस फिल्म में सात सवाल हल करते हैं -5
21.नीर,पानी-2
23.देवर्षि-3
24.ईर्ष्या,डाह-3
26.वटवृक्ष-4
27.जिसमें पौधे लगाते हैं-3
28.दलहन-2
30.मंत्र जाप-2
31.तसल्ली,आराम-3
32.भगवान विष्णु-4
34.धर्मशीलता-4
35.पैजामा-4
38.तमीज-3
40.साजन,प्रेमपात्र-3
42.पहरा,चौकसी-2
44.अवकाश-2

शब्द पहेली 4075 का हल

गुवाहाटी के जालुकबाडी में भयावह आग, एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

गुवाहाटी, ०६ जून, (हि.स.)। गुवाहाटी के जालुकबाडी क्षेत्र में शुक्रवार तडक़े लगी भयावह आग में एक ही परिवार के चार लोगों की दर्दनाक मौत हो गई। मृतकों में पति-पत्नी और उनके दो बच्चे शामिल हैं। आग की चपेट में आने से चारों की जिंदा जलकर मृत्यु हो गई।

स्थानीय सूत्रों के अनुसार, आग इतनी तेजी से फैली कि परिवार के सदस्यों को घर से बाहर निकलने तक का अवसर नहीं मिल सका। घटना की सूचना मिलते ही दमकलकर्मी और स्थानीय लोग मौके पर पहुंचे तथा आग बुझाने का प्रयास शुरू किया, लेकिन तब तक भारी नुकसान हो चुका था।आग में दो आवासीय मकान पूरी तरह जलकर राख हो गए। हादसे के बाद इलाके में शोक की लहर दौड़ गई है और बडी संख्या में लोग घटनास्थल पर जुट गए।पुलिस और प्रशासन ने मामले की जांच शुरू कर दी है। आग लगने के कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है। नुकसान का आकलन करने और घटना की विस्तृत जांच के लिए संबंधित विभागों की टीम मौके पर मौजूद है।

विश्व पर्यावरण दिवस पर विज्ञान आधारित जागरूकता बाढ़.प्रभावित क्षेत्रों के लिए विशेष कार्यशाला आयोजित

प्रे.सं.शिलचर, ५ जून। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर जहां पूरे विश्व के साथ-साथ कछार जिले में भी विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया, वहीं बराक घाटी की भौगोलिक परिस्थितियों और हालिया बाढ.की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए शिलचर की अग्रणी सामाजिक एवं विज्ञान-आधारित संस्था साइंस ट्रायल ऑर्गनाइजेशन ने इस दिवस को एक अलग और अत्यंत प्रासंगिक स्वरूप में मनाया।संस्था के तत्वावधान में तथा पीएम श्री सातकराकांदी हाईस्कूल के सक्रिय सहयोग से शुक्रवार को सातकराकांदी में दिनभर विभिन्न जागरूकता एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण बाढ.प्रभावित क्षेत्रों के लिए आयोजित विशेष कार्यशाला रही, जिसका विषय था ङ्घबाढ़ग्रस्त क्षेत्रों में बिना पकाए जाने वाले खाद्य पदार्थों का संरक्षण एवं आपदा प्रबंधनङ्घ।कार्यशाला में बताया गया कि प्राकृतिक आपदाओं के दौरान, जब भोजन पकाने की सुविधा उपलब्ध नहीं होती, तब सूखे एवं बिना पकाए जाने वाले खाद्य पदार्थों को लंबे समय तक सुरक्षित कैसे रखा जा सकता है तथा आपातकालीन परिस्थितियों में स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए किन उपायों को अपनाना चाहिए। इस महत्वपूर्ण सत्र का संचालन साइंस ट्रायल ऑर्गनाइजेशन के पूर्व महासचिव एवं प्रशिक्षक अनिल पाल तथा एनसीएससी कछार जिला कार्यकारी अध्यक्ष राजीव हुसैन चौधरी ने किया।पर्यावरण संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से पर्यावरण विषयक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया, जिसमें विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रतियोगिता के उपरांत पर्यावरण संतुलन बनाए रखने में वृक्षों की महत्ता को रेखांकित करते हुए विद्यालय परिसर में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता विद्यालय के प्रधानाचार्य अहमद हुसैन बरलस्कर ने की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि केवल वृक्षारोपण ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि पर्यावरणीय संकट और प्राकृतिक आपदाओं के समय वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाकर स्वयं को सुरक्षित रखना भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आज की कार्यशाला ने इस दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है।इस अवसर पर पर्यावरणीय संकट, जलवायु परिवर्तन और मानव समाज की जिम्मेदारियों पर विशिष्ट वक्ता ऋषिकेश दे ने भी विचारोत्तेजक एवं जानकारीपूर्ण वक्तव्य प्रस्तुत किया।विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं, गैर-शिक्षकीय कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा स्थानीय नागरिकों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। संस्था के प्रचार सचिव चंपक साहा द्वारा जारी प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया कि भविष्य में भी समाजोपयोगी एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर आधारित ऐसे जन-जागरूकता कार्यक्रम जारी रहेंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर मध्यदेशीय वैश्य महासभा ने वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित

तिनसुकिया, प्रेरणा भारती ६ जून। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर मध्यदेशीय वैश्य महासभा एवं तिनसुकिया जिला युवा समिति द्वारा एक वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनजागरूकता बढ़ाना तथा ङ्घसदैव हरित असमङ्घ के संकल्प को साकार करना था।इस अवसर पर समिति के सदस्यों ने बडी संख्या में भाग लेकर पौधारोपण किया तथा पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। वक्ताओं ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाना समय की आवश्यकता है।कार्यक्रम का आयोजन विद्या भारती इंटरनेशनल स्कूल, तिनसुकिया में किया गया, जहां उपस्थित लोगों ने पर्यावरण संरक्षण की शपथ भी ली। आयोजकों ने सभी नागरिकों से अपने जीवन में कम से कम एक पौधा लगाकर उसकी देखभाल करने का आह्वान किया।मध्यदेशीय वैश्य महासभा की युवा समिति ने बताया कि भविष्य में भी समाजहित एवं पर्यावरण संरक्षण से जुड़े.ऐसे कार्यक्रम निरंतर आयोजित किए जाएंगे।

विश्व पर्यावरण दिवस पर वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

गुवाहाटी, ५ जून: विश्व पर्यावरण दिवस के शुभ अवसर पर बृहत्तर गुवाहाटी गोर्खा पुरोहित संघ द्वारा वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर समाज के विशिष्ट व्यक्तित्वों की गरिमामय उपस्थिति एवं आशीर्वाद प्राप्त हुआ।कार्यक्रम में पर्यावरण संरक्षण का संदेश देते हुए पौधारोपण किया गया तथा प्रकृति के प्रति सामूहिक जिम्मेदारी निभाने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में समिति के कार्यकारी अध्यक्ष, सचिव, सह-सचिव एवं सभी पदाधिकारियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम का समापन समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं कोषाध्यक्ष कमल पौडेल गुरुजी की उपस्थिति में संपन्न हुआ। उपस्थित सभी लोगों ने पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक वृक्ष लगाने और उनकी देखभाल करने का फैसला लिया।

कोकराझार: व्यवसायी का अपहरण, मारपीट और फायरिंग का आरोप; केस दर्ज

प्रे.सं.कोकराझार, ६ जून: कोकराझार जिले में एक अत्यंत गंभीर मामला सामने आया है, जहाँ एक युवक को बंदूक की नोक पर अगवा कर उसके साथ न केवल मारपीट की गई, बल्कि उसे जान से मारने की धमकी भी दी गई। पीडति म्वनहासत ब्रह्मा ने कोकराझार पुलिस स्टेशन में शिकायत दर्ज कराते हुए आरोपी ज्ञान बसुमतारी और उसके सहयोगियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है। कोकराझार थाना में दर्ज शिकायत के अनुसार, बडो बातामारी गाँव के निवासी व्यवसायी म्वनहासत ब्रह्मा ने बताया कि यह घटना ३ जून की रात की है। पीडति के मुताबिक, रात करीब ११:३० बजे जब वह गाडी से करीगांव की ओर जा रहे थे, तब कोदमतला स्थित एनआरएल पेट्रोल पंप के पास ज्ञान बसुमतारी और उसके साथियों ने उनकी गाडी को रोका। पीडति का आरोप है कि आरोपियों ने बिना किसी कारण के उनके साथ गाली-गलौज की और पीछा करते हुए उनके वाहन पर पत्थर बरसाए, जिससे उनके वाहन का शीशा टूट गया।बंदूक की नोक पर अपहरण और घंटों तक यातना -शिकायत के अनुसार, बाद में आधी रात को जब पीडति चानदामारी स्थित अपने फार्महाउस पर आराम कर रहे थे, तब आरोपी वहां दोबारा पहुंचे। पीडति ने शिकायत में आरोप लगाया गया है कि हमलावरों ने बंदूक दिखाकर उन्हें धमकाया और बेरहमी से पिटाई की, जिससे उन्हें गंभीर चोटें आई। साथ ही फार्महाउस में तोडफ़ोड.भी की गई।व्यवसायी का आरोप है कि हमलावरों ने उन्हें जबरन एक बोलेरो गाडी में बैठाया, उनका चेहरा ढंक दिया और घंटों तक गाडी में घुमाते हुए मारपीट करते रहे। अगली सुबह करीब ४:०० बजे उन्हें उनके फार्महाउस के पास फेंक दिया गया। पीडति का कहना है कि इस हमले के बाद वे दो दिनों तक बिस्तर से नहीं उठ सके।व्यवसायी ने इस मामले में पुलिस को चोटों और संपत्ति के नुकसान के सबूत भी सौंपे हैं। उन्होंने कोकराझार पुलिस से मांग की है कि मामले में प्राथमिकी (ऋखठ) दर्ज कर तुरंत जांच शुरू की जाए, आरोपियों को गिरफ्तार किया जाए और उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाए।

विश्व पर्यावरण दिवस पर बराक वैली न्यूजप़ेपर ओनर्स एसोसिएशन का सराहनीय अभियान, विभिन्न संस्थानों में किया गया वृक्षारोपण

प्रे.सं. शिलचर, ५ जून। विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर बराक वैली न्यूजप़ेपर ओनर्स एसोसिएशन ने सामाजिक उत्तरदायित्व का परिचय देते हुए शिलचर के विभिन्न सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थानों में व्यापक वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया। पर्यावरण संरक्षण और हरित भविष्य के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के उद्देश्य से आयोजित इस अभियान को शहर के विभिन्न वर्गों से व्यापक समर्थन प्राप्त हुआ।कार्यक्रम का शुभारंभ शुक्रवार सुबह शिलचर प्रेस क्लब परिसर में वृक्षारोपण के साथ हुआ। इसके बाद एसोसिएशन के सदस्यों ने शिलचर टाउन क्लब, कछार के सेटलमेंट कार्यालय, दूरदर्शन केंद्र, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के उपनिदेशक कार्यालय, सर्किट हाउस, कोर्ट परिसर स्थित डिप्टी सब-रजिस्ट्रार कार्यालय तथा संगठन के घनियाला स्थित केंद्रीय कार्यालय सहित अनेक सरकारी और निजी परिसरों में पौधारोपण किया।इस अवसर पर आयोजित सभा में संगठन के अध्यक्ष मनोतोष धर, कार्यकारी अध्यक्ष संतोष चंद, महासचिव विजय देवनाथ तथा संगठन के समन्वयक सहित अन्य पदाधिकारियों ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर प्रकाश डाला। वक्ताओं ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों से निपटने के लिए वृक्षारोपण और पर्यावरण जागरूकता आज समय की सबसे बडी आवश्यकता है।कार्यक्रम में दूरदर्शन केंद्र के प्रभारी स्टेशन निदेशक समरजीत सिंह, कछार के अतिरिक्त जिला आयुक्त एम. कुटुम, डिप्टी सब-रजिस्ट्रार युगल सिंह, वरिष्ठ सब-रजिस्ट्रार राजीव कांति दास, टाउन क्लब के उपाध्यक्ष नंददुलाल राय सहित अनेक अधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों ने संगठन के सदस्यों के साथ मिलकर पौधे लगाए।अतिरिक्त जिला आयुक्त एम. कुटुम, दूरदर्शन केंद्र के प्रभारी स्टेशन निदेशक समरजीत सिंह तथा डिप्टी सब-रजिस्ट्रार युगल सिंह ने संगठन की इस पर्यावरणीय पहल की भूरी-भूरी प्रशंसा करते हुए कहा कि ऐसे सामाजिक जागरूकता कार्यक्रम समाज में सकारात्मक संदेश पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि बराक वैली न्यूजप़ेपर ओनर्स एसोसिएशन भविष्य में भी जनहित और पर्यावरण संरक्षण से जुड़े.कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाएगा।उल्लेखनीय है कि एसोसिएशन द्वारा आगामी दो महीनों तक विभिन्न प्रतियोगिताओं और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। इसी क्रम में १ जुलाई को कोलकाता से विश्वबंग के १२ प्रतिष्ठित कलाकारों की भागीदारी वाला एक विशेष सांस्कृतिक समारोह आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। विश्व पर्यावरण दिवस का यह आयोजन उसी श्रृंखला का औपचारिक शुभारंभ माना जा रहा है।गत वर्ष भी संगठन ने अपने चार दिवंगत सदस्यों की स्मृति में विभिन्न खेलकूद और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया था। इस वर्ष भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से जनजागरण का अभियान जारी रखने का संकल्प व्यक्त किया गया।बराक वैली न्यूजप़ेपर ओनर्स एसोसिएशन ने कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष सहयोग और सक्रिय भूमिका निभाने के लिए कछार वन विभाग तथा दूरदर्शन केंद्र के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें बधाई दी।

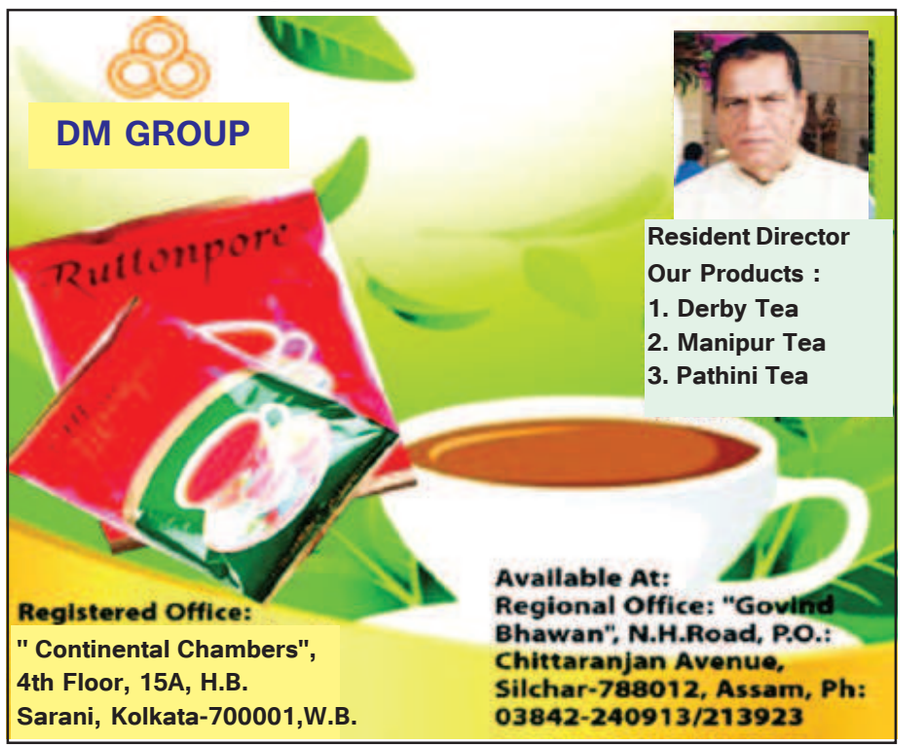

तमिलनाडु बीजेपी में बड़ा राजनीतिक भूचाल, अन्नामलाई के इस्तीफे के बाद दो और वरिष्ठ नेताओं ने छोड़ी पार्टी

चेन्नई. (एजें) ६ जून : तमिलनाडु की राजनीति में शुक्रवार को बडा राजनीतिक घटनाक्रम सामने आया, जब भारतीय जनता पार्टी को राज्य में लगातार तीसरा बडा झटका लगा. पूर्व प्रदेश अध्यक्ष के. अन्नामलाई के इस्तीफे के कुछ ही घंटों के भीतर पार्टी के दो वरिष्ठ नेताओं ने भी भाजपा से अपना नाता तोड़ लिया. प्रदेश उपाध्यक्ष कारु नागराजन और प्रदेश सचिव सुमति वेंकटेश ने अपने पदों के साथ-साथ पार्टी की प्राथमिक सदस्यता से भी इस्तीफा दे दिया. इन इस्तीफों ने तमिलनाडु भाजपा में चल रहे आंतरिक असंतोष और नेतृत्व संकट की चर्चाओं को और तेज कर दिया है.राजनीतिक गलियारों में सबसे अधिक चर्चा कारु नागराजन के इस्तीफे को लेकर हो रही है. उन्होंने अपने बयान में स्पष्ट संकेत दिए हैं कि वह के. अन्नामलाई के साथ नई राजनीतिक पारी शुरू करने की तैयारी में हैं. नागराजन ने अन्नामलाई की नेतृत्व क्षमता की खुलकर सराहना करते हुए उन्हें एक निडर, स्पष्टवादी और संघर्षशील नेता बताया. उन्होंने कहा कि अन्नामलाई ऐसे नेता हैं जो किसी भी व्यक्ति की गलती पर बिना किसी दबाव के सवाल उठाते हैं, चाहे वह कितना भी प्रभावशाली पद पर क्यों न बैठा हो.

नागराजन ने कहा कि अन्नामलाई के पास प्रशासन, राजनीति, सामाजिक मुद्दों और जनसरोकारों की गहरी समझ है. उनका मानना है कि तमिलनाडु की राजनीति में एक मजबूत और वैकल्पिक राजनीतिक शक्ति के रूप में अन्नामलाई उभर सकते हैं. उनके इस बयान ने उन अटकलों को और बल दिया है कि अन्नामलाई जल्द ही अपनी नई राजनीतिक पार्टी की घोषणा कर सकते हैं.दूसरी ओर, प्रदेश सचिव सुमति वेंकटेश ने भी सोशल मीडिया के माध्यम से अपना इस्तीफा सार्वजनिक किया. उन्होंने भावुक शब्दों में कहा कि भारी मन से वह पार्टी छोड़.रही हैं. अपने इस्तीफा पत्र में उन्होंने भाजपा में बिताए गए समय को सम्मानजनक और गौरवपूर्ण बताया. साथ ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व, राष्ट्रवाद, देशभक्ति और राष्ट्र सेवा की विचारधारा की सराहना भी की. हालांकि उन्होंने अपने इस्तीफे के पीछे किसी विशेष कारण का उल्लेख नहीं किया, लेकिन राजनीतिक विश्लेषक इसे पार्टी के भीतर बढ़ते मतभेदों से जोड़कर देख रहे हैं.इन घटनाक्रमों से पहले तमिलनाडु भाजपा के पूर्व अध्यक्ष के. अन्नामलाई ने भी पार्टी छोड़कर राज्य की राजनीति में हलचल मचा दी थी. भाजपा नेतृत्व ने उनका इस्तीफा स्वीकार कर लिया है. अन्नामलाई करीब छह वर्षों तक पार्टी में सक्रिय रहे और इस दौरान उन्होंने तमिलनाडु में भाजपा का सबसे प्रमुख चेहरा बनकर पहचान बनाई. उनके नेतृत्व में भाजपा ने राज्य में अपनी राजनीतिक मौजूदगी मजबूत करने का प्रयास किया और कई मुद्दों पर आक्रामक विपक्ष की भूमिका निभाई.अपने इस्तीफा पत्र में अन्नामलाई ने लिखा कि वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व और विकास की राजनीति से प्रेरित होकर भाजपा में शामिल हुए थे. उनका उद्देश्य तमिलनाडु की राजनीति में वैकल्पिक राजनीतिक संस्कृति स्थापित करना था. हालांकि उन्होंने यह भी स्वीकार किया कि पिछले लगभग डेढ़ वर्ष से पार्टी नेतृत्व के साथ उनकी सोच और रणनीति में लगातार मतभेद बढ़ते जा रहे थे.अन्नामलाई ने कहा कि तमिलनाडु की राजनीतिक परिस्थितियों और भविष्य की दिशा को लेकर उनकी सोच पार्टी के शीर्ष नेतृत्व से अलग थी. उन्होंने बताया कि इस विषय पर वरिष्ठ नेताओं के साथ कई दौर की चर्चा हुई, लेकिन कोई साझा सहमति नहीं बन सकी. अंततः उन्होंने पार्टी छोड़ने का निर्णय लिया.राजनीतिक जानकारों का मानना है कि अन्नामलाई के जाने से भाजपा को तमिलनाडु में संगठनात्मक स्तर पर बड़ा नुकसान हो सकता है. राज्य में भाजपा के विस्तार अभियान का चेहरा रहे अन्नामलाई युवाओं के बीच विशेष रूप से लोकप्रिय माने जाते हैं. उनके नेतृत्व में पार्टी ने कई जनआंदोलनों और राजनीतिक अभियानों के जरिए अपनी उपस्थिति दर्ज कराई थी.

अब उनके बाद दो वरिष्ठ नेताओं का भी पार्टी छोड़ना यह संकेत देता है कि भाजपा की राज्य इकाई में असंतोष केवल व्यक्तिगत स्तर तक सीमित नहीं है. यदि आने वाले दिनों में और नेता अन्नामलाई के साथ जाते हैं या उनकी संभावित नई पार्टी में शामिल होते हैं, तो तमिलनाडु भाजपा के लिए स्थिति और चुनौतीपूर्ण हो सकती है.राजनीतिक विश्लेषकों का कहना है कि तमिलनाडु की राजनीति पहले से ही द्रविड़.दलों के प्रभुत्व वाली रही है और भाजपा यहां अपने लिए मजबूत आधार तैयार करने का प्रयास कर रही थी. ऐसे समय में पार्टी के प्रमुख चेहरों का लगातार बाहर जाना संगठन के लिए चिंता का विषय बन सकता है. वहीं अन्नामलाई की संभावित नई राजनीतिक पार्टी राज्य की राजनीति में नया समीकरण भी पैदा कर सकती है.फिलहाल तमिलनाडु भाजपा के भीतर मचे इस राजनीतिक भूचाल पर सभी की नजरें टिकी हुई हैं. आने वाले दिनों में यह स्पष्ट होगा कि यह घटनाक्रम केवल कुछ नेताओं के इस्तीफे तक सीमित रहता है या फिर राज्य की राजनीति में किसी बड़े.पुनर्गठन की भूमिका तैयार कर रहा है.

JEE एडवांस्ड के लाखों छात्रों का डेटा लीक होने के दावे खारिज, IIT रुड़की ने कहा गलत जानकारी फैलाई जा रही

नई दिल्ली. (एजें) ६ जून : संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जेईई एडवांस्ड) २०२६ से जुड़े.लाखों अभ्यर्थियों के डेटा लीक होने के दावों को लेकर उठे विवाद के बीच भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान रुड़की ने बड़ा स्पष्टीकरण जारी किया है. संस्थान ने सोशल मीडिया पर प्रसारित हो रही डेटा ब्रीच की खबरों को भ्रामक और तथ्यात्मक रूप से गलत बताते हुए कहा है कि किसी भी अभ्यथी की संवेदनशील जानकारी से समझौता नहीं हुआ और न ही बड़े.पैमाने पर कोई डेटा निकाला गया.आईआईटी रुड़की, जिसने इस वर्ष जेईई एडवांस्ड परीक्षा का आयोजन किया था, ने स्पष्ट किया कि सोशल मीडिया पर जिस तरह से मामले को प्रस्तुत किया जा रहा है, वास्तविकता उससे काफी अलग है. संस्थान के अनुसार कुछ लोगों द्वारा इस मुद्दे को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जा रहा है, जिससे छात्रों और अभिभावकों के बीच अनावश्यक भ्रम की स्थिति पैदा हुई है.संस्थान ने अपने आधिकारिक बयान में कहा कि लाखों जेईई एडवांस्ड अभ्यर्थियों की निजता भंग होने और बड़े.स्तर पर डेटा लीक होने के दावे पूरी तरह भ्रामक हैं. आईआईटी रुड़की का कहना है कि सोशल मीडिया पर प्रसारित जानकारी वास्तविक घटनाक्रम को सही तरीके से नहीं दर्शाती और इस मामले में गलत सूचनाएं फैलाने का प्रयास किया जा रहा है.आईआईटी रुड़की के अनुसार यह स्थिति २ जून को की गई कुछ तकनीकी प्रक्रियाओं के दौरान उत्पन्न हुई थी. संस्थान ने बताया कि कई अभ्यर्थियों को एडमिट कार्ड और पंजीकरण संबंधी जानकारी तक पहुंचने में परेशानी हो रही थी. इन समस्याओं के समाधान और पंजीकरण प्रक्रिया को सुचारूबनाए रखने के लिए तकनीकी स्तर पर कुछ आवश्यक हस्तक्षेप किए गए थे. इसी दौरान क्लाउड स्टोरेज प्रणाली में एक सीमित और अस्थायी तकनीकी गड़बड़ी उत्पन्न हो गई.संस्थान ने कहा कि यह कोई साइबर हमला या व्यापक डेटा चोरी का मामला नहीं था, बल्कि क्लाउड स्टोरेज के कॉन्फिगरेशन से जुड़ी एक अस्थायी तकनीकी त्रुटि थी. इस गड़बड़ी की पहचान एथिकल हैकर रायलन अनिल ने की और इसकी सूचना तत्काल संस्थान को दी. सूचना मिलते ही तकनीकी टीम सक्रिय हुई और समस्या का तुरंत समाधान कर दिया गया.आईआईटी रुड़की ने बताया कि एथिकल हैकर ने यह संकेत दिया था कि वह संबंधित डेटाबेस तक पहुंच प्राप्त कर सकता है. इसके बाद तत्काल आवश्यक कदम उठाए गए और डेटाबेस तक पहुंच को प्रतिबंधित कर दिया गया. संस्थान का दावा है कि समय रहते समस्या का समाधान कर लिया गया, जिससे किसी भी प्रकार के बड़े.नुकसान की संभावना समाप्त हो गई.संस्थान ने यह भी स्पष्ट किया कि उपलब्ध जांच और तकनीकी मूल्यांकन के आधार पर ऐसा कोई प्रमाण नहीं मिला है जिससे यह साबित हो कि अभ्यर्थियों की संवेदनशील जानकारी का दुरुपयोग हुआ हो या बड़े.पैमाने पर डेटा डाउनलोड किया गया हो. आईआईटी रुड़की ने अभ्यर्थियों और अभिभावकों से अपील की है कि वे अपुष्ट सूचनाओं पर भरोसा न करें और केवल आधिकारिक स्रोतों से जारी जानकारी को ही सही मानें.इस घटनाक्रम के बाद देशभर में जेईई एडवांस्ड अभ्यर्थियों और अभिभावकों के बीच डेटा सुरक्षा को लेकर चर्चा तेज हो गई है. हालांकि आईआईटी रुड़की ने दोहराया है कि परीक्षा से संबंधित संवेदनशील सूचनाएं सुरक्षित हैं और डेटा सुरक्षा को लेकर सभी आवश्यक मानकों का पालन किया जा रहा है. संस्थान का कहना है कि भविष्य में ऐसी किसी भी तकनीकी स्थिति से बचने के लिए सुरक्षा प्रणालियों की अतिरिक्त समीक्षा और निगरानी भी की जा रही है.आईआईटी रुड़की के इस स्पष्टीकरण के बाद अब निगाहें इस बात पर हैं कि सोशल मीडिया पर फैलाए गए डेटा लीक के दावों को लेकर आगे क्या स्थिति स्पष्ट होती है. फिलहाल संस्थान ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यह कोई बड़े. स्तर का डेटा ब्रीच नहीं था, बल्कि एक सीमित और अस्थायी तकनीकी समस्या थी, जिसे समय रहते दूर कर दिया गया.

नालूगांव मॉब लिंचिंग मामले में मणिपुरी (मैतेई) समुदाय का नाम जोड़ना गलत, संगठनों ने जताया कड़ा विरोध

प्रे.सं. शिलचर, ६ जून (रानू दत्ता): श्रीभूमि जिले के पाथरकांडी स्थित नालूगांव में हुई अमानवीय मॉब लिंचिंग की घटना को लेकर मणिपुरी (मैतेई) समुदाय के विभिन्न संगठनों ने गहरी चिंता व्यक्त करते हुए स्पष्ट किया है कि इस घटना में समुदाय का कोई व्यक्ति शामिल नहीं है। सोशल मीडिया के कुछ मंचों पर मणिपुरी समुदाय को घटना से जोड़कर फैलाए जा रहे भ्रामक प्रचार का उन्होंने कड़े शब्दों में विरोध किया है।शनिवार को शिलचर में आयोजित एक पत्रकार सम्मेलन में वर्ल्ड मैतेई काउंसिल सेंट्रल कमेटी के अध्यक्ष डॉ. के. एन. चानू, मणिपुरी साहित्य परिषद, श्रीभूमि जिला समिति के प्रतिनिधि एल. बीरेंद्र सिंह, एएएमपीएएल की अध्यक्षा बेनी मिश्रा, वर्ल्ड मैतेई काउंसिल श्रीभूमि समिति के अध्यक्ष बीर सिंह तथा आमसू के केंद्रीय उपाध्यक्ष छवि कुमार सिंह ने संयुक्त रूप से कहा कि नालूगांव में हुई घटना अत्यंत दुखद, निंदनीय और अमानवीय है। दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई होनी चाहिए, लेकिन बिना किसी तथ्यात्मक आधार के मणिपुरी समुदाय को इस घटना से जोड़ना पूरी तरह अनुचित है।

उन्होंने बताया कि जिस गांव में यह घटना हुई है तथा उसके आसपास के क्षेत्रों में मणिपुरी (मैतेई) समुदाय के लोग निवास तक नहीं करते हैं। इसके बावजूद सोशल मीडिया के माध्यम से समुदाय विशेष के विरुद्ध भ्रम फैलाने का प्रयास किया जा रहा है, जिससे समाज में अनावश्यक तनाव और गलतफहमियां उत्पन्न हो रही हैं।संगठनों के नेताओं ने कहा कि घटना के संबंध में मणिपुरी समुदाय पर लगाए जा रहे आरोपों से व्यापक मणिपुरी समाज चिंतित और आहत है। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा कि इस जघन्य कांड से समुदाय का कोई संबंध नहीं है। इसलिए मामले की निष्पक्ष एवं पारदर्शी जांच कर वास्तविक दोषियों की पहचान की जाए, उन्हें शीघ्र गिरफ्तार कर कानून के तहत दंडित किया जाए।पत्रकार सम्मेलन में वक्ताओं ने प्रशासन से मांग की कि भविष्य में ऐसी नृशंस घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए प्रभावी और कठोर कदम उठाए जाएं। उन्होंने कहा कि किसी भी सभ्य समाज में हिंसा और कानून को अपने हाथ में लेने की प्रवृत्ति स्वीकार्य नहीं हो सकती। पीडति परिवार को न्याय दिलाना तथा अपराधियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करना प्रशासन की जिम्मेदारी है।मणिपुरी संगठनों ने आशा व्यक्त की कि असम पुलिस इस मामले को गंभीरता से लेते हुए त्वरित कार्रवाई करेगी और पीडति परिवार को न्याय सुनिश्चित करेगी।पत्रकार सम्मेलन में वर्ल्ड मैतेई काउंसिल सेंट्रल कमेटी के उपाध्यक्ष शुभांकर सिंह, एएएमपीएएल की सचिव विजया सिंह, नोनगिन एनजीओ के अध्यक्ष मुटुम गुनाहार, आमसू के सलाहकार एल. सत्यजीत तथा बिजन सिंह सहित कई गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

साहित्यमित्र संस्था ने राहगीरों को पिलाया फलों का शरबत

प्रे.सं. शिलचर ६ जून : साहित्यिक सामाजिक सांस्कृतिक राष्ट्र भाषा एवं अग्रोहा अग्रवाल अग्रसेन प्रचारक संस्था,, साहित्य मित्र,, ने नृसिंह अखाडा के सामने सैंकडों राहगीरों को फलों का सरबत वितरित किया। अध्यक्ष मदन सुमित्रा सिंघल ने सभी प्रबंध किया तथा लोगों को सरबत पिलाया। संस्था अधिक मास से भयंकर गर्मी पडने तक जगह जगह हर साल की तरह सरबत वितरण करेगी। नृसिंह अखाडा प्रबंधन समिति के सचिव विकास सारदा ने काफी सहयोग प्रदान किया। मोहिनी अग्रवाल प्रजापति ने भी वितरण में सहयोग प्रदान किया।

मुद्रक, प्रकाशक व स्वामी श्री दिलीप कुमार द्वारा भारती ऑफसेट मुद्रणालय, कटहल रोड, शिलचर-05 (असम) से मुद्रित व प्रकाशित, सम्पादक-श्रीमती सीमा कुमार, Ph & Fax (03842) 242633, (M) 9435213512